फोन:-4103333, 2362400 फैक्स:-0141-2373513 वर्ष: 76 संख्या: 89 प्रभात जयपुर, शुक्रवार, 31 अक्टूबर, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

ARBiT

Revisiting Covid

'We live to serve' celebrates the selfless service of the Sikh, they endangered their lives and did community service in cremating the Covid infected

Shoes Don't Make A Difference

Cuevas de Mármol

The Marble Caves of Chile: Nature's Hidden Cathedral of Color

मनीष शर्मा की सीधे ही सीडब्ल्युसी के सदस्य व यूथ कांग्रेस के प्रभारी के रूप में नियुक्ति किसी को पच नहीं रही

ऐसा कहा जा रहा है कि वे राहुल की नवरत्न मीनाक्षी नटराजन के विश्वासी हैं वे उनके घरेलू कामकाज में मदद करते थे

- मनीष शर्मा की इससे पहले पार्टी में कोई औपचारिक नियुक्ति नहीं हुई थी ना ही उन्हें कोई जिम्मेवारी दी गई थी।
- कांग्रेस वर्किंग कमेटी का सदस्य बनने के लिए नेताओं को जीवन पर्यंत काम करना होता है और इसकी सदस्यता लंबे कार्यानुभव का नतीजा होता है।
- मीनाक्षी नटराजन की भांति कृष्णा अल्लूवेरा भी राहुल गांधी के इनर ग्रुप, जो अपने आपको जन जगत कहता है, के सदस्य रहे हैं, उन्हें बिहार का प्रभारी बनाया गया था और वे यह कह कर गये थे कि वे तेजस्वी यादव के साथ बहुत कड़ाई से पेश आयेंगे और टिकट बंटवारे में तेजस्वी को घुटनों पर ला देंगे।
- पर हुआ उलटा ही, तेजस्वी यादव ने अल्लूवेरा को अपने घर में व बैठकों में भाग लेने तक पर प्रतिबंध लगा दिया और अब नौसिखिए अविनाश पांडे को बिहार का प्रभारी बनाकर भेजा गया है।

- रेणु मित्तल -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली 30 अक्टूबर। कांग्रेस पार्टी में लोग न केवल हैरान हैं बल्कि सदमें में भी है। पार्टी कार्यकर्ता और नेता दोनों जिस तरह से नियुक्तियां हो रही हैं, उससे चकित हैं, और राहुल गांधी ने अपने करीबी सहयोगियों को उनकी इच्छाओं और सनकों के हिसाब से काम करने की पूरी स्वतंत्रता दे दी है। ताजा विवाद मनीष शर्मा की नियुक्ति को लेकर है, जिन्हें हाल ही में भारतीय युवा कांग्रेस की एआईसीसी प्रभारी नियुक्त किया गया है, यह नियुक्ति मीनाक्षी नटराजन के कारण हुई है, जो राहुल गांधी के 'नवरत्नों' में से एक हैं।

मनीष शर्मा नटराजन के घर पर घरेलू सहायक थे (हाँ, आपने सही पढ़ा, घरेलू काम करते थे)। उन्होंने कभी पार्टी में कोई संगठनात्मक पद नहीं संभाला, न ही वे एनएसयूआई, युवा कांग्रेस, राज्य इकाई, केंद्र या कहीं और कार्यरत रहे हैं। यह उनका पहला आधिकारिक पद है और वह भी सीधे कांग्रेस कार्यसमिति में, पार्टी के सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था में, जहाँ नेताओं को जीवनभर के काम और अनुभव के बाद शामिल किया जाता है।

कुछ समय तक शर्मा को पार्टी प्रोजेक्ट्स से जुड़वाने का प्रयास किया गया था, लेकिन उन्हें कांग्रेस में कोई औपचारिक पद नहीं मिला था और अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, उनके पास कोई ठोस अनुभव नहीं है।

मीनाक्षी नटराजन अब राहुल के करीबी समूह जो खुद को "जन जगत" कहता है, की सदस्य हैं, जो महत्वपूर्ण और बड़े फैसले लेता है। इस समूह के एक अन्य सदस्य कृष्णा अल्लावरू को युवा कांग्रेस का प्रभारी बनाया गया था, लेकिन उन्हें बिहार का प्रभारी बना दिया गया है।

कांग्रेस का तेजस्वी यादव के साथ संबंध बहुत तनावपूर्ण हो गया है, क्योंकि अल्लावरू ने राहुल गांधी को यह यकीन दिलवाया था कि वह तेजस्वी से सख्ती से पेश आएंगे, लेकिन इसके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रंप और शी के बीच डील

बुसान, 30 अक्टूबर। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीन के उनके समकक्ष शी जिनपिंग के बीच यहां बुसान हवाई अड्डे पर हुई बैठक में चीनी उत्पादों पर अमेरिका में आयात शुल्क 10 प्रतिशत कम करने पर सहमति बन गयी है और बदले में चीन रेअर अर्थ मेटल पर निर्यात नियंत्रण हटाने पर सहमत हो गया है।

ट्रंप ने बैठक के बाद गुरुवार को संवाददाताओं को इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि चीनी उत्पादों पर 20 प्रतिशत फेनटेनिल शुल्क को घटाकर 10 प्रतिशत किया जायेगा। इससे कुल

- चीन रेअर अर्थ मैटल निर्यात नियंत्रण पर एक साल के लिए हटा देगा और अमेरिका 10 प्रतिशत टैरिफ घटा देगा।

शुल्क 57 प्रतिशत से घटकर 47 प्रतिशत हो जाएगा।

आधिकारिक सूचना के मुताबिक फिलहाल चीनी उत्पादों पर 55 प्रतिशत शुल्क है जिसमें 20 प्रतिशत फेनटेनिल शुल्क, 25 प्रतिशत आयात शुल्क और 10 प्रतिशत लिबरेशन डे शुल्क है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने बाद में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में बताया कि शी इस बात पर सहमत हुए हैं कि चीन अमेरिका से सोयाबीन, सोरगम और दूसरे कृषि उत्पाद खरीदेगा। इससे अमेरिकी किसानों को काफी लाभ होगा। साथ ही चीन अमेरिका को रेअर अर्थ मेटल और महत्वपूर्ण खनिजों आदि की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बूसान में हैंड शेक के बाद अमेरिका व चीन ने अजीबो-गरीब समझौता किया

चीन एक साल तक रेयर अर्थ की सप्लाई निर्बाध जारी रखेगा व अमेरिका चीन के निर्यात पर भारी भरकम टैरिफ नहीं लगाएगा

- भारत में भी सत्तर लाख टन रेयर अर्थ का भंडार है, परन्तु इस खनिज को परिष्कृत कर काम लेने योग्य बनाने की टैक्नॉलजी नहीं है।
- चीन के पास रेयर अर्थ की मोनॉपली नहीं है, पर उसको रिफाइन करने की टैक्नॉलजी पर एकाधिकार है।
- अमेरिका-चीन के हैंड शेक के बाद भारत को कुछ राहत तो है, क्योंकि टाटा, टीसीएस, सुज़लॉन आदि कंपनियों का काम बेधड़क एक साल तक चलेगा, पर इसके बाद क्या होगा, यह चिंता का विषय है।
- क्या भारत साल भर में रेयर अर्थ को रिफाईन करने की टैक्नॉलजी पर महारथ पा सकता है?

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर। भारत के लिए, दक्षिण कोरिया के बुसान में एशिया पैसिफिक इकोनॉमिक कोऑपरेशन (एपीईसी) में डॉनल्ड ट्रंप और शी जिनपिंग के बीच हुआ दुर्लभ पृथ्वी समझौता राहत भी है और चुनौती भी। इस समझौते में चीन के नए निर्यात नियंत्रणों को एक साल के लिए निलंबित करने के बदले में अमेरिका द्वारा मामूली टैरिफ राहत प्रदान की गई है। यह समझौता भारत की स्वच्छ प्रौद्योगिकी, रक्षा और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति की स्थिरता प्रदान करता है। फिर भी, यह एक नाज़ुक स्थिति को उजागर करता है: भारत अब भी उन दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के प्रसंस्करण के लिए चीन पर निर्भर है, जो इसके पास प्रचुर मात्रा में हैं।

दुर्लभ पृथ्वी तत्व में 17 धातुएं हैं, जिनमें नियोडिमियम, डायसप्रोसीयम, और प्रासीडीमियम शामिल हैं। ये आधुनिक जीवन के लिए जरुरी हैं और ईवी मोटर्स, पवन चक्की, स्मार्टफोन और मिसाइल प्रणालियों का संचालन करती हैं। हालांकि ये सच में "दुर्लभ" नहीं हैं, पर इनका शुद्धिकरण जटिल और प्रदूषणकारी होता है, लेकिन इस क्षेत्र में चीन ने दशकों पहले महारत हासिल की थी। आज, बीजिंग इन तत्वों के प्रसंस्करण का विश्वभर में लगभग 90 प्रतिशत नियंत्रित करता है, जो उसे अप्रतिम भू-राजनीतिक प्रभाव प्रदान करता है।

बुसान समझौता उस प्रभुत्व को केवल विराम देता है। चीन ने एक साल के लिए निर्यातों को जारी रखने पर सहमति दी, जिससे आपूर्ति में व्यवधान के डर को कम किया गया। वॉशिंगटन के लिए यह एक रणनीतिक युद्धविराम है; बीजिंग के लिए यह एक ऐसा रुख है, जिसका मूल्य बहुत कम है। भारत के लिए, यह राहत इस बात को उजागर करती है कि इसे खनिज संपत्ति को औद्योगिक ताकत में बदलने के लिए अब भी बहुत लंबा रास्ता तय करना है।

भारत के समुद्र तटों की रेत में विशाल मोनोजाइट जमा हैं, सात मिलियन टन से अधिक दुर्लभ पृथ्वी तत्व आक्साइड, जो विश्व के सबसे बड़े भंडारों में से एक हैं। फिर भी, देश की शोधन क्षमता न्यूनतम है। सरकार के स्वामित्व वाली आई आर ई एल लिमिटेड बुनियादी निष्कर्षण का प्रबंधन करती है, लेकिन उच्च-शुद्धता

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिहार चुनाव को लहर विहीन चुनाव माना जा रहा है, अतः विद्रोही उम्मीदवार खूब पनप रहे हैं

वैसे हर चुनाव में विद्रोही उम्मीदवार सरदर्द बनते हैं, पार्टियों के लिए, पर इस बार कुछ फर्क है

- जदयू, आरजेडी व भाजपा गठबंधनों में कांटे की टक्कर मानी जा रही है। अतः विद्रोही उम्मीदवारों की भूमिका निर्णायक हो सकती है।
- यह तथ्य स्वीकार करते हुए सभी पार्टियों ने विद्रोही उम्मीदवारों को पार्टी से निकालने का रास्ता अपनाया है।
- जदयू अब तक सोलह नेताओं को निकाल चुका है, पार्टी से। भाजपा लगभग बीस, आरजेडी सत्ताइस वरिष्ठ नेताओं की पार्टी सदस्यता खत्म कर चुकी है। इन नेताओं में पूर्व विधायक, पूर्व मंत्री व वर्तमान विधायक भी शामिल हैं।
- कांग्रेस ने यह रास्ता नहीं अपनाया है, पर, असंतोष चरम पर है। हाल ही में पटना एयरपोर्ट पर दो प्रतिद्वंदी धड़े भिड़ गए, लाठी-भाटा जंग भी हुआ।

- श्रीनंद झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर। सर्वेक्षणों में एनडीए और महागठबंधन के बीच कड़ी टक्कर का अनुमान लगाए जाने के साथ ही, बिहार में एक दिलचस्प सवाल महत्वपूर्ण बन गया है कि "बागी" प्रत्याशी संबंधित राजनीतिक गठबंधनों के की संभावनों बनायेंगे या बिगाड़ेंगे।

विद्रोही ज्यादातर वे हैं, जिन्हें चुनाव लड़ने के लिए पार्टी का चुनाव चिन्ह नहीं मिला। ऐसे लोग पहले भी अपने-अपने दलों के लिए सिरदर्द साबित हुए हैं। इस बार फर्क यह है कि टिकट वितरण में असंतोष के कारण, सभी प्रमुख राजनीतिक दलों को कई नेताओं, जिनमें वरिष्ठ विधायक भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जस्टिस सूर्यकांत सीजेआई नियुक्त

नयी दिल्ली, 30 अक्टूबर। न्यायमूर्ति सूर्य कांत को उच्चतम न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उन्हें देश का अगला मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया है। विधि और न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने गुरूवार को एक

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें देश का अगला मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया। मौजूदा सीजेआई गवई 23 नवंबर को रिटायर हो रहे है और जस्टिस सूर्यकांत 24 नवंबर को शपथ लेंगे।

सोशल मीडिया पोस्ट में यह जानकारी दी। न्यायमूर्ति सूय कांत 24 नवम्बर को पद की शपथ लेंगे। वह मौजूदा मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई का स्थान लेंगे जो 23 नवम्बर को सेवानिृत हो रहे हैं।

न्यायमूर्ति गवई ने कुछ ही दिन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विश्व में तीसरे शीत युद्ध की तैयारी शुरु हो गई है?

ट्रंप ने पुनः न्यूक्लियर टैस्टिंग की शुरुआत करने की घोषणा की

- उनका तर्क था कि न्यूक्लियर टैस्टिंग करके वे न्यूक्लियर बम बनाएंगे, जिससे वे अन्य देशों, रूस व चीन से, न्यूक्लियर बम की संख्या में पीछे न रह जाएं।
- रूस ने 1990 से, अमेरिका ने 1992 व चीन ने 1996 में न्यूक्लियर संधि की पालना करते हुए न्यूक्लियर टैस्टिंग बंद कर दी थी।
- अमेरिका व रूस दोनों देशों के पास 1550 न्यूक्लियर बम हैं। चीन के पास लगभग एक हजार और अब नए खिलाड़ी भी आ गए हैं, जैसे भारत, पाक, नॉर्थ कोरिया, इज़रायल। अतः शीत युद्ध के बाद पुनः यह प्रतिस्पर्धा शुरु होना खतरे की घंटी है।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर। ऐसा लग रहा है मानो दुनिया एक बार फिर अनजाने में उस दौर की ओर बढ़ रही है, जहाँ परमाणु तबाही का खतरा मंडरा रहा है।

परमाणु हथियारों से लैस देशों के बीच फिर से परीक्षण शुरू करने और अपने भंडार बढ़ाने की होड़ मच गई है। इससे लगता है कि शीत युद्ध की सोच फिर लौट आई है

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने आज घोषणा की कि अमेरिका फिर से परमाणु परीक्षण शुरू करेगा, रूस और चीन जैसे प्रतिद्वंदी देशों की बराबरी करने के लिए।

यह कदम तीनों परमाणु महाशक्तियों, अमेरिका, रूस और चीन के बीच नए सिरे से प्रतिस्पर्धा शुरू कर सकता है, जिनके पास दुनिया के सबसे बड़े परमाणु भंडार हैं।

यह एक बेहद महत्वपूर्ण घटनाक्रम है, क्योंकि इससे 1990 के दशक में बनी वह पूरी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बिखर जाती है, जो परमाणु हथियारों के भंडारण और प्रयोग को नियंत्रित करती थी।

इस कदम की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 1990 के दशक की शुरुआत से अब तक किसी बड़े परमाणु देश ने वास्तविक परमाणु परीक्षण नहीं किया था, रूस ने 1990 के बाद, अमेरिका ने 1992 के बाद और चीन ने 1996 के बाद कोई परमाणु परीक्षण नहीं किया।

आज अमेरिका द्वारा परमाणु परीक्षण फिर शुरू करने की घोषणा दरअसल रूस द्वारा हाल ही में किए गए उन्नत परमाणु हथियार परीक्षणों का जवाब है। रूस और अमेरिका के बीच संबंधों में आई कड़वाहट के बाद यह स्थिति बनी है। इस बीच चीन भी चुपचाप अपनी परमाणु क्षमता को लगातार बढ़ा रहा है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

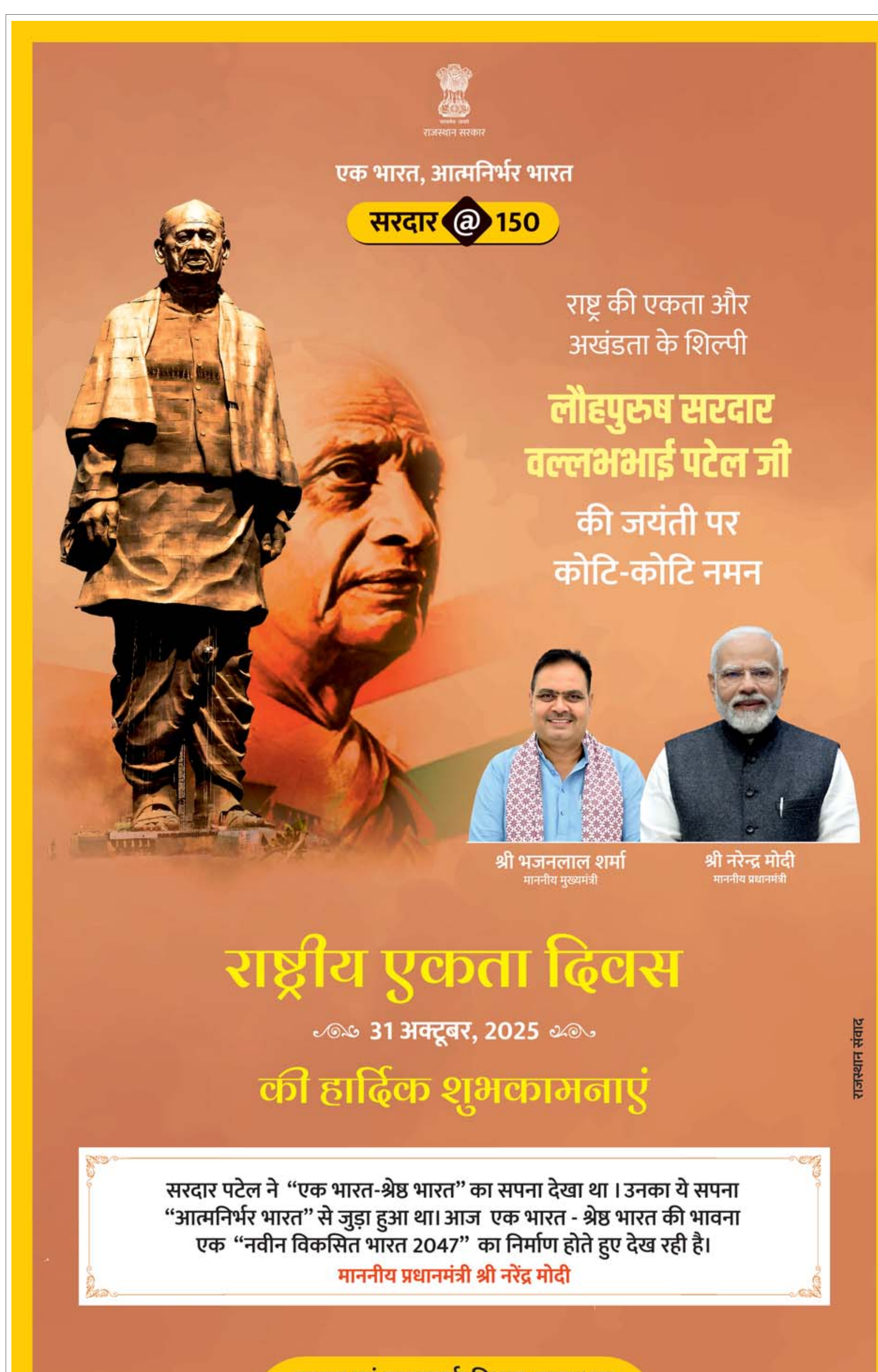

विचार बिन्दु

अधिकार जताने से अधिकार सिद्ध नहीं होता। –टैगोर

तेजस्वी यादव बिहार विधानसभा की एक सीट से चुनाव लड़ रहे हैं यदि वे जीत जाते हैं और उन्हें मजिस्ट्रेट कोर्ट से सजा होती है तो क्या वे पद पर बने रहेंगे?

अनुच्छेद 170 के अनुसार प्रत्येक राज्य में एक विधानसभा होगी। विधानसभा का कार्यकाल 5 वर्षों के लिये होगा। विधानसभा के चुनाव में खडे होने के लिये व्यक्ति अर्हित तभी होगा जब वह अनुच्छेद 173 व संसद के कानून के तहत् वर्णित अर्हितायें की पूर्ति करता हो। विधानसभा के सत्र का अवसान व विघटन भारतीय संविधान के अनुच्छेद 172 के अनुसार किया जाता है। फिर नये चुनाव की घोषणा की जाती है। अनुच्छेद 190 के अनुसार विधानसाभा व सदस्य उस समय नहीं रहेगा यदि वह निरर्हता से ग्रस्त हो जावेगा, जिनका उल्लेख अनुच्छेद 191 के खण्ड (1) या खण्ड (2) में किया गया है। अनुच्छेद 191 के उपखण्ड (म) में यह उल्लेख है कि 'यदि वह संसद द्वारा बनाई गई किसी विधि द्वारा या उसके अधीन इस प्रकार निरर्हित कर दिया जाता है। संसद द्वारा पारित किया गया कानून जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 है। अनुच्छेद 190 में यह व्यवस्था है कि यदि कोई विधायक उक्त जन प्रतिनिधित्व एक्ट, 1951 के तहत् निरर्हित किया जाता है तो विधानसभा का स्थान रिक्त हो जायेगा।

अनुच्छेद 192 के अनुसार यदि यह प्रश्न उठता है कि राज्य की विधानसभा का काई सदस्य अनुच्छेद 191 के खण्ड (1) में वर्णित किसी निरर्हता से ग्रस्त हो गया है या नहीं तो प्रश्न राज्यपाल को विनिश्चय के लिए निर्देशित किया जावेगा और उसका विनिश्चय अन्तिम होगा। राज्यपाल के अपेक्षा है कि वे निर्णय से पूर्व चुनाव आयोग की राय लेंगे और राय के अनुसार कार्य करेंगे।

जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 (संक्षेप में आर.पी. अधिनियम) की धारा 8 के अनुसार यदि संसद या विधानसभा का सदस्य दोष सिद्ध (Conviction) होता है और दो वर्ष से कम की सजा नहीं होती है तो वह निरर्हता से ग्रस्त हो जाता है और यह निरर्हता दोष सिद्धि की तारीख से प्रारम्भ होगी और सजा काटने के बाद 6 वर्ष तक की निरन्तर रहेगी।

यहाँ यह लिखना समीचीन होगा कि जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 8(1) में निम्नलिखित कानूनों की धाराओं में कन्वीक्शन होता है तो निरर्हता स्वत: मानी गई है यह निरर्हता कन्वीकशन की तारीख से सजा काटने के बाद जेल से छूटने की तारीख से 6 वर्षों तक रहेगी:–

(1) धारा 153ए आईपीसी (धर्म के नाम पर वैमनस्य)
(2) धारा 171ई, घूस देना
(3) धारा 171एफ आईपीसी
(4) धारा 171(सी) व धारा 171(1) आईपीसी
(5) धारा 376, 376ए से डी, धारा 498ए आईपीसी
(6) अपराध अन्तर्गत प्रिवेन्शन ऑफ सिविल राइट्स एक्ट, 1955
(7) प्रिवेन्शन ऑफ करप्शन एक्ट, 1988 आदि

आर पी अधिनियम 1951 की धारा 8(2) में चुनाव से सम्बन्धित अपराधों के मामलों में चुनाव से सम्बन्धित अपराधों के मामलों में निरर्हता ग्रस्त होने का उल्लेख है। जैसे धारा 125, धारा 135, धारा 135ए व धारा 136(2) व (3), धारा 8(3) आर पी अधिनियम के अनुसार यह व्यवस्था है कि यदि अपराध की सजा दो वर्ष से कम की नहीं है तो वह कन्वीक्शन की तारीख से प्रारम्भ होकर सजा काटने के बाद 6 वर्षों की अवधि तक रहेगा। जैसे चोरी का अपराध, मानहानि व धोखाधडी (Cheating) का अपराध आदि।

राजद के लीडर तेजस्वी यादव (जो महागठबन्धन के सम्भावित मुख्यमंत्री हैं) के विरूद्ध Cheating (धोखाधडी) आदि का केस दिल्ली की मजिस्ट्रेट कोर्ट में चल रहा है। उनके विरूद्ध आरोप है कि उन्होंने और लालूजी यादव के परिवार के सभी सदस्यों ने जब लालूजी देश के रेलमंत्री थे, बिहार के लोगों की जमीन बहुत कम कीमत में खरीदी थी। जमीनों के मालिकों को प्रलोभन दिया था, Misrepresent किया था, धोखे में रखा था कि वे उन्हें राज्य की नौकरी दिलायेंगे। ये तथ्य धारा 420 आईपीसी के अपराध का दोषी तेजस्वी को बनाते हैं। मजिस्ट्रेट ने 420 आईपीसी आदि के चार्ज तेजस्वी के विरूद्ध आरोपित किये हैं। तेजस्वी के विरूद्ध आईपीसी के अपराध 420 आदि के चार्जेज आरोपित हो चुके हैं और ट्रायल दिनांक 27.10.2025 से प्रारम्भ हो चुकी है, जिसका अर्थ है Prima Facie केस बनता है अत: ट्रायल होनी है।

लेखक के एक मित्र ने जो राज्य सरकार के एक उच्च पदाधिकारी रह चुके हैं, ने पूछा कि जब तेजस्वी के विरूद्ध चार्ज स्थापित हो चुके हैं तो फिर वे चुनाव कैसे लड़ सकते है? लेखक ने विनम्रता से उन्हें समझाया कि चार्ज आरोप होना आरोप सिद्ध नहीं है वह तो ट्रायल के पूरा होने पर ही उपलब्ध शहाद के आधार पर दोष सिद्ध होता है।

बिहार में चुनाव प्रारम्भ हो चुके हैं और तेजस्वी (राजद के नेता) चुनाव में एक उम्मीदवाद हैं वे यदि चुनाव में जीत जाते हैं और विधायक बन जाते हैं तथा बनने के बाद धारा 420 आईपीसी के अपराध का दोषी उन्हें माना जाता है तो संविधान के उपरोक्त प्राधानों के अनुसार विधयक बने रहने के हेतु निरर्हता से ग्रसित हो जावेंगे और विधायक की उनकी सीट रिक्त घोषित हो जावेगी। इसके अतिरिक्त चुनाव में भी वे ऐसे कार्य कर रहे हैं, जो चुनाव अपराधों में आते हैं। मौखिक कथन व भाषणों में धर्मों, जाति, कॉम्यूनिटी (समुदायों) आदि के मध्य घृणा की भावना फैलाई जा रही है यह कृत्य क्रमश: जनप्रनिधित्व कानून की धारा 125 व आईपीसी की धारा 153ए तथा धारा 505 आईपीसी के तहत् अपराध है। उनके अन्य कृत्य आईपीसी की धारा 420 के तहत् भी अपराध है और इनकी सजा दो वर्ष से कम नहीं है वे निरर्हता से ग्रसित हो जावेंगे और उनकी विधायक की सीट स्वत: रिक्त मान ली जावेगी तथा कन्वीक्शन की तारीख से यह निरर्हता निरन्तर 6 वर्षों के लिये मानी जावेगी।

धारा 8(3) के तहत् वे अपराध आते हैं जिनमें यदि सजा दो वर्ष से कम की नहीं है। उदाहरण के लिये यदि कोई अपराध धारा 8(1) अथवा 8(2) के तहत् आता है जैसे मानहानि या चोरी या धोखाधडी और सजा दो वर्ष से कम की नहीं है तो भी उसे अयोग्य (निरर्हता ग्रसित) घोषित किया जा सकता है।

चुनाव में जो व्यक्ति खडे.हुये हैं, उन्होंने यदि कोई चुनाव सम्बन्धित अपराध किया है अथवा उनका कृत्य करप्ट प्रेक्टिस (भ्रष्ट आचरण) की परिभाषा में आता है अथवा ऐसे कार्य किये हैं जो कानूनी तौर पर औचित्य हीन व प्रतिबंधित हैं या आपराधिक प्रवृत्ति के हैं तो उनके विरूद्ध चुनाव याचिका प्रस्तुत की जा सकती है और ऐसे कृत्य सिद्ध होना पाये जाते हैं तथा इनके घटित किये जाने से चुनाव का नतीजा प्रभावित हुआ है, तो हाईकोर्ट को जिसे चुनाव याचिका की सुनवाई करने का अधिकार है, उसे चुनाव रद्द करने का अधिकार प्राप्त है तथा उस व्यक्ति को करप्ट प्रेक्टिस में भाग लेने के कारण 6 वर्ष तक की अवधि के लिये प्रतिबंधित किया जा सकता है। नेताओं द्वारा जो लोक लुभावने वायदे फ्रीबीज के किये जा रहे हैं कानूनी दृष्टि से ये कृत्य आर.पी. एक्ट 1951 की धारा 123 के तहत् परिभाषित Corrupt Practice माना जा सकता है। इस संबंध में चुनाव याचिका अथवा फौजदारी कार्यवाही करना ही सही कानूनी प्रक्रिया है। लोकतंत्र में चुनाव Fair होने चाहिये; किन्तु Free Beej की यानी घूस (Bribe) की आंधी से लोकतंत्र अपना सही मार्ग भूल गया है। चुनाव का यह नियम है कि यदि कोई निरर्हता ग्रसित होता है तो प्राप्त वोट, ऐसे माने जावेंगे, मानो वे रद्दी की टोकरी में डाल दिये गये हैं। यदि विधायक ने जन प्रतिनिधित्व एक्ट, 1951 की धारा 8(1) के अपराध किये हैं तो उसे निरर्हता ग्रसित (Disqualify) अर्थात् चुनाव लडने से अयोग्य घोषित किया जा सकता है। यह अयोग्यता कन्वीक्शन की तारीख से 6 वर्ष तक रहेगी। यह अयोग्यता स्वत: ही होगी, जिसमें यह भी आवश्यक नहीं है कि उसे सजा 2 वर्ष से कम की नहीं है। इस केटेगरी में धारा 153ए आईपीसी (दो समुदायों में धर्म, जाति के नाम पर घृणा फैलाना) रिश्वत देना (धारा 171 सी आईपीसी), रेप आदि के Offence आते हैं। चुनाव कानून के (आर पी एक्ट) के अपराध जैसे धारा 125, धारा 135, 135ए आदि हैं इनमें भी अयोग्यता स्वत: है।

धारा 8(3) के तहत् वे अपराध आते हैं जिनमें यदि सजा दो वर्ष से कम की नहीं है। उदाहरण के लिये यदि कोई अपराध धारा 8(1) अथवा 8(2) के तहत् आता है जैसे मानहानि या चोरी या धोखाधडी और सजा दो वर्ष से कम की नहीं है तो भी उसे अयोग्य (निरर्हता ग्रसित) घोषित किया जा सकता है।

तेजस्वी यादव के विरूद्ध Cheating का अपराध है, यदि वे कन्वीक्ट होते हैं और सजा दो वर्ष से कम नहीं है तो वे अयोग्य होंगे यानी निरर्हता ग्रसित होंगे और उनकी सीट स्वत: रिक्त हो जावेगी। यदि Cheating (420 IPC) में सजा 2 वर्ष से कम है तो अयोग्यता स्वत: नहीं होगी हाँ राजनीतिक पार्टी या हाउस उनके विरूद्ध कोई भी घरेलू कार्यवाही के बाद कोई दण्ड दे सकती है।

राहुल गांधी के विरूद्ध धारा 500 भा.द.सं. के मानहानि के केस में माननीय सुप्रीम कोर्ट ने उनके कन्वीक्शन को (सजा को ही नहीं) निलम्बित किया था वह भी सीआरपीसी के अपने विशेष अधिकार के तहत् धारा 389 अत: उनकी सदस्यता पुन: रेस्टोर (बहाल) हो गई। यहाँ यह लिखना भी उचित होगा कि आर पी एक्ट 1951 की धारा 8(4) में एमपी/एमएलए को 3 माह का समय अपील दायर करने का दिया गया है किन्तु यह प्रावधान लीली थोमस के केस (2013) 7 एससीसी 653 में सुप्रीम कोर्ट की तीन पीठ ने असंवैधानिक करार दिया है। सुप्रीम कोर्ट की उस माननीय पीठ ने, कन्वीक्शन को निलम्बित किया उसके समक्ष लीली थोमस का केस किसी भी पक्षकार पार्टी के सुयोग्य एडवोकेट ने रेफर नहीं किया ऐसा प्रतीत होता है। लीली थोमस का केस आर पी एक्ट की धारा 8(3) के अनुसार स्वत: (Self Executing) तथा Automatic माना गया था तथा सीट के रिक्त होने के विषय को अनुच्छेद 101(3)/190(3)(a) के सन्दर्भ में परखा गया था तथा धारा 8(4) का लाभ नहीं दिया था। जब तक सुप्रीम कोर्ट लीली थोमस के केस को पुन: सुनकर रिवर्स न करे, देश का कानून तो वही रहेगा। अत: इसका रिव्यू न्यायहित में होना आवश्यक है।

अनुच्छेद 101 का सम्बन्ध सांसद की सदस्यता से है और अनुच्छेद 190 विधायक के सम्बन्ध में है। धारा 420 आईपीसी (Cheating) का व मानहानि का अपराध धारा 500 आईपीसी पुरानी भारतीय दण्ड संहिता से है, इन्हें नये कानूनों की धाराओं के साथ समझकर, पाठक अध्ययन करें।

लेखक का अभिमत है कि कन्वीक्शन को स्टे किया, जब वह प्रभावशील हो चुका था। कन्वीक्शन के कारण सांसद की सीट रिक्त हो चुकी थी और धारा 8(4) आर.पी. एक्ट स्वंय ही असंवैधानिक होने से अस्तित्व खो चुकी थी। शास्त्रों का सिद्धान्त है शून्य में से न घटाया जा सकता है और न जोड़ा जा सकता है।

बिहार के प्रथम चरण के चुनाव जो 6 नवम्बर से प्रारम्भ होंगे, उनमें 121 सीटों के चुनाव के 27: उम्मीदवारों पर गम्भीर आपराधिक आरोप हैं, यों 32: उम्मीदवारों पर आपराधिक केसेज हैं। अत: प्रस्तुत प्रसंग केवल तेजस्वी यादव का ही नहीं है अपितु सभी राजनीतिक पार्टियों का है।

एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) व बिहार इलेक्शन सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार राजद के 76:, भाजपा के 65: तथा कांग्रेस के 65: ऐसे उम्मीदवार हैं जिनके विरूद्ध फौजदारी के मुकदमें हैं। प्रथम चरण में 1314 उम्मीदवार हैं उनमें से 1303 ने शपथ-पत्र पर इसे स्वीकार किया है। इनमें से 423 ऐसे हैं, जिनके विरूद्ध फौजदारी व 354 के विरूद्ध गम्भीर अपराधों के आरोप हैं।

पाठक स्वंय मूल्यांकन करें, यदि इन्हें सजा होती है तो कानून की पृष्ठभूमि में बिहार के चुनाव का अन्तिम परिणाम क्या होगा?

सत्यमेव जयते!

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन,
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

अखंड भारत की एकता के शिल्पी ''सरदार वल्लभभाई पटेल''

राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्टूबर) पर विशेष - सरदार वल्लभभाई पटेल के संकल्प ''एक भारत-श्रेष्ठ भारत-आत्मनिर्भर भारत'' को साकार करने का अवसर

डॉ. गोरधन लाल शर्मा

राष्ट्रीय एकता दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि अखंड भारत की आत्मा को नमन करने का दिवस है। यह वह अवसर है, जब हम स्वतंत्र भारत की एकता, अखंडता और राष्ट्रिनर्माण के शिल्पी लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के अदम्य संकल्प, दूरदर्शिता और संगठन कौशल को स्मरण करते हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद बिखरी हुई रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर भारत को उसकी भौगोलिक और राष्ट्रीय एकता प्रदान की।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी-संकल्प और श्रद्धा का प्रतीक :-गुजरात में नर्मदा नदी के तट पर स्थित, 182 मीटर ऊँची, दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी केवल स्टील और कंक्रीट से बनी एक स्मारक नहीं अपितु यह उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है जिसने भारत को उसकी क्षेत्रीय आत्मा दी। यह उन मूल्यों की याद दिलाता है जो हमें एक राष्ट्र के रूप में जोड़ते हैं। हर साल 31 अक्टूबर को राष्ट्र अपने लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि देने के लिए रुकता है। उनकी दूरदर्शिता, साहस और कूटनीतिक कौशल ने एक खंडित उपमहाद्वीप को एक अखंड देश में बदल दिया। इस दिन को एकता दिवस या राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो न केवल पटेल के नेतृत्व को बल्कि विविधतापूर्ण होते हुए भी अविभाज्य भारत के चिरस्थायी विचार को भी ट्रिब्यूट है।

देश में पनपने वाले क्षेत्रवाद, सांप्रदायिक विभाजन और राजनीतिक ध्रुवीकरण हमारी सामूहिक भावना की परीक्षा लेते रहते हैं, सरदार पटेल का मूलमंत्र 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का विचार आज भी हमारा मार्गदर्शक बना हुआ है। यह हमें याद दिलाता है कि भारत की महानता समानता में नहीं बल्कि साझा मूल्यों और पारस्परिक सम्मान के माध्यम से अनगिनत मतभेदों को एक साथ रखने की उसकी क्षमता में निहित है।

राष्ट्र को जोड़ने वाली लौह इच्छाशक्ति :-वर्ष 1947 में जब भारत को आज़ादी मिली तो जश्न के साथ एक बड़ी चुनौती भी आई। अंग्रेज़ 562 रियासतें छोड़ गए थे, जिनमें से हर एक के अपने शासक और आकांक्षाएं थीं। अखंड भारत का सपना आसानी से अराजकता और विभाजन में बदल सकता था। जब देश में अंग्रेज़ों की फूट डालो-राज करो की नीति का जहर घोल रहे थे, उस महत्वपूर्ण क्षण में सरदार पटेल राष्ट्रीय एकीकरण के सूत्रधार के रूप में आगे आए। दृढ़ता और कूटनीति के अद्भुत मिश्रण से, उन्होंने अधिकांश शासकों को भारत में विलय के लिए राजी कर लिया और विरोध करने वालों से निर्णायक रूप से सर्मपण करवा दिया। हैदराबाद, जूनागढ़ और अन्य दुर्गम क्षेत्रों से निपटने में उनके संयम, चातुर्य और दृढ़ इच्छाशक्ति का संगम देखने को मिला। सरदार पटेल की सफलता केवल प्रशासनिक ही नहीं थी, यह दूरदर्शी भी थी।

सांझी सांस्कृतिक विरासत और संस्थागत एकता के संवाहक :-सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। अपने सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है।

एकता दिवस का अर्थ और प्रासंगिकता :-एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र की सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आव्हान करता है। हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोज़मर्रा की ज़िम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है।

कांस्य में डाली गई एक विरासत :-2018 में अपने उद्घाटन के बाद से, यह प्रतिमा वार्षिक राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह का केंद्र बन गई है, जहाँ देश भर से नागरिक, पुलिस व सैन्य बलों के सदस्य, युवा समूह और सांस्कृतिक कलाकार आते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पिछले एकता दिवस संबोधन में कहा था, स्टेच्यू ऑफ़ यूनिटी अतीत का स्मारक नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक प्रतिज्ञा है।

संस्थागत विकास से डाली सशक्त भारत की नींव :-सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मज़बूत संस्थाओं पर उनके ज़ोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय सेवाओं का गठन प्रशासनिक निरंतरता और राष्ट्रीय एकता सुनिश्चित करने का एक सोचा-समझा प्रयास था। अधिकारियों के पहले बैच को दिए गए उनके शब्द, जनता की सेवा और राष्ट्र की अखंडता की भावना बनाए रखें आज भी शासन में एक मार्गदर्शक सिद्धांत बने हुए हैं।

सुशासन के लिए दी स्टील फ्रेम ऑफ इण्डिया की अवधारणा :-21 अप्रैल, 1947 को नई दिल्ली के मेटकाफ हाउस में भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रथम बैच को संबोधित करते हुए सरदार पटेल ने कहा था आप भारत के स्टील फ्रेम हैं, आप पर इस राष्ट्र की एकता और सुशासन का दायित्व है। उनके इसी संदेश की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 21 अप्रैल को राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस मनाया जाता है, जहाँ शासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। यह परंपरा उनके सुशासन और जवाबदेही के सिद्धांतों की जीवंत विरासत है।

विकसित भारत 2047 का संकल्प :-जैसे-जैसे भारत 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर बढ़ रहा है, एकता का असली पैमाना भौतिक भूभाग नहीं, बल्कि साझा उद्देश्य है। जिस विचार ने कभी 562 रियासतों को एक सूत्र में पिरोया था, अब उसे 145 करोड़ सपनों को एक सूत्र में पिरोना होगा। सरदार पटेल की दूरदर्शिता 1947 में स्थिर नहीं हुई थी-यह भविष्यसूचक थी। एकता का उनका आ ान आज भी भारत का राष्ट्रीय दिशासूचक है।

इस राष्ट्रीय एकता दिवस पर आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम सरदार वल्लभभाई पटेल के आदर्शों पर चलते हुए भारत की विविधता में एकता, सांस्कृतिक गौरव, स्वदेशी मूल्यों, अखंडता और गौरवमयी इतिहास की ज्योति को प्रज्वलित कर सरदार पटेल के ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' के सपने को सदा जीवंत रखेंगे।

डॉ. गोरधन लाल शर्मा
समाजशास्त्री, लेखक एवं राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी।

ग्रामीण व शहरी सेवा शिविर : सुशासन की अवधारणा को नई दिशा

राजेंद्र गहलोत

राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित किए गए सेवा शिविरों का उद्देश्य प्रदेश के अंतिम व्यक्ति तक सुशासन और सुविधा पहुंचना है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में यह पहल एक ऐतिहासिक बदलाव की ओर संकेत करती है, जहां प्रशासन अब आमजन की दहलीज पर जाकर उनकी ज़रूरतें पूरी कर रहा है। सेवा शिविर न केवल तात्कालिक प्रशासनिक सुविधा हैं, बल्कि वे सुशासन की अवधारणा को भी नई दिशा देते हैं।

इन शिविरों की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर की गई, जिससे यह अभियान सेवा और सुशासन की राष्ट्रव्यापी अवधारणा से जुड़ गया। शिविरों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां 18 विभागों की सेवाएं एक ही छत के नीचे आमजन को उपलब्ध हो रही है। पहले आम नागरिकों को सरकारी प्रमाण पत्र, पट्टे, पेंशन, बिजली या अन्य शिकायतों के लिए दफ्तर-दफ्तर भटकना पड़ता था। अब एक ही स्थान पर, शिविर स्थल पर, तत्काल समाधान मिल रहा है। इससे देरी और भ्रष्टाचार की संभावनाएं भी कम हो रही हैं। इन शिविरों में नामांतरण, जाति प्रमाण पत्र वितरण, भू-राजस्व शुद्धिकरण, मूल निवास प्रमाण पत्र, जन आधार आदि के कुल 18 प्रमुख प्रशासनिक कार्य संपन्न किए जा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, 2.04 लाख से ज्यादा जाति प्रमाण पत्र, 1.53 लाख भू-राजस्व शुद्धिकरण प्रकरण, 1.24 लाख नामांतरण निस्तारण, 1.72 लाख मूल निवास प्रमाण पत्र वितरित किए जा चुके हैं।

ग्रामीण सेवा शिविरों का आयोजन पंचायत समितियों की ग्राम पंचायतों में चरणबद्ध तरीके से जारी है। सभी पंचायतें कवर करने के लिए हर हफ्ते गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार को दो ग्राम पंचायतों में शिविर लगते हैं। राजस्व विभाग द्वारा मौके पर ही नामांतरण, नोटिस तामील, प्रमाणपत्र वितरण, आदि कार्य पूरे किए जा रहे हैं।

ग्रामीण विकास विभाग गरीबी मुक्त गांव योजना के तहत बीपीएल सर्वे कर रहा है, जबकि स्वास्थ्य विभाग टीबी मुक्त भारत, मातृ-शिशु स्वास्थ्य जांच जैसी योजनाएं चला रहा है। पशुपालन विभाग ने मवेशियों के लिए 2.60 लाख से ज्यादा बीमा पॉलिसियां जारी कर चुका है। कृषि विभाग बीज किट वितरित करता है और आपदा प्रबंधन विभाग राहत राशि मंजूर कर रहा है।

शहरी क्षेत्रों में शिविर न केवल प्रशासनिक कार्यों को त्वरित गति कर रहे हैं, बल्कि शहरों के इंफ्रास्ट्रक्चर में भी सुधार ला रहे हैं। सड़क मरम्मत, नालियों की सफाई, स्ट्रीट लाइट की मरम्मत व नई लाइट्स लगाने के साथ प्रमुख चौराहों और पार्कों का सौंदर्यीकरण हो रहा है। नगर निकायों में जन्म-मृत्यु एवं विवाह पंजीकरण, भवन निर्माण स्वीकृति, लीज होल्ड से फ्री होल्ड पट्टों के प्रकरणों का निस्तारण, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के आवेदन आदि महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्य भी किए जा रहे है। शहरी और ग्रामीण सेवा शिविरों के माध्यम से 1.95 लाख से अधिक पट्टा वितरण, 2.60 लाख मवेशी बीमा पॉलिसियां, 2.04 लाख जाति प्रमाण पत्र वितरण पत्र वितरित किए जा चुके हैं। इसी प्रकार 1.98 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन के प्रकरण, 1.48 लाख जनधन खातों का संचालन, 1.42 लाख नई स्ट्रीट लाइट्स लगाना, 17 लाख किशोरियों एवं गर्भवती महिलाओं की एनीमिया जांच की जा चुकी है। शिविरों मे 24.36 लाख मरीजों का उपचार, 10.77 लाख की टीबी व एनसीडी रोग स्क्रीनिंग की गई। खाद्य सुरक्षा पोर्टल पर 95,800 से अधिक आवेदन मंजूर हुए, जन आधार योजना में 1.13 लाख लोगों को लाभ, 25 हजार लोगों को स्व निधि ऋण, वय वंदन कार्ड जारी होने की संख्या 75,600 रही है। इन शिविरों से आमजन को त्वरित समाधान और राहत मिली है। नामांतरण, जाति व निवास प्रमाणपत्र या बिजली-बिल जैसी वर्षों से लंबित समस्याएं कुछ घंटों में निस्तारित की जा रही है। इससे न केवल जनता का सरकार पर विश्वास मजबूत हुआ है, बल्कि प्रशासनिक इकाइयों की कार्यकुशलता में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। राज्य सरकार ने नगरीय निकायों में विशेष रियायतें भी दी हैं। सबसे अहम यह कि बकाया लीज राशि यदि एकमुश्त दी जाती है तो ब्याज में 100ङ छूट मिलेगा। यह वर्षों से लंबित मामलों में दबे हजारों नागरिकों, व्यापारियों व परिवारों के लिए सीधी राहत है। ऐसे प्रयोग सार्वजनिक प्रशासन के प्रति जनता में सकारात्मकता और सहभागिता बढ़ाते हैं।

पारदर्शिता, सरलता और व्यापक स्तर पर आयोजित इन शिविरों में की गई घोषणाओं व निस्तारण का अमल जमीनी स्तर पर भी उतना ही पुख्ता करने के लिए सतत निगरानी और मूल्यांकन भी किया जा रहा है। सेवा शिविर प्रशासनिक पारदर्शिता, जवाबदेही, कार्यकुशलता और नागरिक सहभागिता का मिला जुला उदहारण बन चुके हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सोच है कि अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक योजनाओं और विकास का लाभ पहुंचे। इसी भावना के अनुरूप सेवा शिविर न केवल प्रशासनिक सुधार की दिशा में बड़ा कदम हैं, बल्कि 'अंत्योदय' की संकल्पना को भी साकार कर रहे हैं।

–राजेंद्र गहलोत,
सांसद, राज्यसभा

राशिफल शुक्रवार 31 अक्टूबर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र सायं 6:51 तक, वृद्धि योग रात्रि 4:32 तक, कौलव करण दिन 10:04 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 6:48 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। आज आंवला नवमी, श्री हरि जयन्ती कृत युगादि, मथुरा प्रदक्षिणा है। पंचक प्रात: 6:48 से आरम्भ होंगे। आज जग धात्री पूजा (बंगाल में) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:02 तक, लाभ-अमृत 8:02 से 10:48 तक, शुभ 12:10 से 1:33 तक, चर 4:19 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:40, सूर्यास्त 5:41 तक

मेष
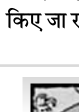
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। आज घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
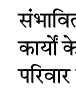
व्यावसायिक कार्यों में परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। अटके कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
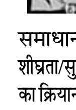
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
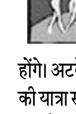
व्यक्तिगत कारणों से भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का भय है।

सिंह

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या
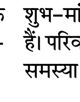
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
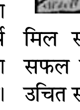
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित मामलों में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
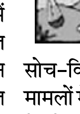
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

धनु

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

मकर
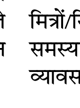
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
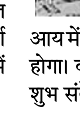
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन
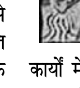
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। आज मन में असंतोष बना रहेगा।

पाकिस्तान से आए ड्रग्स को कमीशन पर भारत में बेचने वाला तस्कर गिरफ्तार

बाड़मेर के बीजावल का रहने वाला है तस्कर, पैसा कमाने की चाह में इस गोरखधंधे में उतरा

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स (एएनटीएफ) और आतंकवाद निरोधक दस्ता राजस्थान जयपुर (एटीएस) टीम ने साथ मिलकर एक इनामी ड्रग्स तस्कर को गिरफ्तार किया है। जो पाकिस्तान से आए ड्रग्स को कमीशन पर भारत में सप्लाई कर रहा था। एएनटीएफ की पूछताछ में कई अहम खुलासे होने की संभावना है। ड्रग्स तस्करी में उसके एक इनामी साथी को भी पकड़ा गया है।

एटीएस पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) विकास कुमार ने बताया कि बाड़मेर के बीजावल के रहने वाले ड्रग्स तस्कर को गिरफ्तार किया गया है। किन्हीं कारणों से आरोपी का नाम गुप्त रखा गया है। वह राजस्थान की सीमा पर बैठकर ड्रग्स की तस्करी करता था।

राजस्थान पुलिस की ओर से आरोपी ड्रग्स तस्कर पर 25 हजार रुपए का इनाम घोषित है। पढ़ाई में कमजोर होने के साथ ही पैसा कमाने की चाह में ड्रग्स तस्करी के खेल में उतरा। पिता की राह पर चलकर नशे के कारोबार में नाबालिग उम्र से ही वह नशे के कारोबार में उतर गया। पिता के जेल जाने के बाद कारोबार को देश की अलग-अलग सीमाओं पंजाब, जैसलमेर, बीकानेर तक फैलाया।

एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स और आतंकवाद निरोधक दस्ते की टीम ने शातिर इनामी ड्रग्स तस्कर को गिरफ्तार किया।

आईजी विकास कुमार ने बताया कि लम्बे समय से इनामी ड्रग्स तस्कर खुफिया एजेंसियों को गच्चा दे रहा था। लम्बे समय से पाकिस्तान से नशे के कारोबारियों को पकड़वाने के धोखे में सीमावर्ती क्षेत्र में खुफिया एजेंसियों को अपने जाल में फंसा रखा था। इसी आड़ में वह ड्रग्स तस्करी का धंधा बैखौफ होकर सीमापार बैठे तस्करों से करता था।

ड्रग्स के खेल में वह नहीं तो माल खरीदता था। नहीं बेचने का झंझट रखता था। सीमा पार पाकिस्तान से आए हेरोइन का पैकेट रिसीव कर सुरक्षित अपने पास रखता था। पंजाब-दिल्ली के सरगनाओं के सम्पर्क करने पर उसके हवाले कर देता था। उसे हेरोइन के प्रति पैकेट पर एक लाख रुपए का कमीशन मिलता था।

> ■ **आरोपी अपने पिता की राह पर चलकर नशे के कारोबार में नाबालिग उम्र से ही उतर गया था। पिता के जेल जाने के बाद कारोबार को देश की अलग-अलग सीमाओं पंजाब, जैसलमेर, बीकानेर तक फैलाया।**

गिरफ्तार आरोपी ड्रग्स तस्कर की एक बुआ की शादी करीब 30 साल पहले पाकिस्तान में हुई थी। उस बुआ के सम्पर्क के नाम पर आरोपी तस्कर का पिता तारबंदी होने से पहले पाकिस्तान से बेरोकटोक माल लाता था। तारबंदी होने के बाद धंधा मंदा पड़ा तो फोन से सम्पर्क करने लगा। तारबंदी पार पैकेट फेंके जाते और ऊंट की चराई के नाम पर आस-पास घूमकर आरोपी का पिता उठा लेता था। पाकिस्तान से आए ड्रग्स को पंजाब-दिल्ली के सरगनाओं से सम्पर्क कर सौंप देता। पिता के साथ ही आरोपी ने भी नाबालिग उम्र में ही ड्रग्स का धंधा शुरू कर दिया।

पिता के जेल जाने के बाद ड्रग्स के साम्राज्य को बढ़ाने के साथ पैसा कमाने में जुट गया। वहीं एएनटीएफ टीम ने दूसरी कार्रवाई कर उसके साथी जोगाराम उर्फ जोगेन्द्र निवासी बलदेव नगर बाड़मेर को अरेस्ट किया। वह पिछले 8 सालों से मध्य प्रदेश से बाड़मेर तक ड्रग्स सप्लाई का काम कर रहा था।

वह पिछले दो साल से फरार चल रहा था। उसकी गिरफ्तारी पर 20 हजार रुपए का इनाम रखा हुआ है। तस्करी के काम के लिए उसने अपने परिवार के साथ रिश्तेदारों को भी रोजगार करने के लिए ट्रक दिलवाए। पिछले दो महीने से जोगेंद्र चुपके से घरवालों से मिलकर फरार हो जाता था। अपनी स्कॉर्पियो गाड़ी को घर से करीब 2 किलोमीटर दूर गुप्त ठिकाने पर छिपा देता था।

एएनटीएफ टीम ने काफी मशक्कत के बाद फरार इनामी बदमाश जोगेन्द्र को धर-दबोचा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सपत्निक निज निवास पर किया गौ-पूजन

गोपाष्टमी पर प्रदेश के कल्याण एवं सुख-समृद्धि की कामना की

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरूवार को गोपाष्टमी पर मुख्यमंत्री निवास पर सपत्नीक गौपूजन कर प्रदेश के कल्याण एवं सुख-समृद्धि की कामना की।

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरूवार को गोपाष्टमी के पावन अवसर पर मुख्यमंत्री निवास पर सपत्नीक गौपूजन कर प्रदेश के कल्याण एवं सुख-समृद्धि की कामना की। उन्होंने तिलक लगाकर गौमाता को पुष्प अर्पित किए तथा माला पहनाई। मुख्यमंत्री ने गौमाता को गुड़ खिलाकर वस्त्र भी अर्पित किए। शर्मा ने कहा कि गोपाष्टमी भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण पर्व ही नहीं, बल्कि हमारी सनातन संस्कृति की अमर धरोहर है। यह गौमाता के प्रति हमारे आदर, सेवा और संरक्षण की भावना का प्रतीक है। हमारी सरकार गौसंवर्धन, गौशालाओं के उन्नयन तथा गौपालकों के सशक्तीकरण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इस अवसर पर उन्होंने आमजन से गौसेवा और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहने का आव्हान किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि गौ-माता का हमारी सनातन संस्कृति में पूजनीय स्थान है। गोपाष्टमी का पर्व हमें गौ माता की सेवा करने का अवसर देता है। उन्होंने कहा कि गौ माता हमारा गौरव है तथा जीवन का आधार है। उन्होंने सभी लोगों से आव्हान किया कि गौ सेवा के लिए समर्पित होकर कार्य करें, साथ ही गौशालाओं से जुड़कर गौ संरक्षण के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। मुख्यमंत्री ने मांग्यावास स्थित सद्गुरू टेऊँराम गोशाला तथा रेनवाल स्थित जोतड़ा गौशाला में आयोजित गोपाष्टमी महोत्सव कार्यक्रम को भी संबोधित किया।

> ■ **गौशालाओं से जुड़कर गौ संरक्षण के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दें : भजनलाल शर्मा**

उन्होंने कहा कि गौ माता हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार है। गौ उत्पादों का पोषण और पंचगव्य का औषधीय महत्व सर्वविदित है। ऐसे में गौ पूजन धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं, बल्कि पर्यावरण और जीवन के प्रति आभार व्यक्त करने का एक माध्यम भी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार गौ माता के संवर्धन एवं उन्नयन के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। सरकार द्वारा प्रत्येक पंजीकृत गौ शाला को प्रति गाय 50 रुपये प्रतिदिन और छोटे बछड़ों के लिए 25 रुपये प्रतिदिन की सहायता दी जा रही है।

उन्होंने कहा कि गौ संवर्धन के लिए बैलों से खेती करने वाले किसानों को भी 30 हजार रुपये प्रतिवर्ष अनुदान राशि दी जा रही है। शर्मा ने कहा कि गौ माता के संरक्षण एवं संवर्धन में संत-मुनि-महंतों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने गौ माता की रक्षा और सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। उन्होंने आमजन से अपील करते हुए कहा कि गौ सेवा को अपने जीवन का आधार बनाए तथा सरकार के साथ मिलकर गौ संरक्षण के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

लुटेरी दुल्हन शादी के 5 महीने बाद नकदी व जेवरात लेकर फरार

जयपुर। जवाहर नगर थाना इलाके में महज शादी के पांच महीने बाद शातिर लुटेरी दुल्हन अपने पति को गहरी नींद में सोते छोड़कर अलमारी में रखे सोने-चांदी के आभूषण व नकदी लेकर फरार हो गई। नींद से जागने के बाद पति ने अपनी पत्नी को नदारत पाकर इधर-उधर तलाश की। लेकिन कुछ देर बाद अलमारी खुली देख उसके होश उड़ गए। जिसके बाद पीड़ित ने थाने पहुंच मामले की जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने लुटेरी दुल्हन के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है।

हेड कॉन्स्टेबल कैलाश चंद ने बताया कि थाना इलाके में रहने वाले युवक ने मामला दर्ज कराया है कि उसकी शादी फरवरी- 2025 में जयपुर में रहने वाली युवती से हुई थी। शादी के बाद से ही उसकी पत्नी ने झगड़ा करना शुरु कर दिया और झूठे मुकदमें में फंसाने की धमकी देने लग गई। 13 जुलाई की रात पीड़ित गहरी नींद में था। इसका फायदा उठाते हुए लुटेरी दुल्हन ने अलमारी में रखे लाखों रुपए के सोने-चांदी के गहने व 70 हजार रुपए नकद और कीमती सामान चोरी कर फरार हो गई। आरोप है कि उसकी पत्नी की पूर्व में शादी हो चुकी थी।

लेकिन ससुराल वालों ने ये बात छुपाते हुए शादी कर दी। जाग होने पर पीड़ित ने अपनी पत्नी को इधर-उधर तलाशा। लेकिन बाद में अलमारी खुली देख सारा माजरा समझ में आ गया। पीड़ित ने कोर्ट के इस्तेगास के आधार पर अपनी पत्नी के खिलाफ मामला दर्ज कराया। पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर मामला दर्ज कर लुटेरी दुल्हन की तलाश शुरु कर दी है।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी से संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम की कंट्री डायरेक्टर मिलीं

राजस्थान में बाल पोषण और महिला सशक्तिकरण को मज़बूत करने के उपायों पर चर्चा की

जयपुर । उप मुख्यमंत्री तथा महिला एवं बाल विकास मंत्री दिया कुमारी से संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (भारत) की कंट्री डायरेक्टर एलिसाबेट फाउर एवं उनकी टीम ने गुरूवार को सचिवालय में मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने राजस्थान में बाल पोषण और महिला सशक्तिकरण को मज़बूत करने के उपायों पर चर्चा की। बैठक में राजस्थान सरकार की महिलाओं एवं बालिकाओं के सशक्तिकरण के लिए चलाई जा रही योजनाओं जैसे-लाडो प्रोत्साहन योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में राज्य सरकार की ओर से दी जा रही अतिरिक्त राशि, न्यूट्री किट योजना आदि की जानकारी दी गई।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि यह बहुत ही प्रसन्न और उत्साहित होने का विषय है कि संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (भारत) के सहयोग से स्वयं सहायता समूहों को सहयोग देने से लेकर हमारे बच्चों को बेहतर पोषण और शिक्षा प्रदान करने तक में नई संभावनाएँ खुल सकती ह ं। हम सब मिलकर एक स्वस्थ और सशक्त राजस्थान की ओर लगातार कदम बढ़ा रहे हैं।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी का कंट्री डायरेक्टर एलिसाबेट फाउर ने महिला एवं बाल विकास विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा अब तक दिए गए सहयोग के लिए आभार जताया। उन्होंने इसके साथ ही महिलाओं एवं बच्चों के पोषण तथा बच्चों की प्री-स्कूल शिक्षा के लिए भारत सरकार और राजस्थान सरकार के द्वारा किये जा रहे नवाचारों की सराहना भी की।

उप मुख्यमंत्री तथा महिला एवं बाल विकास मंत्री दिया कुमारी से गुरूवार को संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (भारत) की कंट्री डायरेक्टर एलिसाबेट फाउर एवं उनकी टीम ने सचिवालय में मुलाकात की।

महिला एवं बाल विकास, शासन सचिव महेंद्र सोनी ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (भारत) की ओर से जयपुर की पांच परियोजनाओं में पूरक पोषाहार सप्लाई में तकनीकी सहयोग किया जा रहा है। राजस्थान में प्री स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में भी काफ़ी नवाचार किए जा रहे हैं। साथ ही इस राज्य सरकार द्वारा दिए गए 275 करोड़ के अतिरिक्त बजट तथा पार्टनर के साथ भी आंगनवाड़ी केंद्रों के इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार का काम बड़े स्तर पर हाथ में लिया गया है। उन्होंने अवगत कराया कि बाल पोषण और महिला सशक्तिकरण को मज़बूत करने के उपायों पर निदेशक, आईसीडीएस तथा संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (भारत) की टीम से आगे विस्तार से चर्चा करेगी। आईसीडीएस निदेशक वासुदेव मालावत, पोषण एवं स्कूल पोषण इकाई की एमडी एवं प्रमुख डॉ. शरीका यूनुस खान, अनुसंधान प्रमुख परमज्योति चट्टोपाध्याय की उपस्थिति में उक्त चर्चा बैठक में उपस्थित रहे। उप मुख्यमंत्री तथा महिला एवं बाल विकास मंत्री एवं पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने उक्त चर्चा बैठक में राज्य के पर्यटन के क्षेत्र में किये गये विकास कार्यों की जानकारी भी दी और इसके साथ ही उन्होंने संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (भारत) की कंट्री डायरेक्टर एलिसाबेट फाउर को राजस्थान के प्रमुख पर्यटक स्थलों का भ्रमण करने का निमंत्रण भी दिया।

स्मैक सप्लायर झालावाड़ से गिरफ्तार

जयपुर। शिप्रा पथ थाना पुलिस ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक की सप्लाई करने वाले फरार मुख्य आरोपित को झालावाड़ से गिरफतार किया गया है जो पिछले तीन माह से फरार चल रहा था। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि कार की किस्त चुकाने के लिए रुपयों की आवश्यकता होने के कारण अवैध स्मैक के कारोबार में लिप्त हुआ था। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण) राजर्षि राज ने बताया कि शिप्रा पथ थाना पुलिस ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक की सप्लाई करने वाले फरार मुख्य आरोपित रमेश चन्द तंवर निवासी घाटोली जिला झालावाड़ को गिरफ्तार किया है। आरोपित से पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

होमगार्ड पुलिस लाइन का कम्पनी कमांडर रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर (कासं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) मुख्यालय की एसआईयू टीम ने गुरुवार को कार्रवाई करते हुए होमगार्ड पुलिस लाइन जयपुर में पदस्थ कम्पनी कमांडर चन्द्रशेखर शर्मा को 4000 रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया है। यह रिश्वत होमगार्ड से उसकी ड्यूटी लगाने की एवज में मांगी गई थी।

> ■ **होमगार्ड से उसकी ड्यूटी लगाने की एवज में मांगी थी रिश्वत**

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो पुलिस महानिदेशक गोविंद गुप्ता ने बताया की परिवादी ने एसीबी में शिकायत दी कि वह होमगार्ड हैं और होमगार्ड पुलिस लाइन जयपुर में पदस्थ कम्पनी कमांडर चन्द्रशेखर शर्मा उसकी ड्यूटी लगाने के एवज में पांच हजार रुपये की रिश्वत की मांग रहा है।

शिकायत के सत्यापन के पश्चात ब्यूरो की टीम की ओर से ट्रैप की कार्रवाई होमगार्ड पुलिस लाइन जयपुर में पदस्थ कम्पनी कमांडर चन्द्रशेखर शर्मा को चार हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया। एसीबी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संदीप सारस्वत के नेतृत्व में आरोपित के घर और अन्य ठिकानों पर सर्च किया जा रहा है।

किराये पर कार लेने के नाम पर धोखाधड़ी करने वाले दो बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। चित्रकूट थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए कार रेन्ट के नाम पर धोखाधड़ी करने वाले दो शातिर आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है और साथ ही ठगी की गई कार को भी बरामद किया गया है। पुलिस जांच में सामने आया कि गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ पूर्व में भी एनडीपीएस व आबकारी अधिनियम में मुकदमा दर्ज हैं। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम हनुमान प्रसाद ने बताया कि चित्रकूट थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए कार रेन्ट के नाम पर धोखाधड़ी करने वाले प्रहलाद सिंह निवासी लाडनू जिला नागौर हाल नारायण विहार जयपुर और पवन चारण निवासी चुनावट जिला गंगानगर हाल मुक्तसर पंजाब हाल मुरलीपुरा जयपुर को गिरफ्तार किया गया है और साथ ही ठगी की गई कार को भी जब्त किया गया है।

गौरतलब है कि फर्म क्रेजी कार रेन्टल प्राइवेट लिमिटेड के मालिक मोहम्मद इमरान ने मामला दर्ज करवाया था कि आरोपित प्रहलाद सिंह व पवन चारण 25 दिसम्बर 2024 को कार आई -20 को किराये से 24 घंटे के लिये लेकर गया थे। जहां कार को वापस दिनांक 26 दिसम्बर 2024 को वापस देनी थी। लेकिन प्रहलाद सिंह व पवन चारण ने पीडित को कार को वापस नही है। पीड़ित की ओर से कार को कई बार मांग की गई। लेकिन कार वापस नहीं दी तथा कार का किराया भी अभी तक नहीं दिया गया है और कार को लौटने से मना कर दिया। इसके अलावा कार में लगा जीपीएस सिस्टम भी बंद कर दिया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच पड़ताल करते हुए आरोपियों को डिटेन कर पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया गया।

प्रधानमंत्री की बिहार के नवादा में होने वाली जनसभा की तैयारियों में जुटे डॉ. सतीश पूनियां

भाजपा केंद्रीय नेतृत्व के निर्देश पर भाजपा-एनडीए विजय संकल्प को लेकर बिहार विधानसभा चुनाव में चुनाव प्रबंधन की जिम्मेदारी संभाल रहे डॉ. पूनियां

पटना। भाजपा केंद्रीय नेतृत्व के निर्देश पर भाजपा हरियाणा संगठन प्रभारी एवं भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां भाजपा-एनडीए विजय संकल्प को लेकर बिहार प्रवास पर हैं, जो बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर नवादा लोकसभा क्षेत्र की विधानसभा सीटों पर चुनाव प्रबंधन की जिम्मेदारी देख रहे है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आगामी 2 नवंबर को बिहार के नवादा में होने वाली जनसभा को लेकर सतीश पूनियां ने जनप्रतिनिधियों एवं पार्टी पदाधिकारियों के साथ सभास्थल पहुंचकर व्यवस्थाओं की जानकारी ली और इसके बाद नवादा भाजपा जिला टीम के साथ बैठक कर 2 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नवादा रैली को ऐतिहासिक बनाने को लेकर मजबूत संकल्प लिया और जन-जन की भागीदारी का आव्हान किया। बैठक में प्रदेश महामंत्री लाजवंती झा, सांसद विवेक ठाकुर, जिला अध्यक्ष अनिल मेहता, विधायक राज सिन्हा, विधान पार्षद अशोक यादव सहित पार्टी पदाधिकारी व जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

भाजपा हरियाणा संगठन प्रभारी डॉ. सतीश पूनियां ने बिहार के नवादा में भाजपा जिला टीम के साथ बैठक करके 2 नवंबर को प्रस्तावित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली की तैयारियों पर चर्चा की।

सतीश पूनियां ने मीडिया से बातचीत में कहा कि, मैं जब छात्र राजनीति में था उस समय से लेकर फिर युवा राजनीति की जिम्मेदारी से लेकर, फिर संगठन में काम करने के दौरान कई बार मुझे बिहार आने का पार्टी ने मौका दिया। बिहार को बदहाल देखा है, बिहार की कानून व्यवस्था को बिगड़ते देखा है, बिहार में सड़कों पर खड्डे देखे हैं, बिहार में एक किस्म की अराजकता थी, बिहार को हमने बदलते देखा है। आज एनडीए शासन में बिहार का व्यक्ति राशन और सुशासन इन दो मुद्दों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर भरोसा कर रहा है, केंद्र की मोदी सरकार की जितनी भी जन कल्याणकारी योजनाएं हैं उन योजनाओं को लोगों के दरवाजे तक पहुंचाने और भरोसा मजबूत करने का काम केंद्र की मोदी सरकार और राज्य की नीतीश सरकार ने किया है। उन्होंने कहा कि, जनकल्याणकारी योजनाओं से बिहार के लोगों का जीवन बदला है, इस बदलाव के लिए बिहार की जनता नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार पर भरोसा करती है और विकसित बिहार के संकल्प को मजबूती देने के लिये एक बार फिर से बिहार में भाजपा-एनडीए का शासन आएगा, यहां की जनता ने तय कर लिया है। उल्लेखनीय है कि भाजपा केंद्रीय नेतृत्व के निर्देश पर सतीश पूनियां 28 अक्टूबर से लेकर आगामी कई दिनों तक बिहार विधानसभा चुनाव में नवादा लोकसभा क्षेत्र की विधानसभा सीटों पर चुनाव प्रबंधन की जिम्मेदारी सम्भाल रहे हैं।

> ■ **भाजपा केंद्रीय नेतृत्व के निर्देश पर भाजपा-एनडीए विजय संकल्प को लेकर बिहार विधानसभा चुनाव में चुनाव प्रबंधन की जिम्मेदारी संभाल रहे डॉ. पूनियां**

देश के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं युवा : देवनानी

जयपुर । भारत के लौहपुरुष, स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री एवं राष्ट्र की एकता के शिल्पकार सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने उन्हें नमन करते हुए कहा कि सरदार पटेल ने जिस अदम्य साहस, संगठन क्षमता और दृढ़ संकल्प के बल पर बिखरे हुए भारत को एक सूत्र में पिरोया, वह युगों-युगों तक प्रेरणास्त्रोत रहेगा। देवनानी ने कहा कि सरदार पटेल केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि भारत की अखंडता और स्वाभिमान के प्रतीक हैं। उन्होंने अपने कर्म, विचार और राष्ट्रिनष्ठा से यह सिद्ध किया कि जब देशहित सर्वोपरि हो, तब कोई भी कठिनाई असंभव नहीं रहती।

कचरा बीनने के बहाने बिजनेसमैन के घर में घुसे शातिर नकबजन

जयपुर। मोती डूंगरी इलाके में शातिर नकबजन ने दिन-दहाड़े कचरा बीनने के बहाने सूने मकान की रैकी की ओर और घर के गार्डन में लगी पानी की मोटर चोरी कर फरार हो गया। पीड़ित को वारदात की जानकारी सीसीटीवी फुटेज देखने पर चली। सूचना पर मौके पर पहुंची एसएमएस थाना पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर अज्ञात नकबजन के खिलाफ चोरी का मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है।

पुलिस ने बताया की थाना इलाके में स्थित पुरंदरजी का बाग निवासी मनीष भारद्वाज 27 अक्टूबर को परिवार सहित घर से बाहर गए हुए थे। तभी दिन -दहाड़े चोरी एक शातिर नकबजन कचरा बीनते हुए दीवार कूद कर घर के अंदर घुसा और गार्डन में लगी पानी की मोटर चोरी कर फरार हो गया। देर रात पीड़ित घर पर लौटा तो पानी की मोटर गायब मिली। जिसके बाद पीड़ित ने सीसीटीवी फुटेज खंगाले। जिसमें अज्ञात नकबजन पानी की मोटर चोरी कर दीवार कूद कर फरार होता हुआ दिखाई दिया। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत चोरी का मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरु कर दी है।

> ■ **सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी**

उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने ध्वजारोहण कर अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर मेले का शुभारंभ किया

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने विदेशी सैलानियों व छात्राओं के साथ नृत्य किया

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने नगाड़ा वादक नाथूराम सोलंकी के साथ नगाड़ा बजाया।

पुष्कर में देर शाम को ब्रह्म सरोवर के 52 घाटों पर सवा लाख दीपदान किया गया।

- **अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नगाड़ा वादक नाथूराम सोलंकी ने 101 नगाड़ा वादकों के साथ एक साथ नगाड़ों पर थाप दी**
- **दीयों की झिलमिल रोशनी से जगमगाए ब्रह्म सरोवर के घाट, नगाड़ा वादकों ने दी प्रस्तुति**

पुष्कर/अजमेर, (निसं)। राजस्थान की लोक संस्कृति के बीच गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय मैत्री और अतिथि देवो भव की भावना को भी जीवंत करते हुए हल्की बूंदाबांदी के बीच डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने मेला मैदान में विधिवत झंडारोहण कर विश्व प्रसिद्ध पुष्कर मेला-2025 का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मेला मैदान में बालिकाओं द्वारा दी गई नृत्य की प्रस्तुति के दौरान डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने छात्राओं के साथ नृत्य भी किया। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नगाड़ा वादक नाथूराम सोलंकी ने 101 नगाड़ा वादकों के साथ एक साथ नगाड़ों पर थाप दी। पुष्कर के इतिहास में पहली बार इस तरह का आयोजन हुआ। प्रशासन की ओर से इस अनूठी प्रस्तुति को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज कराने की तैयारी भी की गई। मेला मैदान में दिनभर रोमांच और संस्कृति का संगम देखने को मिलेगा। इस दौरान जल संसाधन मंत्री सुरेश रावत, कलेक्टर लोक बंधु, एसपी वंदिता राणा सहित जनप्रतिनिधि, विभागीय अधिकारी व पुलिस के जवान मौजूद रहे।

मेला ग्राउंड में फुटबॉल मैच शुरू हो चुका है। प्रशासन की ओर से सिर्फ एक ही मैच आयोजित कराया, इसमें देसी और विदेशी टूरिस्ट्स हिस्सा ले रहे हैं। अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस और इंग्लैंड के खिलाड़ी विदेशी पर्यटकों की टीम में हैं। मेला ग्राउंड में खेला गया फुटबॉल मैच देसी पर्यटकों की टीम ने 2-1 से जीत लिया। उन्होंने यूएस, जर्मनी, फ्रांस और यूके के पर्यटकों की विदेशी टीम को हराया।

पुष्कर सरोवर पर हुआ दीपदान :-तीर्थ नगरी पुष्कर में धार्मिक मेले पर ब्रह्मा मंदिर में महाआरती हुई, इसके साथ ही धार्मिक पदयात्रा निकाली गई तथा देर शाम को ब्रह्म सरोवर के 52 घाटों पर सवा लाख दीपदान किया, जिससे पूरा पुष्कर सरोवर दीपों की झिलमिल रोशनी से जगमगा उठा। घाटों पर रंग-बिरंगी रंगोलियां बनाकर सजावट की गई। धार्मिक मेले को लेकर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पुष्कर पहुंचे।

इस दौरान जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, निवर्तमान परिषद अध्यक्ष कमल पाठक, अरुण पाराशर, शिव स्वरूप महर्षि, लक्ष्मी पाराशर, मुकेश कुमावत, रोहन बाकोलिया, सुमन कुमावत सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे। दिया कुमारी को पूजा-अर्चना प्रसिद्ध पंडित कैलाश नाथ ने कराई। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने पुष्कर मेले के लिए 70 लाख का जो बजट था उसको बढ़कर एक करोड़ करने की घोषणा मंच से की। साथ ही उन्होंने कहा कि आगामी 19 नवंबर से प्रत्येक संभाग में घूमर नृत्य का आयोजन किया जाएगा उन्होंने बताया कि हमारी संस्कृति है हमारी धरोहर है इसको संभाले रखना बहुत जरूरी है ।

वर्ल्ड रिकॉर्ड में नगाड़ा बजाने वाली निकोल नामक विदेशी युवती ने बताया कि पुष्कर मेला बहुत ही सुंदर है। यहां प्रत्येक व्यक्ति को आकर अपनी आंखों से इस मेले को देखना चाहिए। साथ ही उसने बताया कि नगाड़ा बजाकर अपने आप को बहुत ही भाग्यशाली समझ रही है। पर्यटनविभाग के प्रद्युम्न सिंह ने बताया कि आज से ही सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू हो गए हैं। प्रत्येक दिन अलग अलग कलाकारों द्वारा शाम को कार्यक्रम पेश किए जायेंगे।

रिश्वत लेते पटवारी व दलाल गिरफ्तार

एसीबी की टीम ने पटवारी व दलाल को गिरफ्तार किया।

बीकानेर, (निसं)। जिले के पांचू गांव में एसीबी टीम ने पटवारी को रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया है। इसके साथ ही ई-मित्र संचालक दलाल को भी टीम ने गिरफ्तार किया है।

मामला जिले के पांचू हल्का का है। यहां तैनात पटवारी अंबालाल मीणा ने मुआवजा के नाम पर चार हजार रुपए की रिश्वत मांगी थी। इस पर एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर बीकानेर चौकी की एसयू यूनिट ने गुरुवार को कार्रवाई करते हुए पटवारी अम्बालाल मीणा और दलाल श्री राम (महादेव ई-मित्र) दोनों को रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि इस मामले को लेकर शिकायत मिली थी। इसमें परिवादी के के पांचू स्थित कृषि भूमि में बिजली के टावर के नीचे आई भूमि के मुआवजे की चौथी किश्त जारी होनी थी। करीब 50 हजार रुपए के लिए पांचू पटवारी को रिपोर्ट तैयार करनी थी। इसके लिए चार हजार रुपए मांगे। ये रुपए ई-मित्र संचालक श्रीराम जाट को देने के लिए कहा गया। इस पर एसीबी के उप महानिरीक्षक पुलिस बीकानेर भुवन भूषण यादव के सुपरविजन में बीकानेर एसयू एएसपी आशीष कुमार की टीम ने दोनों को ट्रेप पर रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव के सुपरविजन में आरोपियों से पूछताछ जारी है।

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- अ.अ./विद्युत-II/राजकाज 18494416 दिनांक :- 28/10/2025

ई-बिड सूचना संख्या :- जोन विद्युत-II/14/2025-26

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत निविदादाताओं से मुहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती है। इन कार्यो की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट **www.jodhpurjda.org, www.eproc.rajasthan.gov.in** एवं **www.sppp.raj.nic.in** पर देखी जा सकती है।

NIB CODE :- JOD2526A0167
UBN/TENDER ID :- JOD2526WSOB00360
कार्य की अधिकतम अनुमानित लागत – रूपये 35,88,272/–

राज.संवाद/सी/25/12887 अधिशाषी अभियंता (विद्युत-II)

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण, राजस्थान

राजीव गांधी भवन, दशहरा मैदान, सी.ए.डी. सर्किल, कोटा

Email : nnksouth@gmail.com, Website : www.urban.rajasthan.gov.in/nnks, Ph.: 0744-2502142

क्रमांक :- ननिको/दक्षिण/निर्माण/2025/947 - 961 दिनांक :- 17/10/2025

ई-निविदा सूचना संख्या : 48/2025-26

नगर निगम कोटा (उत्तर/दक्षिण) द्वारा विभिन्न अभियान्त्रिकी विभागों "A" एवं "AA" श्रेणी एवं नगर निगम कोटा (उत्तर/दक्षिण) में उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निम्नांकित कार्यो हेतु कुल राशि 47.62 लाख रूपये की ऑन लाईन निविदायें दिनांक 24.10.2025 से दिनांक 03.11.2025 तक आमन्त्रित की जाती हैं। टेन्डर बेचे जाने, प्राप्त करने की तिथि व निविदा की शर्ते इत्यादि नगर निगम की वेबसाईट **www.urban.rajasthan.gov.in/nnks, http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in** पर देखी जा सकती हैं।

क्र. सं.	कार्य का नाम	अनु. लागत (लाखों में)
1	नगर निगम कोटा दक्षिण के छावनी-कोटड़ी के समस्त वार्डो में निर्माण कार्य करवाये जाने बाबत्।	47.62

NIB Code No. DLB2526A7332
UBN No. DLB2526WSRC22235 अधिशाषी अभियन्ता नगर निगम कोटा दक्षिण

राज.संवाद/सी/25/12925

कार्यालय नगर परिषद, करौली (राज.)

फोन न0 07464-294024, ई-मेल आईडी np.karauli@yahoo.com, website - www.npkarauli.in

क्रमांक :- न0परि0क0/निविदा/2025/3331 दिनांक :- 27/10/2025

संशोधित ई-निविदा सूचना

नगरपरिषद करौली द्वारा आमंत्रित निविदा सूचना संख्या 3062 दिनांक : 08.10.2025 की तिथिओं में निम्न प्रकार संशोधन किया जाता है।

क्र. सं.	तिथिओं का विवरण	पूर्व की तिथि	संशोधित तिथि
1	ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	27.10.2025 समय 6:00 पीएम तक	03.11.2025 समय 6:00 पीएम तक
2	निविदा खोलने की तिथि व समय	29.10.2025 समय 1:30 पीएम तक	04.11.2025 समय 02:00 पीएम तक

अतिरिक्त शर्ते :-
1. समान प्रकृति के कार्य का अनुभव प्रमाण-पत्र अथवा कार्य पूर्णता प्रमाण-पत्र अथवा कार्यादेश संलग्न करना अनिवार्य होगा।
2. निविदा संबंधी कोई भी दस्तावेज भौतिक रूप से जमा कराया जाना अनिवार्य नही है। शर्तो के अनुसार दस्तावेजों एवं शुल्क को ऑनलाईन ही जमा करायें।

नोट :- निविदा में वर्णित शेष शर्ते यथावत रहेंगी। आयुक्त नगर परिषद करौली

राज.संवाद/सी/25/12928

फतेहपुर में न्यूनतम पारा 17 डिग्री दर्ज

सीकर, (निसं)। प्रदेश में एक्टिव वेस्टर्न डिस्टरबेंस के बीच गुरुवार सुबह से सीकर में बादल छाए रहे। इस बीच सीकर में हल्की धुंध भी रही। हालांकि न्यूनतम तापमान 20 डिग्री के करीब रहने के चलते गुलाबी ठंडक से लोगों को थोड़ी राहत मिली है।

सीकर में अभी 4 से 5 दिन ऐसा ही मौसम रह सकता है। सीकर के कृषि अनुसंधान केंद्र फतेहपुर पर सुबह न्यूनतम तापमान 17 डिग्री दर्ज किया गया। इससे पहले यहां बुधवार को न्यूनतम तापमान 15.5 और अधिकतम तापमान 29.8 डिग्री दर्ज किया गया था। बुधवार को भी ज्यादातर समय मौसम साफ रहा था। मौसम एक्सपर्ट्स का मानना है कि फिलहाल शेखावाटी एरिया में अगले 4 से 5 दिन मौसम ड्राई रहने का अनुमान है। इस दौरान यहां तापमान में ज्यादा खास बदलाव नहीं होगा। बारिश होने की संभावना भी बेहद कम है। जयपुर मौसम केंद्र के निदेशक राधेश्याम शर्मा के अनुसार सीकर में 2 नवंबर तक बारिश का कोई भी अलर्ट नहीं है। यहां पर मौसम ड्राई रहेगा। तापमान में भी ज्यादा बदलाव नहीं होगा, जबकि कोटा और उदयपुर संभाग में 4 नवंबर तक बारिश की गतिविधियां जारी रह सकती है।

ट्रेड फेयर में दोस्तों के साथ घूमने गए युवक की छुरा घोंपकर हत्या

- **दोस्तों का कुछ लोगों से झगड़ा होने पर बीच-बचाव कर रहा था युवक, दूसरे पक्ष के युवक ने उसके सीने बर्फ काटने वाला छुरा घोंप दिया**
- **परिजन और ग्रामीण हॉस्पिटल पहुंचे, आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरने पर बैठ गए**
- **परिजन और ग्रामीणों ने आरोपियों के घर पर बुलडोजर चलाने की मांग की, 5 दिन का समय दिया**

अलवर, (निसं)। अलवर में ट्रेड फेयर में दोस्तों के साथ घूमने गए युवक की छुरा घोंपकर हत्या कर दी गई। युवक के दोस्तों का कुछ लोगों से झगड़ा हो गया। वह बीच-बचाव कर रहा था, इसी दौरान दूसरे पक्ष के युवक ने उसके सीने बर्फ काटने वाला छुरा घोंप दिया। युवक को घायल अवस्था में जिला हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना गोविंदगढ़ में रेलवे फाटक के पास बुधवार रात करीब आठ बजे की है। सूचना पर युवक के परिजन और ग्रामीण हॉस्पिटल पहुंचे, आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरने पर बैठ गए। आरोपियों के घर पर बुलडोजर चलाने की मांग करने लगे। पुलिस-प्रशासन की समझाइश के बाद परिजनों ने धरना खत्म कर दिया और शव को हॉस्पिटल से लेकर गए।

अलवर मेव बोर्डिंग के पूर्व सदर शेर मोहम्मद ने कहा कि पुलिस प्रशासन ने आश्वासन दिया है कि अगर आरोपियों के घरों पर अवैध अतिक्रमण मिलता है तो हटाएंगे। 4 नवंबर तक आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं की गई तो हम अनिश्चितकालीन धरने पर बैठ जाएंगे।

पुलिस ने बताया कि गोविंदगढ़ क्षेत्र के खेड़ी बहादुर गांव निवासी वकार (20) पुत्र फकरुद्दीन सेकंड ईयर का छात्र था। वह अपने दोस्त तालीम, अरशद और बरकत के साथ गोविंदगढ़ में लगे ट्रेड फेयर में घूमने गया था। वहां मोमोज की दुकान पर तालीम का छैल बिहारी से झगड़ा हो गया। छैलबिहारी के साथ राजेश, रविंद्र, बलदेव, केदार, खेमू व रवि सहित तीन चार अन्य युवक भी थे। वकार ने बीच-बचाव करने लगा। इसी दौरान छैलबिहारी ने छुरा मार दिया था, जिससे वकार लहूलुहान होकर गिर गया। उसे गोविंदगढ़ अस्पताल ले जाया गया, जहां से उसे अलवर रेफर कर दिया जहां उसकी मौत हो गई।

नाबालिग के मना करने पर भी अश्लील वीडियो वायरल किया

- **दो युवको के खिलाफ पॉक्सो के तहत मामला दर्ज, आठ महीने पहले दुष्कर्म किया था**

श्रीडूंगरगढ़, (निसं)। 14 वर्षीय नाबालिग से दुष्कर्म और अश्लील वीडियो वायरल करने के मामले में दो आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पीड़िता के पिता के बयान के आधार पर पुलिस ने पॉक्सो एक्ट, सामूहिक दुष्कर्म सहित विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पिता ने थाने में रिपोर्ट देते हुए बताया कि करीब आठ माह पूर्व उसी के मोहल्ले के दो आरोपी युवक रात को 11 बजे मोटरसाइकिल पर लड़की को बहलाकर ले गए। आरोपियों ने पीड़िता के शोर मचाने पर जान से मारने की धमकी दी व रातभर एक कमरे में बंद रखा। दोनों ने उसके साथ जबरदस्ती दुष्कर्म किया और उसका अश्लील वीडियो बना लिया। उन्होंने आगे बताया कि आरोपी उसकी पुत्री को डरा-धमका कर सुबह पांच बजे घर के आगे छोड़कर चले गए। बदनामी के डर से उसने कोई कार्रवाई नहीं की और पंच पंचायती में आरोपी युवकों ने गलती मानते हुए नाबालिग से कोई संबंध नहीं रखने व वीडियो नहीं बनाने की बात कही। 21 अक्टूबर की सुबह दोनों आरोपी उसके घर आए और नाबालिग को शारीरिक संबंध कायम रखने की धमकी देते हुए उसके अश्लील वीडियो वायरल करने की बात कही। नाबालिग के मना करने पर 22 अक्टूबर को आरोपियों ने नाबालिग के अश्लील वीडियो वायरल कर दिए।

शराब परिवहन मामले में दो गिरफ्तार

टोक, (निसं)। थानाधिकारी निवाई सदर के नेतृत्व गठित थाना विशेष टीम द्वारा लोकल व माईनर एक्ट में कार्यवाही करते हुए अवैध देशी शराब परिवहन मामले में आरोपी लखन कुमार पुत्र मांगीलाल वाल्मिकी निवासी हीरा चौकी पुरानी टोंक को गिरफ्तार किया। इसी प्रकार निवाई सदर की टीम ने अवैध देशी हथकड़ शराब परिवहन मामले में आरोपी मंगल उर्फ मंगल्या मोग्या पुत्र पुसाराम मोग्या निवासी बिजोलाय थाना नरैना जिला जयपुर हाल निवासी चनानी थाना निवाई सदर को गिरफ्तार किया। आरोपी थाना निवाई सदर पर पूर्व में दर्ज प्रकरण में फरार चल रहा था। पुलिस दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

प्रिंसिपल ट्रांसफर लिस्ट जल्द ही जारी हो सकती है!

बीकानेर, (निसं)। प्रदेशभर के सीनियर सैकंडरी स्कूल में प्रिंसिपल ट्रांसफर लिस्ट जल्द ही जारी हो सकती है। इसके लिए 500 से ज्यादा प्रिंसिपल की लिस्ट तैयार हो चुकी है और मुख्यमंत्री कार्यालय से हरी झंडी मिलने का इंतजार किया जा रहा है।

पूर्व में जारी प्रिंसिपल ट्रांसफर लिस्ट के कुछ संशोधन भी इस लिस्ट में होंगे। माध्यमिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट जयपुर पहुंच गए हैं। राज्य में 4 हजार से ज्यादा प्रिंसिपल के ट्रांसफर करने के बाद से अब तक भी प्रिंसिपल के ट्रांसफर ऑर्डर में संशोधन नहीं किया गया है। ऐसे में अब एक साथ सभी संशोधन हो रहे हैं। विधायकों की सिफारिश पर ही पहले ट्रांसफर हुए थे और अब संशोधन भी उनकी सिफारिश पर हो रहे हैं। खास बात ये है कि ट्रांसफर लिस्ट पर इस बार भी मुख्यमंत्री कार्यालय की पूरी नजर है। शिक्षा मंत्री कार्यालय और निदेशालय से तैयार हुई ट्रांसफर लिस्ट में काफी कटौती की गई है। मुख्यमंत्री कार्यालय फिलहाल ज्यादा छेड़छाड़ नहीं करना चाहता। वहीं शिक्षा मंत्री कार्यालय से तैयार हो रही लिस्ट में 1 हजार प्रिंसिपल को इधर-उधर करने की तैयारी है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय को अब मुख्यमंत्री कार्यालय से इस लिस्ट को स्वीकृति मिलने का इंतजार किया जा रहा है। ये लिस्ट एक-दो दिन में भी जारी हो सकती है और किसी कारण से रुक भी सकती है। निदेशालय स्तर पर सिर्फ लिस्ट को पुटअप करने और आदेश जारी करने का काम रहा है। प्रिंसिपल के साथ ही मंत्रालयिक कर्मचारियों और ग्रेड सेकंड के ट्रांसफर भी हो सकते हैं। ज्वाइंट डायरेक्टर ऑफिस से टीम को जयपुर बुलाया गया है। बीकानेर संभाग के साथ ही अन्य संभागों के ज्वाइंट डायरेक्टर और उनकी टीम जयपुर पहुंच रही है। ट्रांसफर के लिए चल रही मशक्कत पर अधिकारी कुछ भी बोलने के लिए तैयार नहीं है।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट से ट्रांसफर का सवाल करने पर उन्होंने कहा कि सरकार जब भी आदेश देगी, तभी ट्रांसफर हो जाएंगे।

VARDHMAN MAHAVEER OPEN UNIVERSITY

Rawatbhata Road, Kota -324021
Examination Department (RSCIT CELL)

No. :- VMOU/Exam/RSCIT/2025/1155 Date :- 29/10/2025

Notice Inviting E-Tender for Printing of Certificate

NIB No. 14 Date 28.10.2025

University invites e-tender from the registered & reputed Printers for "Printing of Certificates in four colour with at least 5 security features on white Maplitho Paper Size A4 120 GSM" for University. The Estimated cost of the tender is Rs. 30.00 lacs. Tender will be available online from 31-10-2025 upto 14-11-2025 on **https://eproc.rajasthan.gov.in, www.vmou.ac.in, and www.sppp.raj.nic.in**. Last date to fill tender online is 14-11-2025. Technical bid will be opened online on 15-11-2025. The bidders must send original D.D. of Tender form fees Rs. 500/-, processing fees Rs. 500/- and Bid Security 60000/- last upto 14-11-2025 upto 04:00 pm at the office of the undersigned. For further details, kindly visit websites **www.vmou.ac.in, https://eproc.rajasthan.gov.in and www.sppp.raj.nic.in** {UBN Number: VMU2526SLOB00017}. If any corrigendum generated/occurred, then it will be uploaded only on the above mentioned websites.

Raj.Samwad/C/25/12915 Controller of Examinations

महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में इंटीग्रेटेड फायरिंग एक्सरसाइज का अभ्यास किया

- **यह अभ्यास अग्रिपथ पर अजेय भारत और नेटवर्क सेंट्रिक वॉरफेयर का प्रदर्शन था**
- **अभ्यास के दौरान सैनिकों ने फायर एंड मूव की रणनीति का अद्भुत प्रदर्शन किया**

बीकानेर, (निसं)। यहां महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में इंटीग्रेटेड फायरिंग एक्सरसाइज की प्रैक्टिस की गई। यह अभ्यास अग्रिपथ पर अजेय भारत और नेटवर्क सेंट्रिक वॉरफेयर का प्रदर्शन था। इसमें थल और वायु सेना ने आपसी तालमेल दिखाया, जहां ड्रोन उड़ाकर दुश्मन के ठिकानों का पता लगाया गया तो वहीं हवा और जमीन से रुसी टैंक और मिनी गन से गोला बारूद बरसाया गया। अभ्यास में भारत के डिजिटल फायरिंग सिस्टम को भी प्रदर्शित किया गया। इसमें दुश्मन के ठिकानों पर टारगेट सेट कर सटीक फायरिंग की गई। भारतीय सैन्य बलों का समन्वित शक्ति प्रदर्शन करते हुए वास्तविक युद्ध जैसा अभ्यास किया गया।

इस अभ्यास में साऊथ वेस्टर्न कमांड के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ लेफ्टिनेंट जनरल मंजिंदर सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। जानकारी के अनुसार, इस अभ्यास में फायरिंग डेमोंस्ट्रेशन के साथ-साथ मॉडर्न वॉर, आपसी समन्वय और सटीक मारक क्षमता को दिखाना था। थल और वायु सेना के जवानों ने एकजुट होकर अपने हथियारों, वाहनों और तोपखाने का प्रदर्शन किया। यूनिट्स ने एक साथ आपसी तालमेल बैठाकर दुश्मन के ठिकाने उड़ाए।

बीएमपी-2- जो युद्ध क्षेत्र में पैदल सैनिकों को कवच सुरक्षा प्रदान करता है और चलती स्थिति में भी फायरिंग करने में सक्षम है। टी-72 टैंक- भारतीय सेना की आर्मर्ड रेजिमेंट का गर्व, जिसने दुश्मन की काल्पनिक पोजीशन पर सटीक फायरिंग कर अपनी घातक क्षमता का प्रदर्शन किया। 130 मिमी मीडियम गन-जिसने लंबी दूरी से लक्ष्यों को नेस्तनाबूद करने की सटीकता दिखाई, यह भारतीय तोपखाने की रीढ़ मानी जाती है।

अभ्यास के दौरान सैनिकों ने फायर एंड मूव की रणनीति का अद्भुत प्रदर्शन किया। टैंकों और पैदल यूनिटों ने एक-दूसरे के समर्थन में लगातार फायरिंग की, जबकि आर्टिलरी यूनिट्स ने दूर से लक्ष्यों पर सटीक निशाने साधे। इससे फायरिंग के साथ-साथ सैनिक आगे बढ़ते रहे और टारगेट को भेद दिया। वायु और थल सेनाओं ने आपसी तालमेल का प्रदर्शन कर एक दूसरे को सूचना दी और तेजी के साथ दुश्मन के ठिकानों पर फायर किए।

लेफ्टिनेंट जनरल मंजिंदर सिंह ने कहा कि भारतीय सेना की ताकत केवल उसके हथियारों में नहीं, बल्कि उसके प्रशिक्षण, अनुशासन और टीम वर्क में है। महाजन की रेत में जो आग और जोश दिखाई दे रहा है, वही हमारी सीमाओं की रक्षा की सबसे बड़ी गारंटी है। यह एक्सरसाइज दक्षिण पश्चिमी कमान की "ऑपरेशनल रेडीनेस" का सशक्त उदाहरण है और यह दर्शाता है कि सेना किसी भी समय, किसी भी परिस्थिति में मिशन को पूरा करने के लिए तैयार है।

एक्सरसाइज के दौरान युवा सैनिकों और नई तकनीक के संयोजन ने भारत के "नए युग के युद्ध दर्शन" की झलक दिखाई। डिजिटल फायरिंग सिस्टम, कम्युनिकेशन नेटवर्क, और बैटलफील्ड सर्विलांस इंटेग्रेशन के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि भारतीय सेना अब "नेटवर्क सेंट्रिक वॉरफेयर" की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है।

अज्ञात लोगों ने डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा खंडित की

सदर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों को शांत कराया

गंगापुर सिटी, (निसं)। सलारपुर गांव में अज्ञात लोगों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा खंडित कर दी। गत दिवस शाम हुई इस घटना के बाद ग्रामीणों में भारी आक्रोश है।

सूचना मिलने पर सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। यह घटना गत दिवस देर शाम की बताई जा रही है। गुरुवार सुबह जब ग्रामीणों ने प्रतिमा को खंडित देखा तो गांव में हड़कंप मच गया। बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर जमा हो गए और घटना पर नाराजगी व्यक्त की। ग्रामीणों ने इस कृत्य को समाज में सांप्रदायिक और सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने की सोची-समझी साजिश बताया।

उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ असामाजिक तत्व जानबूझकर ऐसी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। सदर थाना पुलिस ने ग्रामीणों को शांत कराया और खंडित प्रतिमा को जल्द ही पुनः स्थापित करने का आश्वासन दिया। पुलिस अधिकारियों ने ग्रामीणों से शांति बनाए रखने की अपील की। ग्रामीणों ने दोषियों की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि 24 घंटे के भीतर आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया गया, तो वे गंगापुर सिटी-सवाई माधोपुर मार्ग को जाम कर देंगे। ग्रामीणों ने कहा कि ऐसी स्थिति में प्रशासन जिम्मेदार होगा। फिलहाल, पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और आरोपियों की तलाश में जुट गई है। प्रशासन भी स्थिति पर कड़ी नजर रख रहा है ताकि किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके।

MBM UNIVERSITY, JODHPUR

No. : MBMU/OIC/2025-26/958 Date :- 27/10/2025

NOTICE INVITING BID

Bids are invited from interested eligible and experienced vendors/suppliers for the supply/provision of the following items/services at MBM University, Jodhpur. All other particulars of the bid may be visited on the portal **sppp.rajasthan.gov.in, eproc.rajasthan.gov.in and www.mbm.ac.in.**

1. Bids vide UBN No: MBM2526GLOB00060 for "BIO SIGNAL PROCESSING LAB EQUIPMENT for CSE Department" in MBM University, Jodhpur with estimated amount ₹15.00 lakh and last date of bid submission 05/11/2025 12:00 Noon.
2. Bids vide UBN No: MBM2526GSRC00056 for "E-Tender for "Rate contract for Stationary Items" in MBM University, Jodhpur. with estimated amount ₹10.00 Lakhs and last date of bid submission 05/11/2025 12:00 Noon.
3. Bids vide UBN No: MBM2526SLOB00057 for "Cleaning Hostel Campus & Academic Campus" at M B M University, Jodhpur. with estimated amount 158.00 Lakhs and last date of bid submission 15/11/2025, 12:00 Noon.
4. Bids vide UBN No: MBM2526GLOB00061 for "Furniture for Hostels, CSE Department and Examination Hall" at M B M University, Jodhpur. with estimated amount 42.60 Lakhs and last date of bid submission 05/11/2025 12:00 Noon.
5. Bids vide UBN No: MBM2526GSLB00063 for "Interacting & Non- Interacting System for Chemical Department" at M B M University, Jodhpur. with estimated amount 01.50 Lakhs and last date of bid submission 01/11/2025 12:00 Noon.
6. Bids vide UBN No: MBM2526GSLB00064 for "Air Conditioner for 5G Lab" at M B M University, Jodhpur. with estimated amount 01.25 Lakhs and last date of bid submission 01/11/2025 12:00 Noon.
7. Bids vide UBN No: MBM2526SSOB00062 for "Services Requires of Manufacturing Unit/ Factory on Lease/Rent Basis for Research Project for blocking making" at M B M University, Jodhpur. with estimated amount 07.20 Lakhs and last date of bid submission 01/11/2025 12:00 Noon.
8. Bids vide UBN No: MBM2526SLOB00065 for "Mess running service in all Boys Hostel" at M B M University, Jodhpur. with estimated amount 354.00 Lakhs and last date of bid submission 18/11/2025 12:00 Noon.
9. Bids vide UBN No: MBM2526SLOB00066 for "Mess running service in all Girls Hostel" at M B M University, Jodhpur. with estimated amount 290.00 Lakhs and last date of bid submission 18/11/2025 12:00 Noon.

Raj.Samwad/C/25/12916 OIC-Central Store

‘जयपुर के सुगम यातायात प्रबंधन के लिए सांगानेर नए मॉडल के रूप में विकसित हो’

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सांगानेर में विशेष कार्ययोजना के साथ सुविधाएं विकसित करने के निर्देश दिए

- सड़क एवं भवन निर्माण की गुणवत्ता में कोई समझौता नहीं होगा, प्रदेशभर में चलेगा सघन निरीक्षण अभियान : मुख्यमंत्री

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि सांगानेर क्षेत्र जयपुर शहर का एक अहम हिस्सा है और यह क्षेत्र शहर के विस्तार का केंद्र भी बन रहा है। इसलिए पूरे शहर के लिए सुगम यातायात प्रबंधन की दिशा में सांगानेर क्षेत्र में विशेष कार्ययोजना के साथ सुविधाएं विकसित की जाए ताकि यह स्वच्छ, सुंदर और आधुनिक मॉडल के रूप में उभर सकें।

शर्मा गुरुवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में सांगानेर क्षेत्र के सर्किल निर्माण एवं सौन्दर्यकरण कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि आपसी समन्वय से कार्य करते हुए विकास कार्यों में तेजी लाएं एवं इन कार्यों में गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरुवार को अधिकारियों की बैठक लेकर सांगानेर क्षेत्र के सर्किल निर्माण और सौन्दर्यकरण कार्यों की समीक्षा की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वन्दे मातरम् रोड पर स्थित सर्किलों के सौन्दर्यकरण के कार्य स्वतंत्रता, संविधान एवं विकसित भारत की थीम के आधार पर किए जाए ताकि इससे आमजन में जागरूकता एवं गर्व की भावना विकसित हो सके। उन्होंने न्यू सांगानेर रोड सहित अन्य मार्गों के चौराहों पर भी सौन्दर्यकरण तथा पौधरोपण के कार्य करवाने के निर्देश दिए। शर्मा ने बैठक में कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में भवन एवं सड़क निर्माण मरम्मत कार्यों में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सघन निरीक्षण अभियान संचालित करने जा रही है। इस अभियान के अन्तर्गत निर्माण से संबंधित कार्यों की मॉनिटरिंग के लिए निरीक्षण समितियों का गठन करने के निर्देश दिए गए हैं।

उन्होंने कहा कि सड़क एवं अन्य निर्माण कार्यों में गुणवत्ता में किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी तथा लापरवाही बरतने वालों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। बैठक में मुख्यमंत्री कार्यालय, वित्त विभाग एवं जयपुर विकास प्राधिकरण सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एकता मार्च का शुभारंभ आज

- जयपुर के गांधी सर्किल पर शुक्रवार प्रातः 6 बजे होगा आयोजन
- 25 नवंबर तक प्रदेश के सभी जिलों में होंगी पदयात्राएं

जयपुर (कासं)। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य पर 31 अक्टूबर को प्रात: 6 बजे जयपुर के गांधी सर्किल से एकता मार्च का भव्य शुभारंभ किया जाएगा। एकता मार्च गांधी सर्किल से बिड़ला मंदिर, रामबाग, अंबेडकर सर्किल होते हुए अमर जवान ज्योति पहुंचेगी।

इस पदयात्रा में विशिष्टजन, प्रदेश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थी, एनएसएस, एनसीसी, युवा लीडर, पुलिस, आरएसी, होमगार्ड, विभिन्न कर्मचारी संघ, एनजीओ, राजकीय कार्मिकों सहित बड़ी संख्या में आमजन भाग लेंगे। देशभर में गत 6 अक्टूबर को सरदार150-यूनिटी मार्च अभियान शुरू किया है। 2 माह तक चलने वाले इस राष्ट्रीय अभियान का समापन आगामी 6 दिसम्बर को होगा।

इस अभियान का लक्ष्य इसे पूर्ण जन भागीदारी से संचालित कर देशवासियों विशेषकर युवाओं को सरदार पटेल की विरासत के बारे में जागरूक कर विरासत के प्रति व्यक्तिगत और सामूहिक कृतज्ञता अर्पित करने, उनमें राष्ट्रीय एकता और देश सेवा की भावना को अधिक विकसित करना है।

31 अक्टूबर से 25 नवम्बर तक जिला स्तरीय पदयात्राएं आयोजित होंगी। 26 नवम्बर को सरदार पटेल की जन्म स्थली करमसाड से 150 किमी लम्बी पदयात्रा शुरू होगी। इस पदयात्रा के 6 दिसम्बर को एकता नगर(स्टेच्यू ऑफ यूनिटी) पहुंचने के साथ ही अभियान का समापन होगा।

यह अभियान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने में महत्वपूर्ण कड़ी है। नागरिकों को पदयात्रा, प्रतियोगिता आदि पहल के माध्यम से इस अभियान से जोड़ा जा रहा है। यूनिटी मार्च सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के सम्मान में एक राष्ट्रव्यापी पहल है। यह एक भारत- श्रेष्ठ भारत के घटक के रूप में देश को एकजुट करने में सरदार पटेल की अद्वितीय भूमिका का प्रतीक है, यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित और आत्मनिर्भर भारत के मिशन की कड़ी है। इस अभियान में युवाओं की बेहतर भागीदारी के लिए सरदार150 यंग लीडर्स क्विज, सरदार150 रील कम्पीटिशन और सरदार150 निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। पदयात्रा के साथ-साथ, जिलों में विकासात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें जल निकायों में स्वच्छता अभियान, "सरदार उपवन" पहल के तहत पौधारोपण, महिला कल्याण शिविर, योग और स्वास्थ्य शिविर और "वोकल फॉर लोकल" अभियान शामिल हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य नागरिकों को जुटाना, स्थानीय नवाचार का जश्न मनाना और युवा ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण में लगाना है।

जेलों के हालातों पर दौरा रिपोर्ट मांगी

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने कैदियों के कल्याण से जुड़े मामले में हाईकोर्ट प्रशासन के वकील को कहा है कि वह पूर्व में दिए आदेश की पालना में जिलों के डीजे की ओर से जेलों का दौरा कर बनाई रिपोर्ट पेश करें। इसके साथ ही अदालत ने मामले की सुनवाई एक माह बाद तय की है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस बीएस संधू की खंडपीठ ने यह आदेश प्रकरण में लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए। सुनवाई के दौरान न्यायमित्र प्रतीक कासलीवाल ने अदालत को बताया कि हाईकोर्ट ने गत 18 अगस्त को प्रदेश के सभी डीजे को कहा था कि वे स्थानीय जेलों का दौरा कर देखे की जेल सुधार को लेकर दिए अदालती आदेश की पालना हुई है या नहीं। इसके बावजूद भी तक सभी जिलों से रिपोर्ट नहीं आई है। वहीं मामले से जुडे वकील एसपी शर्मा ने कुछ डीजे की निरीक्षण को लेकर अदालत में रिपोर्ट पेश की। इस पर अदालत ने हाईकोर्ट प्रशासन के वकील को कहा कि वे सभी डीजे की रिपोर्ट मंगवा कर अदालत में पेश करें।

जे.एल.एफ. के वक्ताओं की दूसरी सूची जारी

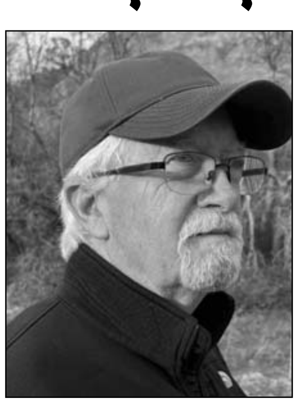

स्टीफन अल्टर

विलियम सीघार्ट

एलिस ओसवाल्ड

किरण देसाई

जयपुर। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल (जेएलएफ) दुनियाभर में पुस्तकों, विचारों और कहानी कहने के सबसे प्रतिष्ठित उत्सव के रूप में जाना जाता है। यह फेस्टिवल 15 से 19 जनवरी 2026 तक जयपुर के होटल क्लार्क्स आमेर में आयोजित होगा।

जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल (जेएलएफ) साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जगत की विविध आवाज़ों को एक मंच पर लाने की अपनी समृद्ध परंपरा को इस साल भी जारी रखेगा। इसमें शामिल होने वाले वक्ताओं की दूसरी सूची गुरूवार को जारी की गई है। इनमें सर्न जिनेवा की वरिष्ठ भौतिक विज्ञानी अर्चना शर्मा, भारत सरकार के पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमण्यन, नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री एस्तेर डुफलो और पुरस्कृत पत्रकार तान्या तलागा शामिल हैं। इसी तरह आयरलैंड के पूर्व 'ताओसीच' (प्रधानमंत्री) लियो वराडकर, प्रसिद्ध कला इतिहासकार और क्यूरेटर डेबरा डायमंड, "प्राइवेट आई" के संपादक और विख्यात व्यंग्यकार इयान हिसलोप, प्रख्यात कवि और उपन्यासकार जीत थायिल, बुकर पुरस्कार विजेता लेखक किरण देसाई तथा प्रकृति कवि एलिस ओसवाल्ड भी इस समारोह में शामिल होंगे। इसके अलावा प्रतिष्ठित वक्ताओं में कला समीक्षक और ब्रॉडकास्टर एंड्रयू ग्राहम-डिक्सन, उपन्यासकार अश्विन सांघी, पंथप्रदर्शक लेखिका कुंजांग चोडेन रोडर, इतिहासकार और जीवनी लेखक नारायणी बसु, प्रशंसित पोषण विशेषज्ञ और लेखिका ऋजुता दिवेकर, पुरस्कार विजेता लेखक और हिमालय के इतिहासकार स्टीफन अल्टर, दिव्यांगता अधिकार कार्यकर्ता और लेखिका तारिणी मोहन, साहित्यिक समर्थक और प्रकाशक विलियम सीघार्ट तथा तेलुगु नारीवादी लेखिका वोल्गा भी शरीक होंगे।

जयपुर में जुटेंगे देश-विदेश के दंत रोग विशेषज्ञ

जयपुर। ऑसियोइंटीग्रेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से द्वितीय वार्षिक सम्मेलन जयपुर में 31 अक्टूबर से 2 नवंबर तक होटल क्लार्कस आमेर में आयोजित होगा।

आयोजन सचिव डॉ. संकल्प मित्तल ने बताया कि यह सम्मेलन भारत में अब तक के सबसे बड़े दंत प्रत्यारोपण सम्मेलनों में से एक है। इसमें पूरे भारत और विदेश से लगभग 1500 दंत शल्य चिकित्सक (डेंटल सर्जन) और प्रत्यारोपण विशेषज्ञ (इंप्लांटोलॉजिस्ट) भाग ले रहे हैं। इस सम्मेलन की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें 75 से अधिक दंत प्रत्यारोपण विशेषज्ञ अपने ज्ञान और अनुभव को साझा करेंगे, जिनमें 15 से अधिक अंतरराष्ट्रीय वक्ता शामिल है। कांफ्रेंस के आयोजन अध्यक्ष डॉ. गौरव पाल सिंह ने बताया कि सम्मेलन में यूएसए से डॉ. थॉमस अल्ब्रेक्टसन, पुर्तगाल से डॉ. पाउलो मालो, यूएसए से डॉ. शंकर अय्यर, हांगकांग से डॉ. जेम्स चाउ, यूएसए से डॉ. रॉबर्ट क्रिस्टीन शरीक होंगे।

कॉन्फ्रेंस के साइंटिफिक चेयरमैन डॉ. सतीश भारद्वाज ने बताया कि अन्य प्रतिष्ठित वक्ताओं में डॉ. एन डो वियतनाम (डिजिटल डेंटिस्ट्री विशेषज्ञ), डॉ. योशीहितो जापान, डॉ. एल्विन वी यूएसए, डॉ. विशाल गुप्ता ऑस्ट्रेलिया और डॉ. किशोर भंडारी नेपाल (जाइगोमैटिक इंप्लांट्स विशेषज्ञ) शामिल है। कांफ्रेंस के को-चेयरमैन डॉ. एच एल गुप्ता ने बताया कि इस कांफ्रेंस का उद्‌घाटन राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े करेंगे। यह सम्मेलन दंत शल्य चिकित्सकों के लिए ज्ञान, कौशल और नवीनतम तकनीकों को सीखने का एक अभूतपूर्व मंच होगा।

सरदार पटेल की जयंती पर बधाई दी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने लौहपुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती तथा राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्टूबर) पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। शर्मा ने कहा कि आधुनिक भारत के निर्माता सरदार पटेल ने राष्ट्र को अखण्ड बनाए रखने में ऐतिहासिक योगदान दिया। आज का एकीकृत भारत सरदार पटेल की कूटनीति, दृढ़ इच्छाशक्ति व दूरदर्शिता का ही परिणाम है।

सार-समाचार

डॉ. विकास जैफ को 'जयपुर गौरव सम्मान'

जयपुर। चिकित्सक, शिक्षाविद एवं समाजसेवी डॉ. विकास जैफ को चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान के लिए 'जयपुर गौरव सम्मान अवार्ड' से सम्मानित किया गया। जयपुर के होटल क्लार्क्स आमेर में फर्स्ट इंडिया ग्रुप की ओर से आयोजित समारोह में उन्हें यह पुरस्कार मिला, जो कि उन्हें समाजहित, शिक्षा प्रसार और मानव सेवा के प्रति समर्पण की भावना के लिए प्रदान किया गया है। समारोह में प्रदेश के अनेक गणमान्य अतिथि, कैबिनेट मंत्री, विधायक एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट जन उपस्थित रहे। फर्स्ट इंडिया के सीईओ एवं मैनेजिंग एडिटर पवन अरोड़ा ने चिकित्सा, शिक्षा और समाजसेवा जैसे क्षेत्रों में डॉ. विकास जैफ जैसे लोग निरंतर समाज के उत्थान के लिए कार्यरत हैं। डॉ. विकास जैफ चिकित्सा, शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम हैं। वे जयपुर डेंटल कॉलेज, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, तथा जैफ इंटरनेशनल विश्वविद्यालय (युगांडा) के चेयरपर्सन हैं। इसके साथ ही वे राजस्थान स्टेट डेंटल काउंसिल के प्रथम निर्वाचित अध्यक्ष और डेंटल काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य भी हैं।

निवर्तमान अध्यक्ष दशरथ कुमार का सम्मान

जयपुर। राजस्थान आवासन बोर्ड कर्मचारी संघ के अध्यक्ष और कार्यकारिणी ने गुरूवार को निवर्तमान अध्यक्ष दशरथ कुमार का स्वागत किया। दरअसल दशरथ कुमार सेवानिवृत्ति से पूर्व राजस्थान आवासन मण्डल में वरिष्ठ कार्मिक प्रबन्धक द्वितीय के पद पर पदोन्नत हुए है। इस उपलक्ष्य में गुरूवार को राजस्थान आवासन बोर्ड कर्मचारी संघ के अध्यक्ष मोहन सिंह, महामंत्री रमेश चन्द शर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष गोविन्द नाटाणी, संयुक्त महासचिव मो. युसुफ खान, मनुज ठाकुर, खेल सचिव मधुर मलिक, मुख्यालय अध्यक्ष अनूप मिश्रा, महिला सचिव नेहा सहित निवर्तमान महामंत्री प्रदीप शर्मा ने दशरथ कुमार को साफा गुलदस्ता एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

गणिनी सरस्वती माताजी ने दिया उद्बोधन

जयपुर। दुर्गापुरा जैन मंदिर में चातुर्मास रत गणिनी आर्यिका सरस्वती माताजी ने "वर्तमान पीढ़ी का सर्वांगीण विकास" कार्यक्रम में 150 से अधिक महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, दुर्गापुरा की छात्राओं के समक्ष अपना ज्ञानवर्धक, विचारशील उद्बोधन दिया। अपने 45 मिनट के प्रवचन में वास्तविक धर्म क्या है, समय के सदुपयोग का क्या महत्व है, अच्छे विद्यार्थियों में पांच लक्षणों के बारे में संस्कृत के इस श्लोक के माध्यम से चर्चा की । इस अवसर पर प्राचार्य, अध्यापक गण, ट्रस्ट कमेटी के सदस्य गण, समाज के प्रबुद्धजन, महिला मंडल दुर्गापुरा एवं समाज की महिलाओं सहित प्रबुद्ध जन की सहभागिता रही। इससे पूर्व प्राचार्य नीति आहूजा, प्रकाश चांदवाड़, रेखा लुहाड़िया आदि द्वारा चंद्रप्रभ की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलन किया। रानी सौगानी द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया। साथ ही समाज के वयोवृद्ध पूर्व प्राचार्य गुलाब चंद गंगवाल द्वारा छात्राओं को लगन एवं मेहनत से जीवन में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम में नरेश बाकलीवाल, सुनील संगही, आनन्द अजमेरा, नेमी निगोतिया, जयकुमार बिंदायका, भागचंद पाटनी, गिरीश बड़जात्या, हुकम चंद बाकलीवाल, रेखा पाटनी, रेणु पांड्या, वर्षा अजमेरा, माया संगही, नीतू बाकलीवाल, मनोरमा बाकलीवाल, रजनी बोहरा, छवि बिंदायका आदि की गरिमामय भागीदारी रही। कार्यक्रम संयोजक जैन बैंकर्स फोरम से सुभाष जैन, जितेंद्र जैन, सुरेश जैन, एस सी जैन, भाग चन्द जैन मित्रपुरा की सक्रिय सहभागिता रही।

6.45 ग्राम स्मैक के साथ महिला गिरफ्तार

जयपुर। ट्रांसपोर्ट नगर थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम (डीएसटी) जयपुर पूर्व ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए 6 ग्राम 45 मिलीग्राम स्मैक के साथ एक महिला सप्लायर को गिरफ्तार किया है। इसके साथ ही स्मैक ब्रिकी की दो हजार 900 रुपये भी बरामद किए गए है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व संजीव नैन ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत ट्रांसपोर्ट नगर थाना पुलिस और डीएसटी पूर्व ने कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक की सप्लाई करने वाली नेहा कुरैशी (23) निवासी ट्रांसपोर्ट नगर जयपुर गिरफ्तार किया। पुलिस टीम को उसके पास से 6 ग्राम 45 मिलीग्राम स्मैक सहित ब्रिकी की दो हजार 900 रुपये जब्त किए है। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपित महिला पिछले कुछ दिनों से ही स्मैक का काम करने में लगी थी और स्मैक को बेचने वालो से तीन हजार से 4 हजार के प्रति ग्राम के हिसाब से खरीद कर उनकी छोटी-छोटी पुडियां बना कर तीन सौ रूपये के हिसाब से बेचते है। पुलिस आरोपित महिला से अवैध मादक पदार्थ की खरीद-फरोख्त के बारे में पूछताछ कर रही है।

अलका सक्सेना की पुस्तक का लोकार्पण कल होगा

अलका सक्सेना

जयपुर। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की पूर्व अतिरिक्त निदेशक और लेखिका अलका सक्सेना की तीस साल से अधिक की जनसम्पर्क यात्रा के सफर को समझने के लिए उनकी बहुचर्चित पुस्तक "अब जब बात निकली है" शनिवार को पाठकों के सामने आ जाएगी। यह पुस्तक एक जीवनी ना होकर एक विचार की कहानी है। पुस्तक का विमोचन शनिवार, एक नवम्बर को झालाना डूंगरी स्थित राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर में होगा। विमोचन समारोह में जनसम्पर्क और पत्रकारिता क्षेत्र की अनेक हस्तियां शामिल होगी। विमोचन समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव राकेश वर्मा जो जन संपर्क विभाग के चर्चित निदेशक कम सचिव भी रह चुके होंगे। विशिष्ट अतिथि, मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी गोविन्द पारीक और पूर्व आयुक्त सुनील शर्मा होंगे। अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार गुलाब बत्रा करेंगे। इस पुस्तक में सेवा, संघर्ष और विभिन्न उपलब्धियों के उन निर्णायक क्षणों का भी उल्लेख है जिसमें लेखिका ने सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी से अतिरिक्त निदेशक तक की अपनी तीन दशकों की जनसम्पर्क यात्रा के दौरान अनुभव किए।

मिलने का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म किया

जयपुर। बनी पार्क थाना इलाके में एक शातिर युवक ने युवती को अपने प्रेम जाल में फंसाया और मिलने का झांसा दे अकेले में बुलाया। जहां पर आरोपी ने युवती के अकेलेपन का फायदा उठाते हुए उसके साथ दुष्कर्म किया। विरोध करने पर आरोपी ने युवती को शादी करने का झांसा देता रहा और अलग-अलग जगहों पर ले जाकर उसकी आबरू लूटता रहा। एक साल बाद युवती ने आरोपी प्रेमी पर शादी का दबाव बनाया तो उसने शादी करने से इनकार कर दिया। खुद के साथ हुई धोखाधड़ी का एहसास होने पर युवती ने मामले की जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने ने बताया कि थाना इलाके में रहने वाली 29 वर्षीय युवती का आरोप है कि आरोपी से उसकी मुलाकात करीब डेढ़ साल पहले हुई थी। आरोपी ने वर्ष 2024 अक्टूबर माह में उसे मिलने के बहाने बनीपार्क बुलाया और अकेलेपन का फायदा उठाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। विरोध करने पर शादी का झांसा देकर 1 साल तक आबरु से खेलता रहा।

नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त को उम्रकैद

जयपुर। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर प्रथम ने नाबालिग को अपने साथ ले जाकर उसके साथ कई दिनों तक दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त सादिक अहमद को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर सत्तर हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी मीना अवस्थी ने अपने आदेश में कहा कि अभियुक्त ने पीडिता को बहला फुसलाकर ले जाने और उसके साथ कई बार दुष्कर्म करने का अपराध किया है। ऐसे में उसके प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता। इसके अलावा यदि इसमें पीडिता की सहमति भी थी तो भी अपराध कम नहीं होती, क्योंकि नाबालिग की सहमति कानून में कोई महत्व नहीं रखती है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक एसएस राजावत ने अदालत को बताया कि घटना को लेकर पीड़िता के पिता ने 16 जनवरी, 2023 को प्रताप नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा कि उसकी नाबालिग बेटी सुबह से लापता है। रिश्तेदार और आसपास ढूंढने के बाद भी उसका पता नहीं लगा है। वहीं अभियुक्त भी अपने घर से फरार है। उसे अंदेशा है कि अभियुक्त उसे बिहार ले गया है। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए कुछ दिन बाद पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया। सुनवाई के दौरान पीडिता ने अदालत को बताया कि घटना के दिन उसे अकेली देखकर अभियुक्त उसे अपने साथ जबरन ट्रेन से सूरत ले गया। जहां उसने चार दिन तक संबंध बनाए। इसके बाद अभियुक्त उसे अपनी कटियार, बिहार स्थित अपनी बहन के घर ले गया और करीब आठ दिन तक संबंध बनाए। वहीं बाद में उसे अपने गांव ले जाकर वहां भी दो दिन तक संबंध बनाए। इस दौरान उसने मौका देखकर अपने पिता को फोन कर दिया।

अपहरण और लूट करने वाली गैंग के तीन बदमाश पुलिस के हत्थे चढ़े

जयपुर (कासं)। ब्रह्मपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अपहरण और लूट करने वाली गैंग के तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों से वारदात में वारदात में प्रयुक्त एक चौपहिया वाहन(कार) भी जब्त की है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित ने सोशल मीडिया के जरिए पीड़ित युवक से सम्पर्क किया था और फिर व्यवसायी मिटिंग के बहाने बुलाकर अपहरण कर लूट की वारदात को अंजाम दिया। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) करन शर्मा ने बताया कि ब्रह्मपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अपहरण और लूट करने वाली गैंग के शातिर बदमाश रामकल्याण गुर्जर (32) निवासी मंडालिया मैदा चाकसू हाल किशनबाग भट्टा बस्ती और रविंद्र नाथ उर्फ रवि (19) व प्रवेश सिंह (20) निवासी हिंडौन जिला करौली को गिरफ्तार किया है। पुलिस टीमें मामले में फरार बदमाश विकास मीणा की तलाश में दबिश दे रही है। पुलिस आरोपियों से लूट की रकम बरामदगी के प्रयास कर रही है।

ब्रह्मपुरी थाना पुलिस ने अपहरण और लूट करने वाली गैंग के तीन बदमाशों को बापर्दा गिरफ्तार किया।

थानाधिकारी राजेश गौतम ने बताया कि अपहरण कर लूट की वारदात मुकेश कुमार वासवानी से हुई थी। जिसे 17 अक्टूबर को सोशल मीडिया ऐप के जरिए मिलने को जलमहल पर बुलाया।

वहां कार में बैठाकर साइट दिखाने के लिए जयपुर-दिल्ली हाईवे ले गया। रास्ते में उसके साथी भी कार में बैठ गए। मारपीट कर मोबाइल छीनकर ऑनलाइन 51 हजार रुपए ट्रांसफर कर लूट लिए। इसके बाद दिल्ली बाईपास पर दौलतपुरा टोल के पास पटक कर फरार हो गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों को चिन्हित करते हुए पकड़ा है।

मतदाता सूची शुद्धिकरण के लिए पुनरीक्षण शुरू

जयपुर (कासं)। भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली द्वारा 27 अक्टूबर को राज्य में मतदाता सूचियों के शुद्धिकरण हेतु विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम की घोषणा की गई है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मतदाता सूचियों की शुद्धता, पूर्णता एवं समयबद्ध अद्यतन सुनिश्चित करना है।

निर्वाचन आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार, प्रिंटिंग एवं प्रशिक्षण कार्य 28 अक्टूबर से 3 नवम्बर तक सम्पन्न होगा। इसके पश्चात घर-घर मतदाता गणना प्रपत्र वितरण एवं मतदाता केन्द्रों का पुनरीक्षण 4 नवम्बर से 4 दिसम्बर तक किया जाएगा। मतदाता सूची का प्रारूप प्रकाशन 9 दिसम्बर को होगा, तथा दावे एवं आपत्तियाँ 9 दिसम्बर से 8 जनवरी तक प्रस्तुत की जा सकेंगी। प्राप्त दावे-आपत्तियों का निस्तारण 9 दिसम्बर से 31 जनवरी तक किया जाएगा और अंतिम मतदाता सूची 7 फरवरी को प्रकाशित की जाएगी। उप जिला निर्वाचन अधिकारी मेघराज मीणा ने बताया कि जयपुर जिले में कुल 17 विधानसभा क्षेत्र हैं, जिनमें जयपुर शहर, झोटवाड़ा, सिविल लाइंस, हवामहल, किशनपोल, दूदू, बगरू, बस्सी, विराटनगर और फुलेरा प्रमुख हैं। जिले में 17 निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी (ईआरओ) एवं 83 सहायक निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी (एईआरओ) कार्यरत हैं। कुल 5046 मतदान केन्द्र स्थापित किए गए हैं, जिनमें 744 नये केन्द्रों का समावेश किया गया है। वर्तमान में जिले में 48 लाख 23 हजार 379 मतदाता पंजीकृत हैं - जिनमें 23 लाख 19 हजार 714 महिला मतदाता और 101 तृतीय लिंग के मतदाता सम्मिलित हैं।

उप जिला निर्वाचन अधिकारी मेघराज मीणा ने बताया कि गणना प्रपत्र में विस्तृत जानकारी सम्मिलित करते समय कोई भी आवेदक विगत पुनरीक्षण में दर्ज अपने या अपने परिवार के नाम की जानकारी वेबसाइट से प्राप्त कर सकेगा। जिन मतदाताओं के फार्म वापस नहीं आए हैं, उनके सम्भावित कारण जैसे अनुपस्थित, स्थानान्तरित, मृत्यु या डुप्लीकेट की स्थिति बी.एल.ओ. द्वारा सत्यापित की जाएगी। उन्होंने बताया कि गणना अवधि के दौरान किसी भी मतदाता से कोई दस्तावेज एकत्र नहीं किए जाएंगे। मतदाताओं से आग्रह किया गया है कि वे अपने संबंधित बी.एल.ओ. को सहयोग करते हुए अपने माता-पिता के नामों की सुनिश्चित करें, जिससे गणना प्रपत्र के साथ अन्य दस्तावेज प्रस्तुत करने की आवश्यकता न हो।

Frankenstein Friday

Frankenstein Friday, celebrated on the last Friday of October, is a quirky tribute to Mary Shelley's iconic 1818 novel *Frankenstein* and the lasting impact of its legendary monster in literature and pop culture. The day encourages fans of horror, science fiction, and classic literature to embrace the spooky season early, often with themed events, readings, movie marathons, or creative costumes. Beyond entertainment, Frankenstein Friday also sparks conversations about ethics in science, the consequences of unchecked ambition, and humanity's relationship with technology, timeless themes from Shelley's masterpiece. It's a celebration of imagination, curiosity, and the enduring legacy of one of horror's most iconic creations.

#NATURE

Cuevas de Mármol

The Marble Caves of Chile: Nature's Hidden Cathedral of Color

Tucked away in the remote Patagonian region of Chile, the Marble Caves, also known as Cuevas de Mármol, are one of the world's most stunning natural wonders. Located in the heart of Lake General Carrera, these magnificent caves offer a surreal, dreamlike experience that feels almost otherworldly.

A Masterpiece Sculpted by Nature

Formed over 6,000 years by the continuous movement of water, the Marble Caves are the result of wave erosion slowly carving through massive marble formations. Over millennia, the lake's gentle yet persistent waves have smoothed and shaped the stone into delicate arches, swirling tunnels, and cathedral-like caverns. The erosion process also exposed the layers of calcium carbonate, creating incredible patterns and colors, swirls of blue, white, and gray that dance across the walls like brushstrokes on a canvas.

The Magic of Reflection

What makes the Marble Caves especially mesmerizing is their interaction with the lake's turquoise-blue water. The color of the water changes throughout the year depending on the season, the light, and the mineral content of glacial meltwater. On clear days, the caves mirror the water's dazzling color, making the marble walls appear to glow from within. This ever-changing play of light and color has earned the caves nicknames like 'The Marble Cathedral' and 'The Chapel,' due to their almost sacred appearance.

Getting There: An Adventure Worth the Journey

The caves are located near the small Chilean town of Puerto Río Tranquilo, in the Aysén region of southern Chilean Patagonia. They are accessible only by boat or kayak, which adds to the sense of wonder and remoteness. Boat tours typically last 30-60 minutes and allow visitors to get up close to the formations, gliding through the narrow marble passages and under natural stone arches. Early morning visits are especially popular among photographers, when the water is calm and the reflections are at their most vivid.

Why It's a Must-See

- **Geological wonder:** Witness the power of water shaping solid rock over thousands of years.
- **Photographer's dream:** Stunning colors and patterns create endless photo opportunities.
- **Off the beaten path:** A remote and peaceful experience far from typical tourist crowds.

Preserving the Beauty

While the Marble Caves remain relatively untouched due to their location, conservationists stress the importance of sustainable tourism. Visitors are encouraged to travel responsibly to help preserve the fragile beauty of this natural wonder for future generations. The Marble Caves of Lake General Carrera are a testament to nature's slow, patient artistry. With their glowing blue reflections, cathedral-like arches, and quiet majesty, they remain one of the most magical destinations on Earth, a hidden gem for adventurers, nature lovers, and anyone who appreciates the silent power of time and water.

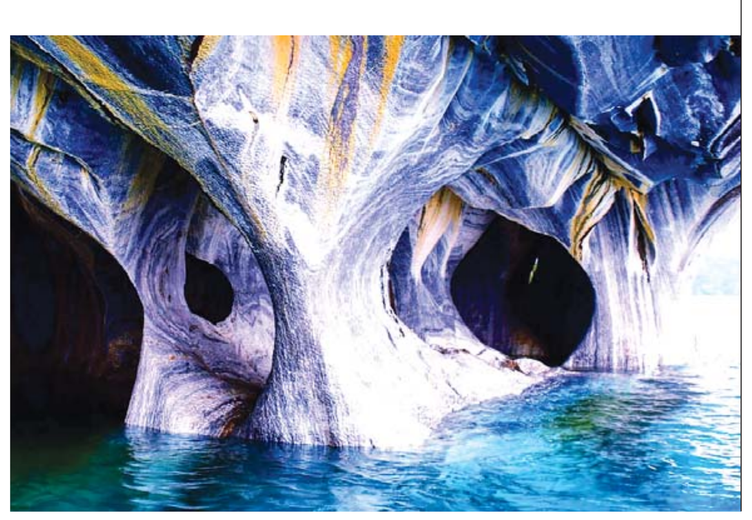

Revisiting Covid

A lockdown was hastily implemented without much thought for the poor; how there was misgovernance in managing this epidemic: lack of hospital beds, lack of oxygen cylinders and under reporting of Covid deaths. That period was a blot on our system where the affluent were safely locked at home and there was no one to care for the migrant labour.

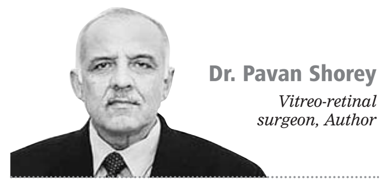

Dr. Pavan Shorey
Vitreo-retinal surgeon, Author

#THOUGHT

Recently, a film, *Homebound* (2025), was released and won laurels at different film festivals. It is the Indian entry to the Oscars in the foreign film category. The film tells the story of marginalised youth, a Dalit and a Muslim from the lower economic strata, their quest to find a decent job but all they get is a labour job at a Surat factory. It occurs during Covid times, how the Surat factory is shut and how they undertake the long journey to their village on foot. A very poignant film. This brought back grim memories of our Covid times: how a lockdown was hastily implemented without much thought for the poor; how there was misgovernance in managing this epidemic: lack of hospital beds, lack of oxygen cylinders and under reporting of Covid deaths. That period was a blot on our system where the affluent were safely locked at home and there was no one to care for the migrant labour.

It spurred me to write these poems during those times. 'In the lap of Ganga Maiyya' tells the story of a poor man who cannot afford a cremation for his dead wife. 'We live to serve' celebrates the selfless service of the Sikh community, how they endangered their lives and did community service in cremating the Covid infected bodies no one would touch. This poem tells the story of Jitendra Singh Shunty and his Shaheed Bhagat Singh Sewa Dal. They provided ambulance services for ferrying these bodies and cremated more than 4000 bodies in Delhi.

A salute to the selfless *Sewa* of the Sikh community!

Who lurks in the Shadows?

A heart-rending image in the newspaper
Wailing girls carry their father's body for cremation
How have things come to such a pass
Where is the collective conscience of the nation
Who lurks in the shadows?
Is it indifference?

An old man with the dead body of his wife
He sits on the roadside, accepting his fate
He is forbidden to cremate in his village
Who will help him, who will end his eternal wait
Who lurks in the shadows?
Is it callousness?

I stand in the line for an O2 cylinder
Back home, my mother is gasping for breath
When my turn comes, I am charged double
Resigned, I pay to these merchants of death
Who lurks in the shadows?
Is it greed?

I stand in line for my mother's cremation
There are two other bodies but only one slot
A brawl breaks out amongst the relatives
Even in death, there is a fight for that one spot
Who lurks in the shadows?
Is it the devil in us?

I lie on the ICU bed, a dead man by my side
A body bag is brought to take my neighbour away
Me, unwashed, unkempt, uncared, a pariah
I look away, I may be in that body bag anyday
Who lurks in the shadows?
Is it death?

A Migrant's Song

I drag myself up from a bed of stones
My legs stiff as Bamboo poles
l have many a hundred miles to walk
Will I make it to my home, my goal
Sab kuch hai Ram Bharose!

l am a 10th fail, only job i got was of a labourer
Half my wage I sent to my family
l slept in a Juggi, six persons to a room
There were times I had to sleep hungry
Sab kuch hai Ram Bharose!

I have no work, the factory is closed
Hunger will kill us before the virus can
I sold my phone for two thousand rupees
I save it for a bus ride, if I am lucky to find one
Sub kuch hai Ram Bharose!

On the way, some are runover by trucks
Some are crushed by trains
We were abandoned like orphans
It is not in our right to cry out in pain
Sab kuch hai Ram Bharose!

I bandage the foot blisters with rags
I curse myself, I curse my low birth
We do not matter, we do not matter
A helpless rage in me, we the scum of the earth
Sab kuch hai Ram Bharose!

The sun is up in the sky, I settle down to sleep
I drift into a dream, wind whistling past my ears
I am on a motorcycle with my wife and son
I am so happy, I never was in years
But dreams don't last, I wake up and trudge on
The never ending road ahead of me
Sab kuch hai Ram Bharose!
Sab kuch hai Ram Bharose!

In the lap of Ganga Maiyya

Devi, that is my wife's name
She has fever, keeps saying:
I am choking, I cannot breathe
I have no money, I give her jadi booti
She dies in a few hours, leaving us to grieve

I go to the Shamshan ghat
Two thousand, they say;
I explain my situation
I had no money for her treatment or now
I fall at their feet; stone hearted, they say:
no money, no cremation

Me and brother decide to perform Ganga Samadhi
To evade cops, we move after midnight
Sarkar has said, if caught, it will seize our homes
I laugh, seize my wretched hut,
bring more misery to my plight

O Keeper of this nation
You feed your peacocks with grain
Pause a moment, look at our sunken cheeks,
our skeletal frames
Don't you ever wince in pain

I drag the heavy handcart
Devi's body wrapped in a death shroud
My brother helps by pushing the cart
The grating sound of the wheels rings out loud

We reach the sandy Ganga bank
carry the body past
the countless graves of bodies buried in sand
We head for a place where
the flow of Ganga is fast
We push the body into the rapid flowing Ganga
It ploughs through the shimmering waters in moonlight
Her happy face swimming in my tears
We turn away, there are so many floating bodies in sight
We fold our hands and pray
O Ganga Maiyya, take your daughter in your lap
Give her peace and happiness
Let her not be reborn poor again

We live to serve

Another day, another dawn
The line of nameless dead bodies
left hurriedly by relatives
We proclaim, Wahe Guru
And pick up the bodies one by one
And consign them to flames
Wahe Guru da khalsa
Wahe Guru di fatah

Our ambulance driver died of Covid
All ambulance drivers are hesitant
I tell them:
When a soldier dies
Does the army step back
We are Wahe Guruji's soldiers
We must carry on with our sewa
Wahe Guru da khalsa
Wahe Guru di fatah

A mother dead from Covid on the first floor
The son phones us frantically
There is no one to take the body down
When we arrive, he is busy stripping her off her gold ornaments
But he doesn't come forth to take the body down
Wahe Guru da khalsa
Wahe Guru di fatah

I am striken with Covid
I spend my day in cremations
At night I sleep in my car
I remember Guru Gobind Singh Ji
Any dead body that comes to us
We treat it as one of our family
Wahe Guru da khalsa
Wahe Guru di fatah

rajeshsharma1049@gmail.com

#SPORT

Shoes Don't Make A Difference

Runners do not need to worry about the amount of cushioning in their shoes

New research is good news for athletes and fitness enthusiasts who favor thick, heavily cushioned running shoes. Although these shoes are increasingly popular because they provide comfort and a high degree of shock absorbing protection, those benefits were thought to come at the expense of increased overall leg stiffness, which alters a runner's normal stride and could increase muscle fatigue.

Plenty of research suggests just such a result when running on a compliant surface, like a synthetic rubber track, but no one had actually tested how the cushioned midsole of a running shoe affects overall leg stiffness. Until now. "Our results show that runners do not need to worry about the amount of cushioning," says Nicholas Holowka, an assistant professor of anthropology at the University at Buffalo and first author of the study in the *Journal of Biomechanics*. "That element of shoe design is not interrupting your normal running style in any significant or meaningful way."

RUNNERS' OPTIMAL LEG STIFFNESS

Leg stiffness can be compared to a spring's tension. If the leg alone were modeled as a single spring, that coil would have one level of stiffness. The leg, however, is made up of many muscles that control degrees of stiffness. When running on cushioned surfaces, leg stiffness increases, but that's not the case when running in heavily cushioned shoes.

"There is an assumed optimal leg stiffness for runners, but if you increase your leg stiffness above that point, you'd be using more muscles to stiffen that leg spring, which means more energy and fatigue over long distance," says Holowka, an expert on the biomechanics of walking and running.

"We were interested in the idea that when people run on surfaces that are elastic, with a certain amount of compliance, they subconsciously change the stiffness of their leg to maintain an optimal stiffness. Was this the same when it came to the cushioning of their shoes?"

At a glance, the absence of research on midsole running shoe thickness and running style seems surprising, but Holowka says the problem is more complicated than it appears.

"It's very hard to account for all of the factors in such a way that allows you to isolate specifically on the stiffness of the footwear itself," he says. "If you try to compare different shoes, then you have design differences, like heel height or arch support, which makes it difficult, if not impossible, to look at the effects of the shoe's cushioning. Our study was geared at looking at this one variable." And to do that, Holowka's team custom created sandals for the study.

NATURAL RUNNING STYLE

The researchers enrolled 20 experienced runners and measured them in four different conditions: barefoot and sandals made from three different materials. The first sandals were a commercially available model inspired by the footwear of the Tarahumara, an Indigenous population living in Mexico who have developed a tradition of long-distance running. These sandals, made from the common shoe cushioning material ethylene-vinyl acetate foam (EVA), served as molds for two other similar designs with different degrees of cushioning.

Participants ran on treadmills that measured the forces the body was putting against the ground. The researchers also measured their motions through a specialized camera system. The data contributed to a model of the leg as a linear spring, which allowed the researchers to calculate leg stiffness under the different conditions. "We went into this with the hypothesis that the cushioning might change leg stiffness, but that just wasn't supported," says Holowka. "The results show that your running style is still natural even when running in these heavily cushioned shoes."

"Our findings tell us something that was previously unknown about shoe design, essentially the extent to which shoe cushioning influences normal running style."

And that's important information for runners who prefer heavily cushioned shoes, but are concerned about how those shoes affect running style, Holowka says. "You can have that cushioning if you like it and still run with normal natural leg stiffness." Additional coauthors are from Harvard University and Yale University.

THE WALL

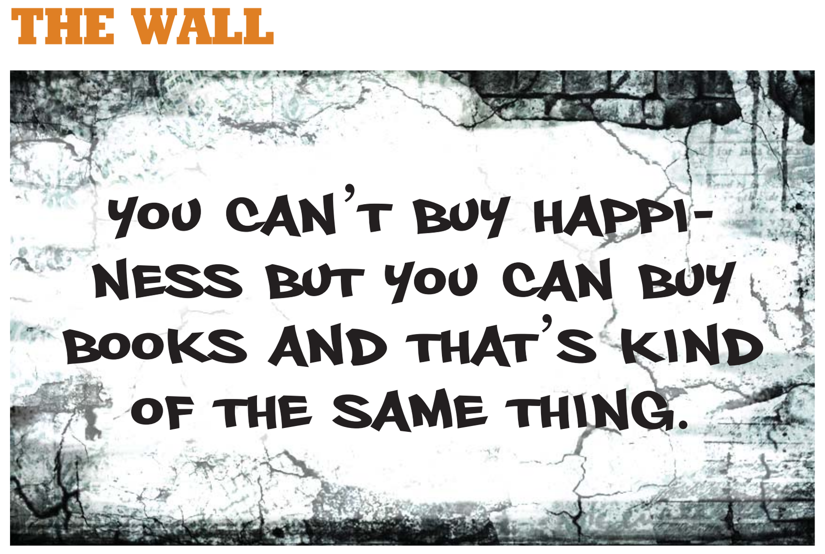

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

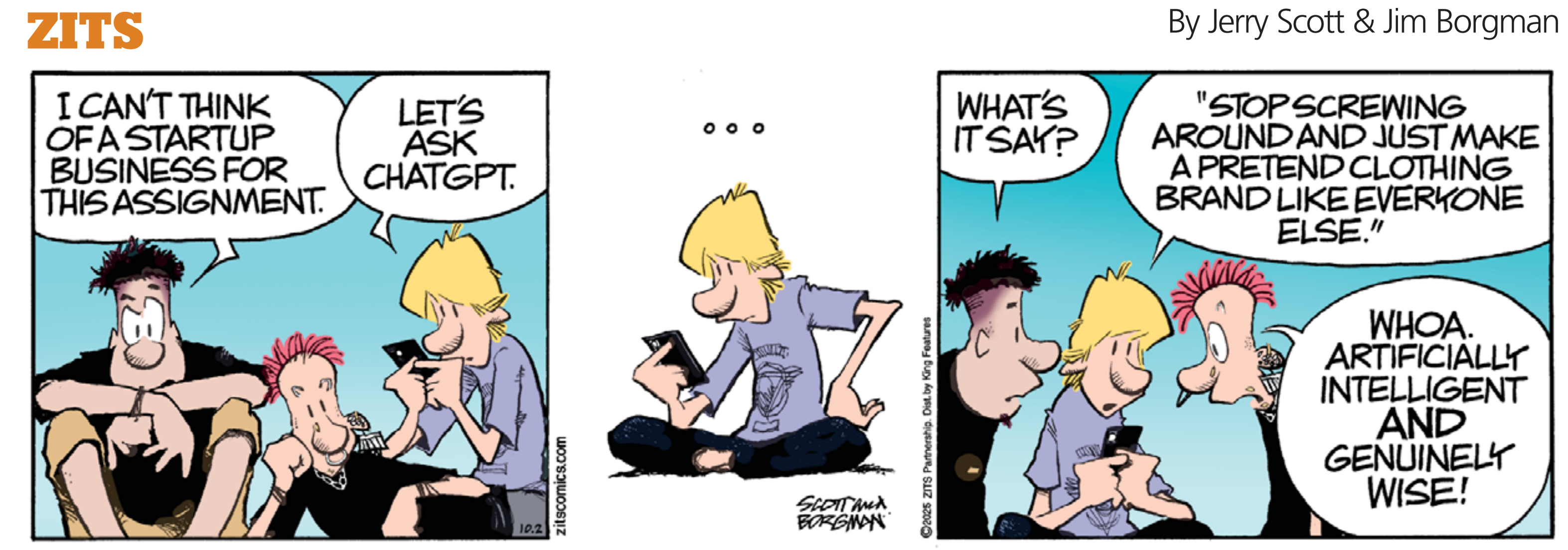

हिस्ट्रीशीटर डेनिस बावरिया हत्याकांड में अब तक 14 आरोपी नामजद

सात गिरफ्तार, मुख्य आरोपी हिस्ट्रीशीटर मंदीप और हार्डकोर बदमाश दीपक मालसरिया फरार

झुंझुनूं, (निसं)। दिवाली के पहले दिन रात को धनूरी थाने के हिस्ट्रीशीटर डेनिस बावरिया की हत्या को दस दिन हो गए हैं। पुलिस लगातार इस मामले में ना केवल कार्रवाई कर रही है, बल्कि अब तक एक 10 हजार के ईनामी सहित सात बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं अब तक गिरफ्तार

- **बाइक से करवाया था डेनिस का पीछा, अंडे लेने के लिए रुका तो अपहरण कर हत्या कर दी**

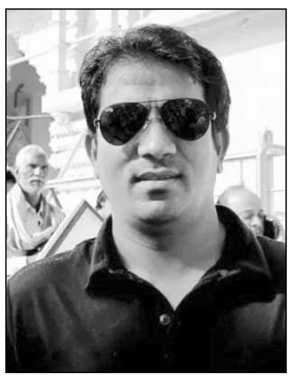

हिस्ट्रीशीटर डेनिस बावरिया की हत्या के मामले में पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया।

आरोपियों से पूछताछ में वारदात की एक-एक कहानी निकलकर सामने आ रही है। जमीन पर रेंगकर और सहारे के साथ चलते ये बदमाश झुंझुनूं के हिस्ट्रीशीटर डेनिस बावरिया की हत्या से जुड़े आरोपी हैं।

डेनिस को मारने के लिए बिसाऊ थाने का हिस्ट्रीशीटर मंदीप उर्फ मदिया और झुंझुनूं सदर थाने का हार्डकोर बदमाश दीपक मालसरिया मुख्य आरोपी है। हालांकि ये दोनों ही अभी तक पुलिस पकड़ से दूर है, लेकिन अब पुलिस ने तय कर लिया है कि फरार बदमाशों को छुपाने, भगाने और फरारी कटवाने में मदद करने वाले लोगों पर भी कार्रवाई होगी, जिसके लिए इनकी मदद करने वालों की सूची बनाई जा रही है।

सिटी डीएसपी वीरेंद्र शर्मा ने बताया कि अब तक 14 आरोपियों को नामजद कर लिया गया है। वहीं सात आरोपियों को गिरफ्तार भी कर लिया है। पुलिस ने बताया कि मामले में मंदीप उर्फ मदिया तथा दीपक मालसरिया ने ऐसे लड़कों को चुना जो अपराध की दुनिया में अपना नाम चमकाना चाहते थे और मदिया की गैंग से जुड़ना चाहते थे। इनमें से 10 हजार रूपए का ईनामी बदमाश आदित्य मीणा निवासी हांसलसर भी शामिल था। जो अपराध की दुनिया में अपना नाम चमकाने के चक्कर में मदिया और दीपक मालसरिया के संपर्क में आया और वारदात में शामिल हो गया। वहीं इस काम में परसरामपुरा के चौढ णी की ढाणी निवासी जितेंद्र उर्फ जोनी मेघवाल के जरिए भी ऐसे चार लड़कों अजय कुमार उर्फ अज्जू, ताराचन्द, पंकज जाट, धर्मपाल को इस काम के लिए बुलाया और प्लान में शामिल किया।

अब तक पुलिस इस मामले में जो कड़ी से कड़ी मिला पाई है। उसके अनुसार मंदीप उर्फ मदिया तथा दीपक मालसरिया, दोनों ही डेनिस बावरिया के दुश्मन बन गए थे। पहले डेनिस बावरिया भी मंदीप उर्फ मदिया की गैंग में था, लेकिन बाद में वह मदिया गैंग से दूर हो गया। वहीं दीपक मालसरिया भी डेनिस बावरिया की सीधी दुश्मन हो गई। डेनिस को रास्ते से हटाने के लिए मंदीप उर्फ मदिया तथा दीपक मालसरिया ने हाथ मिलाया और यह सारा प्लान बनाया। जितेंद्र उर्फ जोनी ने जो लड़के उपलब्ध करवाए। उन्हें मंडावा रोड पर सीतसर स्थित रॉयल ट्रीट होटल पर मंदीप उर्फ मदिया तथा दीपक मालसरिया से मिलाया गया। वहीं पर पूरी वारदात का प्लान बना, जिसके बाद कपिल कस्वां और राहुल उर्फ राज ने डेनिस बावरिया की पीरूसिंह सर्किल से लेकर चूरू बाईपास तक बाइक से रैकी करते हुए पीछा किया। पल-पल की जानकारी मंदीप उर्फ मदिया तथा दीपक मालसरिया को देते रहे। डेनिस बावरिया चूरू बाईपास पर अंडे लेने के लिए रूका तो उसी वक्त तीन कैंपर गाड़ियों से हमला कर डेनिस का अपहरण किया गया, जिसके बाद मंदीप उर्फ मदिया, दीपक मालसरिया और प्रशांत उर्फ पोखर सहित अन्य ने जमकर मारपीट कर मरा हुआ समझकर ही रसोड़ा गांव छोड़कर फरार हो गए।

पुलिस ने अब सात आरोपियों पर ईनाम घोषित किया है, जिनमें से एक गिरफ्तार हो चुका है। सात से आठ टीमें लगातार दबिशें दे रही है। पुलिस इस मामले में अब तक सात आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। इनमें कपिल कुमार कस्वां पुत्र उम्मेद सिंह, पंकज कुमार पुत्र राजेंद्र जाट, राहुल कुमार उर्फ राज, अजय कुमार ऊर्फ अज्जू पुत्र खेताराम मेघवाल, ताराचंद उर्फ टीसी पुत्र सीताराम मेघवाल, जितेंद्र उर्फ जोनी पुत्र ओमप्रकाश मेघवाल तथा आदित्य मीणा उर्फ बुलिया पुत्र रामजीलाल मीणा है। इनमें आदित्य मीणा उर्फ बुलिया 10 हजार का ईनामी बदमाश था।

बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका खारिज, याचिकाकर्ता पर जुर्माना लगाया

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने एक बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका खारिज करते हुए याचिकाकर्ता पर 25 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है। जस्टिस विनीत कुमार माथुर और जस्टिस बिपिन गुप्ता की खंडपीठ ने नागौर के खींवसर में पांचोड़ी निवासी 25 वर्षीय युवक की याचिका पर यह फैसला सुनाया। इस युवक ने दावा किया था कि उसने फलोदी जिले के मतोड़ा थाना इलाके की एक युवती से शादी की है और युवती के माता-पिता ने उसे गैरकानूनी तरीके से अपने पास बंदी बना रखा है। याचिकाकर्ता ने दावा किया कि उसने युवती के साथ विवाह किया है और इसके प्रमाण के तौर पर आर्य समाज का विवाह प्रमाण पत्र भी कोर्ट में प्रस्तुत किया गया था। उसका कहना था कि शादी के बाद उसकी पत्नी को उसके माता-पिता ले गए।

याचिका में राज्य सरकार, फलोदी पुलिस अधीक्षक, मतोड़ा थानाधिकारी और महिला के माता-पिता को प्रतिवादी बनाया गया था। प्रतिवादियों की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता दीपक चौधरी, मतोड़ा थानाधिकारी अमानाराम और मनीषा चौधरी ने पक्ष रखा। कोर्ट के निर्देश पर पुलिस ने 17 अक्टूबर को युवती को अदालत में पेश किया गया। न्यायाधीशों ने युवती से विस्तार से बातचीत की और उसकी इच्छा जानने का प्रयास किया। कोर्ट ने पाया कि युवती वयस्क है और वह अपने निर्णय लेने में सक्षम है।

जब कोर्ट ने युवती से बात की, तो उसने चौंकाने वाला खुलासा किया। उसने बताया कि चार लोग उसे जबरन उठाकर ले गए और जबरदस्ती याचिकाकर्ता से शादी करवाई गई। उस ने अदालत के सामने साफ शब्दों में कहा कि वह याचिकाकर्ता के साथ रहने को तैयार नहीं है और अपनी मर्जी से अपने माता-पिता के साथ खुशी-खुशी रह रही है। युवती ने स्पष्ट किया कि उसके माता-पिता ने उसे जबरन अपने पास नहीं रोका है, बल्कि वह स्वेच्छा से उनके साथ रहना चाहती है।

युवती के बयान को सुनने के बाद कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि युवती अपने माता-पिता की गैरकानूनी हिरासत में नहीं है। न्यायालय ने पाया कि वह अपनी स्वतंत्र इच्छा से अपने माता-पिता के साथ रह रही है और वह याचिकाकर्ता के साथ जाना नहीं चाहती। युवती की इच्छा स्पष्ट होने के बाद कोर्ट ने यह निष्कर्ष निकाला कि याचिका का कोई आधार नहीं बनता। इस पर याचिका को खारिज कर दिया गया। कोर्ट ने याचिकाकर्ता द्वारा जमा की गई 25 हजार रुपए की राशि जब्त कर ली। कोर्ट ने रजिस्ट्रार (न्यायिक) को निर्देश दिया कि इस जब्त की गई राशि को राजस्थान विधिक सेवा प्राधिकरण के बैंक खाते में ट्रांसफर किया जाए, जो कानूनी सहायता सेवाओं के लिए उपयोग की जाएगी।

ट्रैक्टर-ट्रॉली की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

जहाजपुर-देवली मार्ग पर हुआ हादसा, छोटी बहन को लेने जा रहा था युवक

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के जहाजपुर मार्ग पर अमरवासी स्थित राजीव गांधी महाविद्यालय के समीप एक ट्रैक्टर-ट्रॉली की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। सूचना पर हनुमान नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घटना की जानकारी ली।

मृतक युवक (फाइल फोटो)।

- **मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया और शव नहीं उठाने दिया, समझाइश पर माने परिजन और ग्रामीण**

सहायक उप निरीक्षक दुर्गालाल ने बताया कि मृतक अजय पुत्र दुर्गालाल मीणा, निवासी घाटी का बाड़ा, थाना जहाजपुर है। मृतक अजय के भांजे मोहित ने बताया कि उनके मामा अजय प्रदीप नगर में उनकी छोटी बहन नीतू को लेने बाइक से आ रहे थे। इसी दौरान राजीव गांधी महाविद्यालय के करीब एक ट्रैक्टर-ट्रॉली ने उन्हें टक्कर मार दी, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ एकत्र हो गई, जिन्होंने विरोध प्रदर्शन किया और करीब डेढ़ घंटे तक शव नहीं उठाने दिया। बाद में पुलिस की समझाइश पर परिजन और ग्रामीण सहमत हुए।

मृतक के भांजे मोहित ने बताया कि उनके मामा गुजरात के सोलर प्लांट फैक्ट्री में काम करते थे। वह अविवाहित है। मृतक अजय के जीजा रामप्रसाद की पिछले दिनों मौत हुई थी, जिसके चलते वह अपनी छोटी बहन नीतू को पीहर ले जाने के लिए प्रदीप नगर देवली आ रहे थे। इसी बीच, यह हादसा अजय की जान ले बैठा। हनुमान नगर पुलिस ने शव को देवली चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवा दिया है। मृतक के शव का पोस्टमार्टम करकर शव परिजनों को सुपुर्द किया। वहीं पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की।

टोल प्लाजा कर्मियों से मारपीट मामले में आरोपी गिरफ्तार

पुलिस के डर से महिला के कपड़े पहनकर खंडहर में छुपा बैठा था आरोपी

सीकर, (निसं)। सीकर की लक्ष्मणगढ़ थाना पुलिस ने टोल प्लाजा के कर्मचारियों के साथ मारपीट करने के मामले में आरोपी रावण को गिरफ्तार किया है। रावण ने अपने साथियों के साथ मिलकर 21 अक्टूबर को टोल कर्मचारियों के साथ मारपीट की थी। आरोपी पुलिस के डर से महिला के कपड़े पहनकर खंडहर में छुपा बैठा था।

लक्ष्मणगढ़ डीवाईएसपी दिलीप कुमार मीणा के अनुसार 21 अक्टूबर को गजेंद्र सिंह ने रिपोर्ट दर्ज करवाई कि उनका छोटा भाई राजेंद्र सिंह भूमा टोल प्लाजा पर अपनी नौकरी कर रहा था। दोपहर तीन बजे के करीब अनुज बादूसर, मोनू गाड़ोदा सहित अन्य लोग आए, जिन्होंने जान से मारने की नीयत से राजेंद्र और अन्य कर्मचारियों के साथ मारपीट की। साथ ही राजेंद्र की जेब से 15 हजार रुपए और गले में पहनी सोने की चेन भी छीन ली। सभी बदमाश बीएल ग्रुप से जुड़े हुए हैं। जिनकी पुलिस तलाश कर रही थी। इसी दौरान पुलिस को सूचना मिली कि वारदात में शामिल आरोपी प्रयास नेहरा उर्फ रावण उर्फ निशु पुत्र महावीर पुलिस के डर से अपनी पहचान छुपाने के लिए महिला के कपड़ों में एक खंडहर में बैठा हुआ है, जिसने अपने सिर के बाल भी मुंडवा लिए। पुलिस ने दबिश देकर वहां से आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी की गिरफ्तारी में जिला विशेष टीम के कॉन्स्टेबल अशोक और लक्ष्मणगढ़ पुलिस थाने के कॉन्स्टेबल विद्याधर की अहम भूमिका रही।

चलती कार में अचानक आग लगी, हादसा टला

स्थानीय लोगों की मदद से समय रहते आग पर काबू पाया

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के सुभाषनगर थाना क्षेत्र में चलती मारुति वेन में अचानक आग लग गई। कार चालक की सतर्कता की वजह से बड़ा हादसा टल गया। वहीं स्थानीय लोगों की मदद से तुरंत आग पर काबू पा लिया।

सुभाषनगर थाना प्रभारी शिवराज गुर्जर ने बताया कि थाना क्षेत्र के नारायणी माता सर्किल पर गुरुवार को एक चलती मारुति वैन कार में अचानक आग लग गई। कार चालक को आग लगने का पता चलते ही कार को साइड में लगाया, जहां आसपास के लोगों ने पानी का छिड़काव कर आग पर काबू पाया। चालक की सूझबूझ से बड़ा हादसा नहीं हुआ है। आग के कारण मारुति कार का अगला कुछ हिस्सा जल गया था। पुलिस ने बताया कि जिस कार में आग लगी उस मारुति वैन कार के पीछे के हिस्से में गैस किट लगा हुआ था, लेकिन स्थानीय लोगों की मदद से तुरंत आग पर काबू पा लिया जिसके कारण कार का आगे का हिस्सा जल गया, लेकिन पीछे गैस किट तक आग नहीं पहुंचने के कारण कोई बड़ी दुर्घटना नहीं हुई।

पशुपालन मंत्री ने भेड़ों में फैल रही संक्रामक बीमारी पर लिया संज्ञान

जयपुर/जालोर/पाली। पशुपालन, डेयरी और गोपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने पाली एवं जालौर जिलों में भेड़ों में फैल रही संक्रामक बीमारियों की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल विशेष चिकित्सा टीमें भेजी जाएं तथा बीमार पशुओं का समुचित उपचार सुनिश्चित किया जाए। जोराराम कुमावत ने यह भी बताया है कि पाली और जालोर जिले में हाल ही के दिनों में भेड़ों में फैल रही संक्रामक बीमारियों की रोकथाम एवं निदान के लिए पशुपालन विभाग द्वारा विशेष कार्ययोजना के तहत त्वरित कार्रवाई की जा रही है।

- **पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने पाली एवं जालोर जिलों में भेड़ों में फैल रही संक्रामक बीमारियों की स्थिति पर चिंता जताई, त्वरित उपचार और बचाव के लिए जिलों को निर्देश दिए**

पशुपालन मंत्री ने बताया कि जालोर जिले के आहोर नोडल क्षेत्र में अधिक संख्या में भेड़ें प्रभावित हुई हैं शेष भाग में भी कुछ छिटपुट मामले सामने आए हैं। आहोर में संक्रमित भेड़ों के सर्वे और उपचार के लिए 40 सदस्यों के कुल 12 दलों का गठन कर दिया गया है जो लगातार सर्वे और उपचार के कार्य में संलग्न हैं। संक्रमित पशुओं के ब्लड सैंपल तथा नेजल स्वैब भी लिए गए हैं और उन्हें परीक्षण के लिए भेजा गया है। अब तक आहोर के विभिन्न गांवों मे नौ हजार से अधिक भेड़ों का सर्वे कराया जा चुका है। वर्तमान में स्थिति नियंत्रण में है। जिले के अन्य भागों में भी सभी एहतियाती उपाय किए जा रहे हैं और संक्रमित पशुओं को अन्य पशुओं से अलग कर दिया गया है जिससे बीमारी के फैलाव को रोका जा सके। पशुपालकों को भी आवश्यक परामर्श एवं सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

उन्होंने बताया कि पाली जिले में भी कुछ घटनाएं सामने आई हैं जिनका संज्ञान लेकर उपचार चालू कर दिया गया है। पाली के चाणोद गांव से सैंपल लेकर जांच के लिए भिजवाया गया है। आगे स्थिति न बिगड़े इसके लिए विभाग को पाबंद कर दिया गया है। वहां अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि तत्काल दलों का गठन कर भेड़ों में फैली बीमारी का सर्वे करवाकर आवश्यकतानुसार अविलंब उपचार व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। मंत्री कुमावत ने कहा कि राज्य सरकार पशुधन की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति पूरी तरह संवेदनशील है।

उन्होंने दोनों जिलों में पशु चिकित्सकों की टीमों को गांव-गांव जाकर पशुओं की जांच करने, सैंपल लेने के काम को तेज़ करने और जागरूकता शिविर आयोजित करने के भी निर्देश दिए गए हैं। कुमावत ने कहा कि इस संबंध में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त दवाइयों व संसाधनों की आपूर्ति तत्काल की जाएगी। उन्होंने पशुपालकों से भी अपील की है कि वे अपने पशुओं का समय-समय पर टीकाकरण कराएं, बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें तथा किसी भी प्रकार के संक्रमण की स्थिति में नजदीकी पशु चिकित्सालय से तत्काल संपर्क करें।

बीमारी से पुलिसकर्मी की मौत, परिवार में छाया मातम

पावटा, (निसं)। क्राइम ब्रांच परिवाद शाखा में तैनात सहायक उप निरीक्षक रामकिशन गुर्जर निवासी ग्राम कुहाड़ा का बीमारी से निधन हो गया। निधन के बाद रिजर्व पुलिस लाइन से जवानों की सम्मान गार्ड टीम पहुंची और कुहाड़ा गांव के श्मशान स्थल पर राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। अंतिम संस्कार से पहले सलामी गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। कार्यक्रम में विराटनगर डीएसपी शिप्रा राजावत और थाना प्रभारी सोहनलाल विराटनगर पुलिसकर्मी कृष्णा कुमार स्वामी, बाबूलाल, कंवर सिंह व साथ थाना पुलिस और लाइन से आए जवान मौजूद रहे। कुहाड़ा गांव के ग्रामीणों और परिजनों सहित करीब 500 लोग अंतिम यात्रा में शामिल हुए। सभी ने एएसआई रामकिशन के सेवाभाव और कर्तव्यनिष्ठा को याद करते हुए भावपूर्ण विदाई दी। बीमारी के चलते उनकी मृत्यु हुई है। उनके अपने पीछे तीन भाई जिनमें दो बड़े भाई हैं जिसमें बड़े ही बड़े भाई शिवकरण की मौत हो चुकी है, दूसरे नंबर का भाई छीतर मल खेतीबाड़ी करता है।

नकली शराब बनाने की फैक्टरी पकड़ी, संचालक गिरफ्तार

दौसा, (निसं)। डीएसटी दौसा व पुलिस थाना सदर दौसा ने गुरुवार को नकली देशी शराब बनाने वाली फैक्टरी का भंडाफोड़ करते हुये 12 कार्टून में 576 नकली देशी शराब के पव्वे, 30 लीटर स्प्रिट, बारदाना, पव्वा पैकिंग मशीन की जब्त करते हुये फैक्टरी संचालक मखलेश मीणा को गिरफ्तार किया है। इधर इस कार्यवाही के बाद शराब व्यवसाय से जुड़े ठेकेदारों में हडकम्प मच गया है।

पुलिस उपाधीक्षक रवि प्रकाश शर्मा ने बताया कि डीएसटी टीम दौसा ने सूचना दी की एक व्यक्ति गोर्वधन नगर भांकरी रोड रेलवे लाईन के पास एक मकान में स्प्रिट लाकर अवैध देशी मदिरा तैयार करता है। सूचना पर हरिराम सउनि मय जाप्ता के एक मकान के पास पहुंचे, जिसकी चारदीवारी के अन्दर एक कमरा बना हुआ था कमरे के पास अवैध निर्मित शराब के 12 कार्टून मिले जिनमे 576 अवैध देशी शराब के प्लास्टिक के पव्वे भरे हुए (अवैध देशी शराब 103 लीटर) व खाली बारदाना के 762 प्लास्टिक पव्वे खाली, एक जरीकेन 50 लीटर जिसमे 30 लीटर स्प्रिट व एक पव्वा पैकिंग मशीन मिली, जिनको मौके पर जप्त किया जाकर आरोपी मखलेश पुत्र रामप्रताप मीना निवासी सिडौंली थाना कोलवा जिला दौसा को गिरफ्तार किया गया। सूत्रों ने बताया कि आरोपित मखलेश मीणा नकली शराब राष्ट्रीय राजमार्गों पर बने ढाबों सहित अन्य जगहों पर माल सप्लाई करता था, पुलिस आरोपित से पूछताछ कर रही है।

पुस्तक ''जंगल की कहानियां'' : बाघों को पुनर्जीवित व वन्यजीवों का संरक्षण करने का सार्थक प्रयास

पुस्तक ''जंगल की कहानियां'' का लोकार्पण आगामी दो नवम्बर को होगा

जयपुर। सेतु प्रकाशन नोएडा व राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वाधान में राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा समिति, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर में दो नवम्बर को राजेंद्र सिंह भण्डारी भू.पू. विभागाध्यक्ष, वन विभाग राजस्थान की अध्यक्षता में पुस्तक ''जंगल की कहानियां'' का लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित होगा। कार्यक्रम में पुस्तक पर व्यापक चर्चा भी की जायेगी। इसमें वन विभाग के शीर्ष अधिकारियों के साथ-साथ हिंदी जगत के अनेक ख्यातिनाम साहित्यकार भाग लेंगे।

पुस्तक परिचय :-एक जमाना था जब जंगल व शिकार की कहानियां हिंदी साहित्य का अविभाज्य हिस्सा हुआ करती थीं लेकिन देखते देखते ही जीवन की इस आपाधापी में साहित्य की यह विधा कहाँ गायब हो गयी पता ही नहीं चला। सच तो यह है कि अंग्रेजी साहित्य भी इस मार से बच नहीं सका लेखक, जो भारतीय वन सेवा केअधिकारी रहे है, ने इस पुस्तक के जरिये इस विलुप्त प्राय: विद्या को पुनर्जीवित करने का सार्थक प्रयास किया है। लेखक ने अपने लम्बे वन सेवा काल में अर्जित अनुभवों को इस पुस्तक में अत्यंत रोचक कथानक के रूप में इस प्रकार से पिरोया है कि पाठक न सिर्फ लेखक के साथ वन्यजीवों से भरपूर विभिन्न जंगलों की सैर करता महसूस करता है बल्कि स्वयं को वन्य जीवों के अवैतनिक संरक्षक के रूप में देखने लगता है।

लेखक के बारे में :-वनों व वन्य जीवन के प्रति एक विशेष आकर्षण ही था कि सुनयन शर्मा ने इंजीनियरिंग जैसे आकर्षक कैरिअर को छोड़कर वन सेवा को अपनाया व चार दशक तक वन विभाग के लिए अपनी सेवाएँ दींऔर वन्यजीव प्रबन्धन इनका पसंदीदा क्षेत्र रहा। इस दौरान इन्होंने न सिर्फ वन्यजीव प्रतिपालक के रूप में राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में वन्यजीवों के हितार्थ अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये बल्कि महावीरों की धरती मेवाड़ के जंगलों में वर्षों कार्यरत रहते हुए दुर्दांत तस्करों से इन वनों की रक्षा करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। साथ ही यहाँ बसने वाले आदिवासियों को इन जंगलों के संरक्षण के लिए प्रेरित करने का कार्य किया व समाज की मुख्य धारा से दूर बने हुए इस आदिवासी समाज का वृहद समाज से सही परिचय कराने एवं उनके जीवन दर्शन के विशिष्ट पहलुओं को सबके सामने लाने का उल्लेखनीय कार्य किया। इस हेतु लेखक ने अनेक लेखों/कहानियां की रचना की।

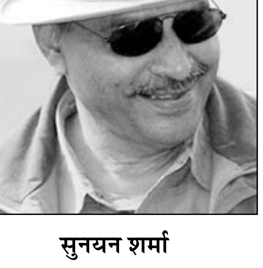

सुनयन शर्मा

वर्ष 2010 में सरिस्का से सेवानिवृत्ति पर भारतीय वन सेवा के इस अधिकारी ने सरिस्का टाइगर फाउण्डेशन के अध्यक्ष के रूप में एक दशक से अधिक तक राष्ट्रीय स्तर पर वन्यजीव संरक्षण के मुद्दों को उठाया व आज भी वह प्राण-पण से इसे आम जन की आवाज बनाने में सक्रिय है। देश-विदेश के प्रमुख वन्यजीव क्षेत्रों के अनेकानेक भ्रमण-अनुभवों के आधार पर पुस्तकें, कहानियां, लेख लिखना उनकी अभिरुचि है। अभी तक सौ से अधिक उनके लेख/कहानियां देश-विदेश के प्रसिद्द पत्र-पत्रिकाओं में प्रकशित हो चुके हैं। सरिस्का टाइगर रिज़र्व रोअर्स अगेन (इंगलिश) व इसका हिंदी रूपान्तरण (सरिस्का बाघ संरक्षित क्षेत्र में फिर से गूंजी दहाड़), केवलादेव नेशनल पार्क भरतपुर: बड्र्स इन पैराडाइज़ व वाइल्ड ट्रेज़र्स एण्ड एडवेंचर्स : ए फौरेस्टर्स डायरी आदि इनकी प्रकाशित पुस्तकें लोकप्रिय रही है। वन,वन्यजीव व पर्यावरण के हितार्थ लेखक आज भी सतत प्रयत्नशील है।

उत्कृष्ट शोधकर्ता, उद्यमी एवं वैज्ञानिक तैयार करें कृषि विश्वविद्यालय : राज्यपाल

कोटा, (निसं)। राज्यपाल एवं विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय, कोटा में संचालित विषय, छात्रों की वर्तमान स्थिति, नामांकन व्यवस्था, शैक्षणिक गुणवत्ता एवं संस्थागत व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा की।

- **कुलाधिपति बागड़े ने कृषि विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार शिक्षा में प्रगति की समीक्षा की**

राज्यपाल बागड़े ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों को केवल डिग्री प्रदान करने तक सीमित न रहकर, भविष्य के कृषि वैज्ञानिक, शोधकर्ता, उद्यमी एवं राष्ट्रनिर्माता तैयार करने की दिशा में कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय छात्रों को एक ऐसी योग्य मानव संपदा (एसेट) के रूप में तैयार करें जो समाज, राष्ट्र एवं संपूर्ण मानवधारा के हित में योगदान दे सकें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को बौद्धिक रूप से सशक्त बनाते हुए समाज, राष्ट्र एवं विश्व के लिए एक मूल्यवान संपत्ति के रूप में तैयार किया जाए। उन्होंने कहा कि छात्रों की ऊर्जा एवं ज्ञान का लाभ संपूर्ण मानव समाज तक पहुँचना चाहिए। कुलाधिपति बागड़े ने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार शिक्षा में प्रगति की समीक्षा की तथा विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शिक्षा, अनुसंधान, प्रसार, मानव संसाधन विकास, प्रशासनिक एवं वित्तीय सुधार, आधारभूत संरचना विकास, हरित पहल, उद्यमिता एवं स्टार्टअप आदि सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों की प्रशंसा की। राज्यपाल ने निर्देश दिए कि कृषि विश्वविद्यालय में अधिक से अधिक छात्रों का नामांकन सुनिश्चित किया जाए, ताकि कृषि शिक्षा का लाभ अधिकतम युवाओं तक पहुँच सकें। उन्होंने विश्वविद्यालय को प्लेसमेंट सेल स्थापित करने के निर्देश दिए।

कुलगुरू डॉ.विमला डूंकवाल ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार की मुख्य उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय कृषि शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार के लिए प्रतिबद्ध है तथा नई तकनीकों को किसानों तक पहुँचाने के लिए सतत् प्रयासरत है। निदेशक अनुसंधान डॉ.एस.के. जैन द्वारा विश्वविद्यालय की पिछले तीन वर्षों की विभिन्न गतिविधियों तथा उपलब्धियां पर आधारित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर राज्यपाल द्वारा कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय परिसर में सिंदूर का पौधा रोपण किया गया तथा कृषि तकनीकी प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा कृषि उद्यमियों से संवाद किया। संवाद में कुलाधिपति के उच्च शिक्षा सलाहकार प्रो.कैलाश सोडाणी, ओएसडी उच्च शिक्षा डॉ.कुलदीप मिश्रा, वित्त नियंत्रक, विश्वविद्यालय के सभी निदेशकगण, अधिष्ठातागण एवं परीक्षा नियंत्रक उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय की कुलसचिव मनीषा तिवारी ने राज्यपाल एवं कुलाधिपति एवं अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापन दिया।

संक्षिप्त

निरीक्षण किया

कोटपूतली। ओआरएस (ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्ट) के नाम पर बिक रहे पेय पदार्थों व पाउडर प्रोडक्ट्स के जरिये लोगों को गुमराह किया जा रहा हैं। जिसके तहत आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रक डॉ. टी. शुभमंगला, जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी, एडीएम ओमप्रकाश सहारण एवं सीएमएचओ डॉ. आशीष सिंह शेखावत के निर्देशन में गुरूवार को जिले के बहरोड़ स्थित जय मंगल मेडिकोज से रेडी टू सर्व फ्रूट बेवरेज ओरेलाईट के दो सैंपल लिये गये एवं शेष बचे हुये 417 पैक 200 एमएल के सीज किये गये। उक्त सैंपलों को प्रयोगशाला जयपुर में भिजवाया गया एवं जांच रिपोर्ट आने पर एफएसएसए एक्ट के तहत नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी। निरीक्षण के दौरान सभी खाद्य कारोबारकर्ताओं एवं विक्रेताओं को खाद्य लाईसेंस एवं खाद्य पंजीयन को डिस्प्ले करने के लिये पाबंद किया गया। अधिकारियों ने निर्देश दिया कि अगर कोई भी विक्रेता बिना लाईसेंस व्यापार करता हुआ पाया गया तो उसके विरुद्ध कार्यवाही की जायेगी। इस दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी शशिकांत शर्मा व नेहा शर्मा मौजूद रहे।

खोया पाया

मकान नं. 3-ट-30 शास्त्री नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, जयपुर का आवंटन पत्र, डिक्लेरेशन, कब्जा पत्र कहीं खो गए हैं। मिलने पर सूचित करें-कैलाश 7425022124

मै अपने कार्यालय से पांच बत्ती एम.आई. रोड के रास्ते होते हुए MLA QUARTER लाल कोठी जयपुर जा रहा था रास्ते मे जाते समय मेरे पास हस्ताक्षिरत कोरे ग्रीन पाई पेपर थे जो कि रास्ते मे कही गिर गये है मिलने पर सूचित करे- राजेन्द्र मेहता मो. 9783683661

जयपुर विकास प्राधिकरण की योजना केदार विहार के भूखण्ड संख्या एच/365 के समस्त मूल दस्तावेज (आवंटन पत्र आदि) कपिल शर्मा पुत्र श्री विनेश कुमार शर्मा के नाम से सोडाला से सी-स्कीम के मध्य जयपुर विकास प्राधिकरण जाते समय कहीं गिर गये है। मिलने पर सम्पर्क करें। कपिल शर्मा, मो.नं. 7891122222

नाम परिवर्तन

मेरे पुत्र के शैक्षणिक/अन्य दस्तावेजों में पिता का नाम गोपाल लाल टेलर अंकित है जो बदलकर स्व. गोपाल टेलर कर दिया है (गजट नोटिफिकेशन प्रकाशित है) भविष्य में प्रियांशु टेलर के पिता का नाम स्व. श्री गोपाल टेलर, माता सुमन टेलर, निवासी 43/14/09 मानसरोवर जयपुर पढा, बोला जावें।

मैं कामना देवी पत्नी श्री महेन्द्र सिंह, निवासी-222, विवेक विहार, न्यू सांगानेर रोड, सोडाला, जयपुर-302019 यह घोषणा करती हूँ कि मेरा पूर्व नाम कामना कुमारी था। मैंने विवाह उपरान्त अपना नाम कामना देवी रख लिया है। भविष्य में मुझे कामना देवी नाम से ही जाना और पहचाना जाए।

I, Mohan Thakur Son of Makhan Lal. Residing at 113-A, Sitaram Vihar, Patrakar Colony, Mansarovar, Jaipur, Rajasthan, have changed my name from Mohan to Mohan Thakur for all future purposes.

I ANIL KUMAR PRAJAPAT R/o 63, GANESH NAGAR, KRISHNAM-3 MURLIPURA, JAIPUR, RAJASTHAN has changed my Name from ANIL KUMAR PRAJAPAT to ANIL KUMAR for all future purposes.

I army no 15165822M Ex NK (MACP) Ratipal singh Tanwar S/o Jamman Singh Tanwar resident of VPO sudarpura dhadha tehsil paota district Jaipur that i want to change my wife name RAJBALA (DOB 15.03.1987)To RAJBALA KANWAR (01.04.1987) & Son name GHANSHYAM TO GHANSHYAM SINGH TANWAR vide affidavit dated 16.10.2025 before district notary paota district Kotputli behror.

I Manish Jashlani S/o Sh. Prakash Jashlani residing at Flat No. 315 Mahima Heritage, Central Spine, Vidhyadhar Nagar, Jaipur, Rajasthan-302039. I have changed my name from Manish Prakash Jashlani to Manish Jashlani. In Future I will be known by my changed name

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

‘गौमाता हमारी संस्कृति, श्रद्धा और जीवन मूल्यों का अभिन्न प्रतीक हैं’

राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने गौ-भक्तों को संबोधित किया।

- गोपाष्टमी के पावन अवसर पर सीकरी की गौशालाओं में किया गौ-पूजन एवं सेवा, गौसंवर्धन के प्रति जताई प्रतिबद्धता
- राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने सेवल मंदिर व पटवन गौशाला पहुँचकर गौ-पूजन किया

डीग भरतपुर। गौ-संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन को समर्पित पावन पर्व गोपाष्टमी के शुभ अवसर पर, राजस्थान सरकार के गृह, गौपालन, पशुपालन, डेयरी तथा मत्स्य विभाग राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने गुरुवार को सीकरी स्थित सेवल मंदिर गौशाला व पटवन गौशाला पहुँचकर गौ-पूजन किया। इस दौरान उन्होंने पूरे विधि-विधान से गौमाता की आरती की, उन्हें तिलक लगाया और अपने हाथों से गुड़ व चारा खिलाकर उनकी सेवा की।

इस भावपूर्ण अवसर पर उपस्थित गौ-भक्तों को संबोधित करते हुए गृह राज्य मंत्री बेढ़म ने कहा, गौमाता हमारी संस्कृति, श्रद्धा और जीवन मूल्यों का अभिन्न प्रतीक हैं। गौसेवा केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि यह करुणा, समर्पण और पर्यावरण संरक्षण का एक सशक्त संदेश भी है। उन्होंने कहा कि गौमाता में 33 कोटि देवी-देवताओं का वास होता है और उनकी सेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं है।

बेढ़म ने माननीय मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के कुशल निर्देशन में प्रदेश सरकार की गौसंवर्धन के प्रति प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने गौशालाओं के संचालकों और निस्वार्थ भाव से गौ-सेवा में जुटे कार्यकर्ताओं के प्रति प्रत्यक्ष कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि उनका यह समर्पण वंदनीय है।

बेढ़म ने इस बात पर भी जोर दिया कि गौ-आधारित कृषि और प्राकृतिक उत्पादों को अपनाकर हम न केवल अपनी सनातन परंपरा को मजबूत कर रहे हैं, बल्कि एक स्वस्थ और आत्मनिर्भर समाज की नींव भी रख रहे हैं, जो गौमाता के प्रति हमारी अप्रत्यक्ष कृतज्ञता को दर्शाता है।

इससे पूर्व, गौशाला पहुँचने पर गृह राज्य मंत्री का स्थानीय गौ-सेवा समिति के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा भव्य पुष्प माला पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया गया। कार्यक्रम के दौरान गौमाताओं के लिए विभिन्न प्रकार के अनाजों, पौष्टिक आहार, सब्जियों और हरे चारे का एक भव्य श्अन्नकूटश् भी सजाया गया, जो सभी के लिए आकर्षण का केंद्र रहा।

बेढ़म ने इस पावन पर्व पर सभी प्रदेशवासियों से आव्हान किया, हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम गौसंवर्धन, संरक्षण और सेवा के माध्यम से अपनी संस्कृति और सनातन परंपरा को और अधिक सशक्त बनाएंगे। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, गौशाला समिति के पदाधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी और बड़ी संख्या में श्रद्धालु व गौ-भक्त उपस्थित रहे।

‘अधिकाधिक जन सहभागिता करें सुनिश्चित’

भरतपुर। देश के प्रथम गृह मंत्री एवं लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती 150वीं राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर 31 अक्टूबर को रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर गुरुवार को अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रशासन घनश्याम शर्मा अध्यक्षता में बैठक आयोजित हुई। कार्यक्रम का आयोजन उत्साहपूर्वक एवं व्यवस्थित ढंग से किया जाए। रन फॉर यूनिटी का उद्देश्य देश की एकता, अखंडता और राष्ट्रीय भावना को सशक्त करना है। उन्होंने कहा कि सभी विभाग इसमें स्टाफ के साथ अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करायें। उन्होंने बताया कि रन फॉर यूनिटी का शुभारंभ 31 अक्टूबर को प्रातः 7 बजे बिजली घर से होगा, जो कलेक्ट्रेट, यातायात चौराहा, मानसिंह चौराहा होते हुए पुनः बिजली घर पर समाप्त होगी। इस दौड़ में जनप्रतिनिधि, जिला प्रशासन, पुलिस विभाग, विद्यार्थी, शिक्षक, खेल प्रेमी, स्काउट-गाइड, नेहरू युवा केंद्र के स्वयंसेवक, महिलाएं सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों एवं नागरिकों की सहभागिता रहेगी।

श्री ज्ञानदास आश्रम बड़नगर में रामकथा कार्यक्रम में झूम उठे श्रद्धालु

- आयोजक मंगल चंद गर्ग ने कथा के दौरान बड़नगर गौशाला के लिए 51 हजार की राशि सप्रेम भेट की

पावटा। श्री ज्ञानदास आश्रम बड़नगर में ज्ञानदास महाराज के सान्निध्य एवं मंगल चंद पवन कुमार गर्ग द्वारा आयोजित श्री राम कथा के छठे दिन गुरुवार को मध्य प्रदेश से पधारे कथा वाचक अतुल रामायणी महाराज ने ने श्री राम विवाह की कथा का वर्णन किया। कथा सुनने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। श्रद्धालुओं ने राम विवाह की कथा को सुनकर अपने आपको धन्य समझा। राम विवाह कथा सुनने के लिए श्रद्धालु सिर पर पगड़ी पहने नजर आये। कथा वाचक अतुल रामायणी महाराज ने कहा कि श्रीराम के गुरु विश्वामित्र को संदेश मिला कि राजा जनक के महल में एक शिव धनुष है, जो सीता माता ने उठा लिया था. जब यह बात राजा जनक को पता चली तो उन्होंने सभी राज्यों के राजाओं को संदेश दिया जो भी राजा इस धनुष को उठा लेगा, उसी से सीता का विवाह होगा। यह सुनकर स्वयंवर में सभी राजा शामिल हुए एवं धनुष को उठाने का प्रयास किया लेकिन उठा नहीं सके। यह सुनकर विश्वामित्र अपने शिष्य भगवान श्रीराम के साथ स्वयंवर में पहुंचे व भगवान श्रीराम ने अपने गुरू विश्वामित्र का आदेश पाकर धनुष को उठाकर तोड़ दिया।

पंडाल श्रीराम के जयकारों से गूंज उठा। सीता माता ने भगवान श्रीराम के गले में वरमाला डाल दी। इस प्रकार विवाह संपन्न हुआ। कथा वाचक रामायणी ने कहा कि श्रीराम व माता सीता समस्त जगत के कर्ताधर्ता भगवान श्री विष्णु और माता लक्ष्मी के स्वरूप थे। जिन्होंने धर्म की पुन:स्थापना और मनुष्य जाति के लिए एक आदर्शवादी व मर्यादित जीवन की नियामवली व मिशाल कायम करने के लिए धरती पर मानव रूप में अवतार लिया था।

कथा के दौरान उन्होंने कहा कि जीवन में जब भी आदर्श पति पत्नी का जिक्र होता है। आज भी प्रभु श्री राम और माता सीता का उदाहरण दिया जाता है। इस दौरान राजा जनक अयोध्या के राजा दशरथ गुरु विश्वामित्र मुनि कि उपस्थिति में राम और सीता के विवाह की सुंदर झांकी प्रस्तुत की गई। यह देख कर पंडाल में श्रद्धालुओं ने श्रीराम के जयकारे एवं सीता माता के जयकारों से पूरे पंडाल गूंजने लगा।

वहीं भगवान श्रीराम के विवाह के उत्सव में दशरथ के रूप में कथावाचक अतुल रामायणी महाराज, विश्वामित्र के रूप में ज्ञानदास महाराज व जनक के रूप में आयोजक मंगल चंद गर्ग रहे। आयोजक मंगल चंद गर्ग ने जनक की भूमिका निभाते हुए विश्वामित्र (ज्ञानदास महाराज) को 51 हजार रुपए, दशरथ (अतुल रामायणी महाराज) को 11 हजार व बड़नगर गौ शाला में 51 हजार रुपए की राशि सप्रेम भेंट की।

एकता मार्च पद यात्रा आज

कोटपूतली। लौह पुरूष पूर्व गृहमंत्री स्व. सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में शुक्रवार को जिले में सरदार/150 समारोह मनाया जायेगा। इस अवसर पर जिला मुख्यालय पर राजकीय सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटपूतली से प्रातः 07 बजे से यूनिटी मार्च पद यात्रा का आयोजन ज्योतिबा फूले चौराहा तक किया जायेगा। अभियान का मुख्य उद्देश्य युवाओं में राष्ट्रीय एकता, अखंडता व सरदार पटेल के विचारों के प्रति जागरूकता लाना हैं। जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी ने विभिन्न विभागों को तैयारियों व आयोजन के संबंध में आदेश जारी कर आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किये हैं।

त्रुटिरहित और पारदर्शी बने मतदाता सूची : एसडीएम

- राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों के साथ विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के बारे में विस्तृत चर्चा

कोटपूतली। निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी एवं एसडीएम रामावतार मीणा ने राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों के साथ विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम 2026 के बारे में विस्तृत चर्चा की। साथ ही एसआईआर के दौरान सभी राजनीतिक दलों से सहयोग करने के लिये प्रेरित किया। विधानसभा क्षेत्र कोटपूतली के लिये निर्वाचन आयोग द्वारा बीएलए प्रथम की नियुक्ति की जा चुकी हैं। विधानसभा क्षेत्र कोटपूतली की 225 भाग संख्याओं हेतु बीएलए द्वितीय की नियुक्ति की जानी हैं।

एसडीएम रामावतार मीणा ने गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम 2026 के बारे में विस्तृत चर्चा की।

एसआईआर के दौरान बूथ लेवल अधिकारी का सहयोग करवायें। जिससे मतदाता सूची पारदर्शी व त्रुटि रहित बने इसके लिये पात्र सभी व्यक्तियों का नाम जुड़वाने और अपात्र का नाम हटवाने में सहयोग करें। आगामी 04 नवंबर से बूथ लेवल अधिकारी द्वारा घर-घर जाकर मुद्रित गणना प्रपत्र दो प्रतियों में आम मतदाताओं को वितरित करेंगे और एक प्रति आवश्यक दस्तावेज के साथ प्राप्त कर ऑनलाईन प्रविष्ठि की जायेगी।

ब्लॉक स्तरीय प्रबल कार्यक्रम का आयोजन

पावटा। विद्यालयों में शिक्षा के गुणवत्ता एवं सकारात्मक परिणाम हेतु कक्षा 9 से 12 में अध्यनरत विद्यार्थियों को विभिन्न कार्यक्रमों, आयामों एवं गतिविधियों के माध्यम से सशक्त करने के उद्देश्य से ब्लॉक स्तरीय प्रबल कार्यक्रम का आयोजन पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दांतिल में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत धर्मवीर जिंदोलिया मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी पावटा के मुख्य आतिथ्य व अजय यादव प्राचार्य पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दांतिल की अध्यक्षता एवं एसीबीईओ सुरेश चंद कसाना, साक्षरता ब्लॉक कोऑर्डिनेटर गजानंद टीलावत, संतराम वर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में मां सरस्वती के समक्ष द्वीप प्रज्वलित कर की गई। जिसमें पावटा ब्लॉक के प्रत्येक उच्च माध्यमिक विद्यालयो से एक छात्र व एक छात्रा द्वारा भाग लिया गया। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी पावटा ने बताया कि यह कार्यक्रम सीधे बुनियादी क्षमताओं पर काम करने के अवसर देता है।

शाहपुरा में गोपाष्टमी पर विशेष पूजा-अर्चना की

- शाहपुरा में पशु चिकित्सा अधिकारी ने गाय को माला पहनाकर पूजा कर गुड़, केला खिलाकर गोपाष्टमी पर्व मनाया

शाहपुरा। शाहपुरा क्षेत्र में गुरूवार को गोपाष्टमी पर्व धार्मिक आस्था और भक्ति के साथ मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के ट्रोमा व राजकीय बहुउद्देश्यीय पशु चिकित्सालय में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया, जिसमें पशु चिकित्सकों समेत पशुपालकों ने भाग लिया।

ब्लॉंक वेटनरी हेल्थ ऑफिसर डॉ.प्रहलाद सहाय रैगर व वरिष्ठ पशु चिकित्साधिकारी डॉ.बनवारी लाल यादव ने बताया कि गोमाता हमारी आस्था, संस्कृति की आधार, प्रकृति, पर्यावरण और परंपरा की पोषक शक्ति है। उपस्थित लोगों को गोवंशों को सुरक्षित रखने का संकल्प दिलाया।

गोपाष्टमी पर्व के दौरान गायों को विशेष रूप से स्नान कराकर उनका श्रृंगार कर पूजा अर्चना की। पशु चिकित्साधिकारियों ने गौमाता को गुड़, चना, केला और हरा चारा खिलाकर भोग लगाया।

इस दौरान वातावरण गौमाता की जय के जयकारों से गूंज उठा।गोपाष्टमी के अवसर पर स्थानीय सभी ने गौसेवा के महत्व पर जोर दिया।

पशुधन निरीक्षक महावीर जाट, सुरजभान जाट ने कहा कि गौसंवर्धन भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है और इसका संरक्षण समाज का सामूहिक दायित्व है।

उन्होंने गौशालाओं के बेहतर रखरखाव और गोवंश के संरक्षण में सहयोग का अव्हान किया। इस मौके पर गौरक्षक लोकेश सामोता, प्रशिक्षु पशुधन निरीक्षक राहुल डूमोलिया समेत अन्य लोग मोजूद रहे।

सार्वजनिक सूचना कार्यालय नगर निगम जयपुर हैरिटेज
क्र:एफ-13( ) उपा.लैण्ड / ननिज / 2025/782 दिनांक 28.10.2025

मूल भूखण्ड सं. 438, नाहरी का नाका, जयपुर का आवंटन श्री मुंशी पुत्र श्री गन्नी खां उर्फ सलीम को दिनांक 17.08.1974 को 125 व.ग. का आवंटन पत्र जारी किया गया था। श्रीमती फरजाना गौरी पत्नि श्री अयूब खान द्वारा विक्रय पत्रों के आधार पर व शपथ पत्र प्रस्तुत कर का एवं अन्य दस्तावेजो के आधार पर आवेदन प्रस्तुत कर पट्टे हेतु आवेदन किया गया है। इस बाबत किसी भी व्यक्ति संस्था, फर्म, कम्पनी को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय (उपायुक्त लैण्ड शाखा) में प्रस्तुत करें, अन्यथ निर्धारित अवधि की समाप्ति के बाद, नियमानुसार पट्टा जारी किये जाने की कार्यवाही सम्पादित कर दी जावेगी।

उपायुक्त (लैण्ड) नगर निगम जयपुर हैरिटेज

न्यायालय अपर जिला जजी क्रम संख्या 01, गंगापुर सिटी

ललिता कुमारी बगैहरा बनाम हरखास आम वगैहरा प्रार्थना-पत्र बावत् जारी किये जाने उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र मुकदमा नं. 12/25

नोटिस बनामः हर खास आम

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि प्रार्थीगण ललिता कुमारी पत्नी स्व. मुकेश कुमार गुप्ता, आकांक्षा गुप्ता, प्रिंस कुमार गुप्ता पुत्र-पुत्रीयान स्व. मुकेश कुमार गुप्ता जाति महाजन निवासी महेन्द्र उद्योग के पास सैनिक नगर, गंगापुर सिटी ने इस न्यायालय में उपस्थित होकर मृतक मुकेश कुमार गुप्ता पुत्र जगदीश कुमार गुप्ता जाति महाजन निवासी गंगापुर सिटी की बैंक H.D.F.C. शाखा गंगापुर सिटी में स्थित उनके बचत खाते में जमा राशि व F.D.R. की राशि प्राप्ति हेतु उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र उक्त मृतक मुकेश कुमार गुप्ता की पत्नी प्रार्थीया ललिता देवी के नाम से जारी करने बाबत् प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया है। लिहाजा जिस व्यक्ति को उक्त प्रार्थना-पत्र के स्वीकार करने में कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति इस न्यायालय में नियत दिनांक 4.11.2025 को न्यायालय समय 10 A.M. पर असालतन या वकालतन उपस्थित होकर प्रस्तुत कर दे वरना वाद गुजरने मियाद उक्त दिनांक कोई आपत्ति स्वीकार नहीं होगी एवं प्रार्थना-पत्र इकतरफा में सुनकर फैसल कर दिया जावेगा। मेरे हस्ताक्षर व मोहर से आज दिनांक 8-9-2025 को जारी किया गया। आज्ञा से-

(मुहर) अपर जिला न्यायाधीश सं. 1 गंगापुर सिटी, जिला-सवाई माधोपुर (राज.)

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
www.jda.rajasthan.gov.in
क्रमांक: ज.वि.प्रा./उपा./जोन-4/2025/डी-6136 दिनांक: 28.10.2025

प्रस्तावित भू-उपयोग परिवर्तन

जयपुर क्षेत्र में स्थित जल महल हाउसिंग को-आपरेटिव सोसायटी लि. की योजना: दुर्गा विहार के भूखण्ड संख्या 1 व 2 क्षेत्रफल 984.52 वर्गगज का लीजहोल्ड से फ्रीहोल्ड आवासीय पट्टा मुरारी लाल एस्टेट प्रा. लि. जरिये निदेशक पंकज तिवारी पुत्र श्री देवेन्द्र कुमार तिवारी के पक्ष में ऑनलाइन पट्टा क्रमांक: एफ-जेडीए/जोन-4/2025 /159, दिनांक: 18.09.2025 को जारी किया गया। मुरारी लाल एस्टेट प्रा. लि. जरिये निदेशक पंकज तिवारी पुत्र श्री देवेन्द्र कुमार तिवारी के द्वारा राजस्थान नगरीय क्षेत्र भू-उपयोग परिवर्तन नियम-2010 व राजस्थान नगरीय क्षेत्र भू-उपयोग परिवर्तन (संशोधन) नियम-2021 के प्रावधानों के अन्तर्गत उक्त भूखण्ड का भू-उपयोग मास्टर/ जोनल विकास योजना में दर्शित व्यावसायिक भू-उपयोग के अनुसार आवासीय से व्यावसायिक भू-उपयोग प्रयोजनार्थ किये जाने हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखण्ड के साईट प्लान अनुसार उत्तर दिशा की ओर भूखण्ड संख्या 3, दक्षिण दिशा की ओर भूखण्ड संख्या 21 एवं पुराना घर, पूर्वी दिशा की ओर 10 फीट रास्ता एवं पश्चिमी दिशा की ओर 160 फीट रोड़ स्थित है। अतः नगरीय क्षेत्र भू-उपयोग परिवर्तन नियम-2010 व राजस्थान नगरीय क्षेत्र भू-उपयोग परिवर्तन (संशोधन) नियम-2021 के प्रावधानों के अन्तर्गत उक्त भूखण्ड का भू-उपयोग मास्टर/ जोनल विकास योजना अनुसार आवासीय से व्यावसायिक भू-उपयोग प्रयोजनार्थ किया जाना प्रस्तावित है। उपरोक्त उपान्तरण के संबंध में किसी व्यक्ति, संस्था, आदि को कोई आपत्ति हो तो, राजस्थान राज्य स्तरीय समाचार पत्र में प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस की कालावधि के भीतर आपत्ति/ सुझाव निम्न हस्ताक्षरकर्ता अथवा उपायुक्त जोन-04 को प्रस्तुत कर सकते है। यह विज्ञप्ति आज दिनांक 28.10.2025 को जारी की गयी। **हस्ताक्षर: उपायुक्त, जोन-4, जविप्रा, जयपुर।**

राजस्थान आवासन मण्डल, खण्ड-भिवाडी
क्रमांक-1430 दिनांक-30.10.2025

आवश्यक सूचना

मूलतः मकान संख्या 2/120 पुरानी कॉलोनी, राजस्थान आवासन मण्डल, भिवाडी श्री रतन लाल वेगवानी को आवंटन पत्रांक 3791 दिनांक 03.12.1986 के द्वारा आवंटित किया गया था। मण्डल द्वारा इनके पक्ष में अदेय प्रमाण पत्र संख्या 905 दिनांक 22.06.2007 को जारी किया जा चुका है। इनके द्वारा उक्त आवास की रजिस्ट्री स्वयं के पक्ष में दिनांक 10.08.2007 को उप पंजियक भिवाडी में पंजिकृत करवाई जा चुकी है। श्री रतन लाल वेगवानी की मृत्यु दिनांक 28.09.2014 को हो चुकी है। श्री राजेश कुमार व श्री पंकज जैन पुत्रान स्व. श्री रतन लाल बेगवानी ने प्रार्थना पत्र, पंजीकृत हकत्याग एवं आवश्यक प्रपत्र प्रस्तुत किए हैं कि उनके पिता का स्वर्गवास दिनांक 28.09.2014 को हो जाने के कारण उपरोक्त मकान संख्या 2/120 पुरानी कॉलोनी, राजस्थान आवासन मण्डल, भिवाडी का मृत्यु उपरान्त नाम परिवर्तन संयुक्त नाम से उन्हें किया जावें। अतः जरिये इस विज्ञप्ति यह आगाह किया जाता है कि संख्या 2/120 पुरानी कॉलानी, राजस्थान हाउसिंग बोर्ड, भिवाडी के संबंध में पिता, पुत्र, पुत्रियॉं, भाइ व अन्य किसी रिश्तेदारी को किसी प्रकार का किसी भी व्यक्ति विशेष या हितकारी को एवं आम व्यक्ति को उजर एतराज हो तो वह इस विज्ञप्ति के प्रकाशित होने के 10 दिवस में आवासीय अभियन्ता, राजस्थान आवासन मण्डल खण्ड भिवाडी में अपना एतराज लिखित में प्रस्तुत करें अन्यथा श्री राजेश कुमार व श्री पंकज जैन पुत्रान स्व. श्री रतन लाल वेगवानी मकान संख्या 2/120 पुरानी कॉलोनी, राजस्थान हाउसिंग बोर्ड, भिवाडी के पक्ष में उपरोक्त आवास के मृत्यु उपरान्त नाम परिवर्तन की कार्यवाही की जावेगी।

आवासीय अभियन्ता
राजस्थान आवासन मण्डल, खण्ड-भिवाडी

प्रारूप-5 (नियम-6)(2) देखिए
प्राधिकृत अधिकारी कार्यालय नगर पालिका मण्डल, सांभर लेक (जयपुर)
लोक सूचना
क्रमांक-नपासां/2025-26/1830 दिनांक-30.10.2025

श्री/श्रीमति सुभाष चन्द, हरीश चन्द, अशोक कुमार पुत्र/पुत्री/पत्नि श्री रामलुभाया जाति पंजाबी ने नीचे वर्णित भूमि में के अपने अधिकार आवासीय के प्रयोजन के लिए ऐसी भूमि के उपयोग के लिए पूर्ण स्वामित्व पट्टा अधिकार प्राप्त करने के लिए नगर पालिका के पक्ष में अभ्यर्पित कर दिये हैं।

नगर पालिका का नाम	आवेदक का नाम व पता	भूखण्ड का विवरण	क्षेत्रफल (वर्गगज में)
सांभर लेक	श्री/श्रीमति सुभाष चन्द, हरीश चन्द, अशोक कुमार पुत्र/पुत्री/पत्नि श्री रामलुभाया निवासी-लुहारों का मौहल्ला, सांभर लेक	लुहारों का मौहल्ला, सांभर लेक	114.28 वर्गगज

[illegible]

प्राधिकृत अधिकारी, नगर पालिका सांभर लेक

आम सूचना जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
रामकिशोर व्यास भवन, इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004
क्रमांक: F-JDA/PRN-South-2/2025/D-19
आवेदक द्वारा ऑनलाईन आवेदन क्रमांक 226932 दिनांक 12/06/2025 को निम्नांकित भूखण्ड का Issue of [Lease/ Free Hold] Deed (E-Patta) जारी करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किये गये है

आवेदक का नाम	मूल आवंटी /लीजधारक का नाम	भूखण्ड सं.	भूखण्ड क्षेत्रफल	गृ.नि.स.स./ निजी खातेदारी /जविप्रा योजना	योजना का नाम	सेवा जिसके लिए आवेदन किया गया	कार्यवाही हेतु प्रस्तुत दस्तावेज
JYOTI AGRAWAL D/o GHAN SHYAM GARG	श्री राम लखन गोयल पुत्र श्री अमर चंद गोयल	8	88.88 SQ. YARD	Cooperative	SARPANCH VATIKA-PRN Sector/ Block	Issue of [Lease/Free Hold] Deed (Epatta)	आवंटन पत्र, रसीद, साईट प्लान एवं रजिस्टर्ड दान पत्र, नाम में भिन्नता आदि

उक्त भूखण्ड का आवेदक के पक्ष में Issue of [Lease/ Free Hold] Deed (E-Patta) जारी करने पर किसी व्यक्ति, वारिस एवं संस्था को आपत्ति हो तो मय साक्ष्य के इस सूचना की प्रकाशन तिथि से 7 दिवस के भीतर jda.rajasthan.gov.in पर जाकर Objection module के माध्यम से आपत्ति online सबमिट करें, अन्यथा आपत्ति प्रस्तुत नहीं करने की दशा में उक्त भूखण्ड की नियमानुसार कार्यवाही कर दी जावेगी।

उपायुक्त, (पीआरएन-दक्षिण-2) जविप्रा, जयपुर

कार्यालय उपायुक्त सिविल लाईन जोन, नगर निगम जयपुर हैरिटेज
क्रमांक: एफ-16() सि.ला.जो./ उपा./ननिजहै/2025/1716 दि.: 27.10.2025

अनापत्ति आमंत्रण सूचना भूखण्ड संख्या 17 केशव नगर सिविल लाईन्स जयपुर का पट्टा क्षेत्रफल 396.86 व.ग. का श्रीमान अतिरिक्त जिलाधीश कृषि भूमि रूपांतरण जयपुर द्वारा श्रीमती उषा स्याल पत्नी श्री दर्शन लाल स्याल के नाम से लीज डीड जारी है। दिनांक 23.02.2013 को श्रीमती उषा स्याल पत्नी श्री दर्शन लाल स्याल द्वारा जरिये वसीयतनामा [illegible] ... नहीं है। और

उपायुक्त सिविल लाईन ज़ोन, नगर निगम जयपुर हैरिटेज

विवादकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन (आदेश 5 नियम 1 और 5)
न्यायालय उपजिला कलेक्टर साहब, स्थान-हिण्डौनसिटी
रमेश वगै. विरूद्ध चरणसिंह वगै.
दावा बाबत घोषणा खातेदारी, इन्द्राज दुरूस्ती एवं स्थाई निषेधाज्ञा
वाद संख्या 52/2023

[illegible] ... साक्ष्य के रूप में निर्भर करते हैं तो आप ऐसी दस्तावेजों को उल्लिखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह वाद ता. 30 माह 10 सन् 25 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

(मोहर) उपखण्ड अधिकारी हिण्डौन सिटी (करौली)

हेतुक दर्शित करने के लिए सूचना (साधारण प्रारूप)
न्यायालय उपजिला कलेक्टर साहब, स्थान-हिण्डौनसिटी
रमेश वगै. विरूद्ध चरणसिंह वगै.
प्रार्थना पत्र अस्थायी निषेधाज्ञा
प्रार्थना पत्र संख्या-41/2023

[illegible] ... को उल्लिखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह वाद ता. 30 माह 10 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

(मोहर) उपखण्ड अधिकारी हिण्डौन सिटी (करौली)

कार्यालय नगर निगम ग्रेटर जयपुर
(पण्डित दीनदयाल उपाध्याय भवन, लाल कोठी, टोंक रोड़, जयपुर-15)
क्रमांक :- ज.स.अ./2025/273 दिनांक :- 29/10/2025

ई-बोली सूचना सं. 05 (वर्ष 2025-26)

केन्द्र एंव राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत ठेकेदार एवं नगर निगम ग्रेटर जयपुर के पंजीकृत बोलीदाताओ से मलेरिया स्टोर, नगर निगम ग्रेटर जयपुर मुख्यालय द्वारा 02 वाटर टैंकर मय ट्रेक्टर, ड्राईवर, प्रेशर पम्प, लेबर, पानी आदि सहित किराये पर आपूर्ति हेतु बोलीयां आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत, टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख, टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम जयपुर की वेबसाईट **www.jaipurmc.org** व राजस्थान सरकार के पोर्टल **http;//sppp.raj.nic.in** पर देखी जा सकती।

UBN No. JMC2526SLOBO1867 हैं।

मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी (प्रभारी अधिकारी मलेरिया)
राज.संवाद/सी/25/12921

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
कार्यालय विश्वविद्यालय अभियन्ता

निविदा सूचना संख्या 09/2025–26

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में विभिन्न कार्यों के लिये राजकीय/अर्द्ध-राजकीय विभागों के सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से विभिन्न कार्यों की कुल संख्या **07 हेतु कुल राशि रुपये 30.18 लाख** की सील बन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। कार्य की अनुमानित लागत, निविदा देने एवं प्राप्त करने की दिनांक, समय एवं शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण की जानकारी विश्वविद्यालय की वेबसाईट **www.uniraj.ac.in** एवं **http://sppp.raj.nic.in** पर उपलब्ध है, जिनका यूबीएन नम्बर **URA2526WSOB00103 to 109 NIB: URA2526A0040** है।

विश्वविद्यालय अभियन्ता

कार्यालय अधिशाषी अभियंता (मालवीय नगर जोन)
नगर निगम, ग्रेटर जयपुर
क्रमांक :- ज.स.अ./2025/272 दिनांक :- 29/10/2025

ई-निविदा सूचना सं. - 186 से 205/2025-26

केन्द्र एवं राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत "AA" "A" श्रेणी के ठेकेदारों एवं नगर निगम जयपुर के उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत निविदादाताओं से बिड अधि0 अभि0 (मालवीय नगर जोन) से सम्बन्धित विकास कार्यो की निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत, टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख, टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण ई निविदा सूचना संख्या– 186 से 202/2025–26 दिनांक 27.10.2025 एवं निविदा सूचना संख्या– 203 से 205/2025–26 दिनांक 28.10.2025 से नगर निगम जयपुर ग्रेटर की वेबसाईट **www.jaipurmc.org** व राजस्थान सरकार के पोर्टल **http;//sppp.raj.nic.in** से अपलोड की जा सकती है। स्टेट पब्लिक प्रोक्योरमेंट पोर्टल का **Unique Bid Number (UBN) JMC2526WSOB01854, JMC2526WSOB01840 to JMC2526WSOB01845, JMC2526WSOB01855, JMC2526WSOB01846 to JMC2526WSOB01853, JMC2526WSOB01856 to JMC2526WSOB01859** तक है।

अधिशाषी अभियन्ता, (मालवीय नगर जोन) नगर निगम ग्रेटर जयपुर
राज.संवाद/सी/25/12920

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda
स्टेशन रोड़ शाखा, रिजर्व पुलिस लाईन के सामने जयपुर, राजस्थान 302001
ई-मेल: stajai@bankofbaroda.com

अचल संपत्ति के विक्रय हेतु विक्रय नोटिस
''परिशिष्ट-IV-क'' [नियम 8(6) का परन्तुक देखें]

प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8(6) के परन्तुक के साथ पठित वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुर्नगठन तथा प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अधीन अचल आस्तियों के विक्रय हेतु ई-नीलामी विक्रय नोटिस।

आम लोगों को तथा विशेष रूप से उधार लेने वाले और प्रत्याभूति-दाता को यह नोटिस दिया जाता है कि नीचे वर्णित अचल संपत्ति जो प्रतिभूत लेनदार के पास गिरवी है, का कब्जा प्रतिभूत लेनदार के प्राधिकृत अधिकारी द्वारा लिया गया है, को ''जैसी है जहां है'', ''जो है जैसी है'' और ''जितनी भी उपलब्ध है'' के आधार पर बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रतिभूत लेनदार की बकाया राशि नीचे उल्लेखित खातें की वसूली हेतु बेचा जाएगा। ऋणियों/बंधककर्ताओं/जमानतदारों/प्रतिभूत आस्तियों/बकायों/आरक्षित मूल्य/ई-नीलामी की दिनांक व समय, धरोहर राशि एवं बोली वृद्धि राशि का विवरण नीचे वर्णित है-

क्र./ लोट सं.	ऋणियों/जमानतदारों/ बंधककर्ताओं के नाम एवं पते	ज्ञात संपत्ति के साथ अचल संपत्ति का संक्षिप्त विवरण, यदि कोई हो	कुल बकाया राशि मांग पत्र के अनुसार	ई-नीलामी की दिनांक / ई-नीलामी का समय प्रारम्भ समय से समाप्ति समय	आरक्षित मूल्य / धरोहर राशि (ईएमडी) / बोली वृद्धि राशि	कब्जे की स्थिति (सांकेतिक/ वास्तविक)	संपत्ति निरीक्षण की दिनांक व समय
1.	मैसर्स गोविन्दा टेक्सटाईल फैक्ट्री पता- प्लॉट नं. 02, प्रथम तल, श्री राम विहार, सांगानेर, रीको कांटा के पास, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान 302020 रजि. पता- ए-36, न्यू सचिवालय विहार कल्याणपुरा, इंडस्ट्रीयल एरिया केशवाना, जयपुर, राजस्थान 303108 प्रोपराईटर- श्री गोविन्द राठी पुत्र श्री ओमप्रकाश राठी फ्लैट नं. बी-2206, 21वां तल, स्कॉय टैरेसेज, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान 302020 एवं 320, घन्चियों का बास महामंदिर, जोधपुर कचेरी, जोधपुर, राजस्थान 342006 एवं 32, आदर्श नगर, लाल सागर, जोधपुर, राजस्थान 342007	श्री गोविन्द राठी पुत्र श्री ओमप्रकाश राठी के नाम आवासीय सम्पत्ति जो यूनिट नं. सी-82, द्वितीय तल, टॉवर-सी, यूनिक न्यू टाऊन फेज-II, गाँव महल, जगतपुरा, तहसील सांगानेर, जिला जयपुर, राजस्थान पर स्थित है, जिसका बिल्ड अप एरिया 847.55 वर्ग फीट (कार्पेट एरिया 638.64 वर्ग फीट) है। सीमाएं- पूर्वः खुला आकाश, पश्चिमः खुला आकाश, उत्तरः फ्लैट नं. सी-92, दक्षिणः गलियारा एवं फ्लैट नं. सी-72 अन्य ऋण भारः ज्ञात नहीं	रूपये 83,97,222.74 दिनांक 26.08.2024 को बकाया एवं आगे का ब्याज व अन्य वसूली खर्चे इत्यादि।	19.11.2025 / दोपहर 02:00 बजे से सांय 06:00 बजे तक	आरक्षित मूल्य- रूपये 48,05,100/- / धरोहर राशि- रूपये 4,80,510/- / बोली वृद्धि राशि- रूपये 20,000/-	वास्तविक	14.11.2025 दोपहर 12:00 बजे से दोपहर 03:00 बजे तक

विक्रय के निबंधन और शर्तों के ब्यौरे के लिए कृपया नीचे दिए गए वेबसाइट अर्थात https://www.bankofbaroda.in/e-auction.htm एवं ऑनलाईन नीलामी पोर्टल https://baanknet.com देखें। इसके अलावा संभावित बोलीदाता प्राधिकृत अधिकारी से मोबाईल नं. 8094018326 पर संपर्क कर सकते है।

दिनांक: 29.10.2025
स्थान: जयपुर

हस्ता.
प्राधिकृत अधिकारी
बैंक ऑफ बड़ौदा

संक्षिप्त

विशाल भंडारा आज

शाहपुा । शहर के वार्ड नंबर 3 ढबासो की ढाणी में स्थित वीर तेजाजी महाराज के मन्दिर में शुक्रवार को विशाल वार्षिक भंडारा व मेला आयोजित होगा। इस दौरान श्री वीर तेजाजी महाराज के मन्दिर में रंग बिरंगी लाईटों से सजावट कर फुलों से आकर्षक झांकी सजाई जाएगी और अखण्ड ज्योत लेकर गोठियों द्वारा वीर तेजाजी महाराज के भजनों की प्रस्तुति दी जायेगी। वीर तेजाजी महाराज मन्दिर के गोठिये कैलाश चंद पलसानिया ने बताया कि विशाल भंडारे में श्रद्धालु पंगत प्रसादी ग्रहण कर व वीर तेजाजी महाराज के धोक लगाकर कर खुशहाली की दुआ करेंगे।

राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम आज

पावटा। लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 31 अक्टूबर को जिलेभर में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर पावटा स्थित महेसाणा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड दूध सागर नेशनल अमूल के अवशीतन केंद्र पर सरदार पटेल कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन के तत्वाधान में राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर एक भारत श्रेष्ठ भारत एवं बिना सहकार नहीं उद्धार के सिद्धांतों को किसानों एवं दुग्ध उत्पादकों तक पहुंचाने हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। समझ में सरदार पटेल के महान योगदान को स्मरण किया जाएगा एवं एकता व सहकार की भावना को सशक्त करने के लिए एकता दौड़/ एकता मार्च का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में क्षेत्र के सैकड़ो दुग्ध उत्पादको एवं सहकारी संगठनों के प्रतिनिधियों के भाग लेने की संभावना है।

अवैध देशी शराब के साथ दो गिरफ्तार

निवाई। सदर थाना पुलिस ने अवैध हथकड देशी शराब के साथ अलग-अलग दो जनों को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी राजेन्द्र प्रसाद ने बताया कि अवैध देशी शराब के साथ आरोपी मंगल उर्फ मंगल्या मोग्या पुत्र पूसाराम मोग्या निवासी बिजोलाव थाना नरैना जिला जयपुर हाल निवासी बालाजी का फाटक के पास चनानी को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि आरोपी के विरूद्ध लूट व नकबजनी के कई प्रकरण दर्ज है। इसी प्रकार अवैध देशी शराब जप्त कर आरोपी लखनकुमार पुत्र मांगीलाल वाल्मिकी निवासी वार्ड नम्बर 43 हीरा चौक पुलिस थाना पुरानी टोंक को गिरफ्तार किया है।

कलशयात्रा निकाली

सिरस। गांव श्योसिंहपुरा में भौमियाजी की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का पांच दिवसीय समारोह गुरुवार को भव्य कलश यात्रा के साथ शुरू हुआ। श्रद्धालु जगदीश प्रजापत व प्रभुलाल प्रजापत ने बताया की आचार्य वेदप्रकाश वेदाचार्य, सत्यनारायण शर्मा, शंकर लाल, महेंद्र शर्मा व राजेश शर्मा ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ जल से भरे कलशो की पूजा अर्चना करवाई। इसके बाद कलश यात्रा को रवाना किया। कलश यात्रा में महिलाएं नए-नए परिधान पहनकर सिर पर कलश रखकर मंगल गीत गाती हुई चल रही थी। इस अवसर पर जगदीश प्रजापत, प्रभुलाल प्रजापत, कजोड़ प्रजापत, रामसहाय प्रजापत, रामअवतार प्रजापत, पूर्व उपसरपंच कैलाश प्रजापत, हरीलाल प्रजापत, श्योजीराम प्रजापत, नेहनूराम प्रजापत, गिरिराज प्रजापत, रामफूल प्रजापत, रतन प्रजापत, रामप्रसाद प्रजापत, मुरारी, धर्मेंद्र, राकेश व कालूराम सहित कई श्रद्धालु मौजूद थे।

किसानों की समस्याओं को लेकर की चर्चा

निवाई। किसान महापंचायत के पदाधिकारियों ने नवनियुक्त उपखंड अधिकारी प्रीति मीणा को शॉल एवं गुलदस्ता भेंट किया एवं किसानों की समस्याओं को लेकर चर्चा की। महापंचायत के ब्लॉक अध्यक्ष दशरथसिंह चौहान ने बताया कि उपखंड अधिकारी प्रीति मीणा का स्वागत किया तथा सुअरों से फसल सुरक्षा सहित अन्य मांगों को लेकर चर्चा की।

लोगों ने जीमी प्रसादी

निवाई। गांव रजवास में श्री बूढला बालाजी आश्रम पर संत रामगोपाल दास महाराज के सानिध्य में अन्नकूट महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ। जिसको लेकर बालाजी की झांकी सजाई गई व बाजरा, चावल, मालपुआ, खीर व रामभाजा का भोग लगाये। इसके बाद श्रद्धालुओं को प्रसादी जिमाई गई। इस दौरान भगवान के जयकारों के साथ सुख शांति की मनोकामना की

सरकार का लक्ष्य है प्रत्येक नागरिक को मूलभूत सुविधाएं सुलभ रूप से मिलें : भूपेंद्र यादव

किशनगढ़ बास। केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने गुरुवार को किशनगढ़ बास विधानसभा क्षेत्र के गांव मीरका, हरसौली एवं मुंडावर में विभिन्न कार्यों का उद्घाटन एवं लोकार्पण किया। इसके अलावा मंत्री ने हरसौली में शहीद भूपेंद्र सिंह की प्रतिमा का अनावरण कर शहीद के परिजनों को शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया तथा अलवर सांसद खेल उत्सव 2.0 के तहत जवाहर नवोदय विद्यालय खैरथल के मैदान में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत कर खिलाड़ियों हौसला-अफजाई करते हुए विभिन्न खेलों की खेल प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, पूर्व विधायक किशनगढ़बास रामहेत सिंह यादव, जिला अध्यक्ष महासिंह चौधरी,अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) अध्यक्ष कल्याण चौबे, पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार, प्रधान कोटकासिम संता देवी, उपखंड अधिकारी किशनगढ़ बास मनीष कुमार जाटव, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी अरविंद गेट, मंडल अध्यक्ष कोटकासिम सुरेंद्र जांगिड़, लक्ष्मीकांत, रामानंद, पूर्ण सिंह मीरका सरपंच सहित प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बडी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

हरसौली में शहीद भूपेंद्र सिंह की प्रतिमा का अनावरण करते केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव साथ में पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव।

- **खैरथल मे खेल स्टेडियम के निर्माण घोषणा व मुख्य बाजार फ्लाईओवर तथा बायपास फ्लाईओवर का शीघ्र होगा काम शुरू। इंडस्ट्रियल हब के रूप में जिले को किया जाएगा विकसित। अलवर सांसद 2.0 के तहत खैल प्रतियोगिता का किया शुभारंभ**

खैरथल कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव ने खैरथल में एक आधुनिक खेल स्टेडियम के निर्माण की घोषणा करते हुए कहा कि क्षेत्र में खेल सुविधाओं के विस्तार से स्थानीय प्रतिभाओं को नई उड़ान मिलेगी।

मंत्री यादव ने अटल गौरव पथ योजना के तहत हरसौली स्थित संत दास जी मंदिर फटाक से हरसोली सरपंच निवास तक 2 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली सड़क एंव लॉर्ड्स कृष्णा स्कूल स्थित सड़क का लोकार्पण तथा 55 लाख रुपए की लागत से निर्मित उप स्वास्थ्य केंद्र मीरका तथा सांसद निधि से 10 लाख रुपए में तैयार हुए सांस्कृतिक केंद्र का उद्घाटन किया गया। बजट घोषणा 2025-26 के तहत एक करोड़ 93 लाख 500 की राशि से लोक देवता श्री 1008 कुंदन दास जी महाराज मंदिर एनीकट जीर्णोद्धार कार्य का शिलान्यास तथा मंदिर परिसर में ही लाहडौद के ग्रामीणों द्वारा बनाए जा रहे हाल का शिलान्यास एवं नांगल सालिया के ग्रामीणों द्वारा बनाए हॉल का उद्घाटन किया।

'सनातन संस्कृति में गौ माता का पवित्र स्थान'

अलवर । केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव ने आज गोपाष्टमी के अवसर पर अलवर के स्टेशन रोड स्थित सार्वजनिक गौशाला में गाय को चारा खिलाकर गो माता की पूजा-अर्चना की।

केंद्रीय वन मंत्री यादव ने कहा कि गौ माता भारतीय संस्कृति की परिचायक होने के साथ ही सनातन संस्कृति में गौ माता का पवित्र स्थान रहा है। हमारे ग्रंथों में भी कहा गया है कि गौ माता की सच्चे भाव से सेवा करने पर जीवन में विभिन्न प्रकार के कष्टों का हरण होता है। उन्होंने कहा कि गोपाष्टी, मकर संक्रांति इत्यादि त्योहारों व पर्वों पर गौ माता को चारा आदि खिलाकर जीवन में सुख-समृद्धि की कामना की जाती है। इस दौरान उन्होंने गौशाला का निरीक्षण कर वहां गौ माता के लिए की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने वहां स्थित राधा-कृष्ण मंदिर में पूजा-अर्चना कर देश व प्रदेश की खुशहाली की कामना की।

श्यालावास जेल में मानव श्रृंखला बनाकर एकता का संदेश दिया

दौसा। विशिष्ट केंद्रीय कारागृह श्यालावास में राष्ट्रीय एकता दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को देशभक्ति और एकता से ओतप्रोत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर बंदियों ने सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा के चित्र के समक्ष देशभक्ति गीतों की धुन पर 'रन फॉर यूनिटी' में भाग लिया और एक विशाल मानव श्रृंखला बनाकर एकता और अखंडता का सशक्त संदेश दिया।

जेल अधीक्षक पारस जांगिड़ ने बताया कि कारागार में निरंतर ऐसे प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिनसे बंदियों में राष्ट्रप्रेम, अनुशासन और आत्म-सुधार की भावना सशक्त हो रही है। जेलर विकास बागोरिया और डिप्टी जेलर दिलावर ख़ान के निर्देशन में यह आयोजन संपन्न हुआ। जेल अधीक्षक ने बताया कि शुक्रवार को सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस धूमधाम और गरिमा के साथ मनाया जाएगा, जिसमें देशभक्ति गीत, भाषण, एकता प्रतिज्ञा और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ होंगी। इस अवसर पर वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. अमित सैनी, शिवांगन स्पिनर्स जयपुर के निदेशक किशन सिंह भाटी, दौसा जिला उपभोक्ता होलसेल भंडार के महाप्रबंधक विमलेश सैनी, आरएसी प्लाटून कमांडर मनेश कुमार सहित कारागृह स्टाफ तथा सभी चार सौ से अधिक बंदी उपस्थित रहे।

बंदियों ने मानव श्रृंखला बनाकर देशभक्ति गीतों पर दौड़ लगाई।

अन्नकूट महोत्सव मनाया

निवाई। गुरूवार को कृषि उपज मंडी में स्थित भगवान लक्ष्मीनारायण मंदिर में अन्नकूट महोत्सव आयोजित किया गया जिसमें हजारों श्रद्धालु उमड़ पड़े। महोत्सव को लेकर मंदिर पुजारी द्वारा भगवान लक्ष्मीनारायण, शिव पंचायत और हनुमान जी की झांकी सजाकर पूजा अर्चना करके महाआरती की। इसके बाद भजनानमृत कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धालुओं ने जमकर भक्तिनृत्य किया। श्रद्धालुओं ने भगवान लक्ष्मीनारायण जी के अन्नकूट का भोग लगाकर महाआरती की। इस अवसर पर व्यापार मंडल अध्यक्ष ओमप्रकाश चंवरिया, मंदिर अध्यक्ष केदारप्रसाद खंडेलवाल, ओमप्रकाश कोलाडा, ताराचंद बोहरा, रामवतार घाटी, कपील खंडेलवाल, मुरारीलाल पंडा, राजेश नाटाणी, संजय भाणजा, दीपक गुप्ता, रोहित टोडवाल, बुद्धराम चौधरी, सुरेन्द्र बेनीवाल, शिवप्रकाश पारीक, मंडी सचिव कमलकिशोर सोनी व कुलदीप पारासर सहित कई मंडी व्यापारी व श्रद्धालु व्यवस्थाओं में जुटे रहे।

जब पार्टी ने निकाला तो दौसा ने संभाला, कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा का फिर छलका दर्द

दौसा। प्रदेश के कृषि मंत्री डॉ. किरोडीलाल मीणा दौसा विधानसभा उपचुनाव में भाई जगमोहन मीणा को मिली हार को अभी तक नही भूल पाये है, उनका ये दर्द दौसा में आयोजित कार्यक्रमो में छलक उठता है।

हुआ यूं कि बुधवार रात्रि को दौसा में डेयरी प्रीमियम खेल प्रतियोगिता का समापन समारोह आयोजित किया गया था। समारोह में भारी भीड को देखकर एक बार फिर वे भावुक हो गये तथा भावुक होने हुये कृषि मंत्री डॉ. किरोडीलाल मीणा ने कहा कि मेरे छोटे भाई जगमोहन मीणा के चुनाव हार जाने के बाद मैं पहली बार इतनी भीड़ में दौसा की जनता को देख रहा हूं। अगर मेरे साथ यह टीम नहीं लगी होती तो उपचुनाव में जमानत जब्त हो जाती.। उन्होने भाजपा द्वारा पार्टी से निकाले जाने के दौर का जिक्र करते हुये कहा कि दौसा की जनता ने ऐसे समय में मुझ पर ऐसा एहसान किया था, जब मुझे पार्टी से निकाल दिया गया था। मेरी नैया डूबने वाली थी। तब दौसा की जनता ने मुझे निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में 1 लाख 46 हजार वोटों से जिताकर संसद में भेजा था, जिसके चलते सामने राष्ट्रीय पार्टियों के उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई थी। डॉ. मीणा ने इस जीत को देश भर में एक रिकॉर्ड बताया और कहा कि वह इस एहसान को कभी नहीं भूल सकते।

- **कृषि मंत्री मीणा ने कहा कि मैं दौसा की युवा टीम का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिनके समर्थन से हालिया उपचुनाव में भाजपा की इज्जत बची रही। मेरे छोटे भाई जगमोहन मीणा के चुनाव हार जाने के बाद मैं पहली बार इतनी भीड़ में दौसा की जनता को देख रहा हूं।**

कृषि मंत्री मीणा ने कहा कि मैं दौसा की युवा टीम का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिनके समर्थन से हालिया उपचुनाव में भाजपा की इज्जत बची रही। मेरे छोटे भाई जगमोहन मीणा के चुनाव हार जाने के बाद मैं पहली बार इतनी भीड़ में दौसा की जनता को देख रहा हूं। अगर मेरे साथ यह टीम नहीं लगी होती तो उपचुनाव में जमानत जब्त हो जाती। इस युवा टीम का ही परिणाम है कि हमारी इज्जत रह गई। मेरे ऊपर सबसे ज्यादा हक दौसा के युवाओं का है।

कृषि मंत्री डॉ. मीणा ने युवाओं से पूछा कि क्या वे लाल बहादुर शास्त्री जैसा नेता बन सकते हैं? उन्होंने जय जवान, जय किसान का नारा देने वाले शास्त्री की ईमानदारी और सादगी का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री रहते हुए भी, जब लाल बहादुर शास्त्री का निधन हुआ, तो उनकी जेब में केवल 220 रुपये थे। उन्होंने बताया कि लाल बहादुर शास्त्री ने प्रधानमंत्री रहते हुए भी एम्बेसडर कार बैंक से लोन पर ली थी और उनके निधन के बाद उनकी मां को उस कार का बकाया लोन चुकाना पड़ा था। डॉ. मीणा ने युवाओं से आ ान किया कि अगर राजनीति में आना है, तो शास्त्री जी जैसा ईमानदारी का मार्ग चुनें।

कृषि मंत्री डॉ. मीणा ने सरदार वल्लभभाई पटेल को अखंड भारत का निर्माता बताते हुए कहा कि देश की आजादी के समय देश में 543 रियासतें थीं और अगर पटेल नहीं होते तो देश को एक करना संभव नहीं होता।

'आत्मनिर्भर भारत' व 'घर-घर स्वदेशी' की दिलाई शपथ

निवाई। एक निजी गार्डन में भाजपा के आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के अंतर्गत विधानसभा कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष नितिन जैन छाबड़ा ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा राष्ट्रीय सचिव डॉ अलकासिंह गुर्जर, अध्यक्षता विधायक रामसहाय वर्मा, विशिष्ट अतिथि जिला महामंत्री विष्णु शर्मा व नगर पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी ने विधिवत दीप प्रज्वलित कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

भाजपा राष्ट्रीय सचिव अलकासिंह गुर्जर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से कहा कि वर्तमान समय में देश को आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। आत्मनिर्भर भारत 2047 तक विकसित भारत बनेगा। इससे भारत दोबारा सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश बनेगा। इसके लिए हम हमारे देश के लोकल कामगारों को बढ़ावा देंगे। भारत देश सबसे ज्यादा प्राकृतिक संसाधनों वाला देश है। भारत देश में सबसे ज्यादा प्रतिभाएं हैं।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार ने आर्थिक उपनिवेश वाद को बढ़ावा दिया था। भारत देश 2014 से लगातार विकसित भारत की ओर बढ़ रहा है। विधायक रामसहाय वर्मा ने कहा कि हमें दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को भी हमारे लोकल कामगारों से ही खरीदना चाहिए।

- **भाजपा के आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के अंतर्गत विधानसभा कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया**

भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा आत्मनिर्भर भारत के लिए जगह-जगह कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान जिला महामंत्री विष्णु शर्मा व नगर पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी ने भी कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। इस दौरान राष्ट्रीय सचिव ने कार्यकर्ताओं को आत्मनिर्भर भारत हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी की शपथ भी दिलाई। कार्यक्रम में नटवाड़ा मंडल अध्यक्ष बद्री विजय, डागरथल मंडल अध्यक्ष केदार चौधरी, वरिष्ठ पार्षद परसराम कुमावत, रामविलास बलाई, शंकरलाल सैनी, जयनारायण कुमावत, मास्टर मदनलाल वर्मा, शिवदयाल हरभावंता, रामकेश मीणा, रामावतार घाटी, रामचरण पारीक, मोहित चंवरिया,जीतू विजय, सुरज्ञान गुर्जर व आसाराम डोई सहित कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

'विशेष गहन पुनरीक्षण के लिये 4 नवम्बर से घर-घर पहुंचेंगे बीएलओ'

कोटपूतली। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के द्वितीय चरण का शुभारंभ 12 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में किया गया है। इसमें राजस्थान भी शामिल है। इस संदर्भ में शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी मीडीया से बातचीत करते हुए बताया कि विशेष गहन पुनरीक्षण का उद्देश्य मतदाता सूची को अद्यतन, शुद्ध एवं त्रुटिरहित बनाना है। इससे कोई भी पात्र नागरिक छूटे नहीं और कोई भी अपात्र व्यक्ति सूची में शामिल नहीं रहे। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची के इस पुनरीक्षण में 2002 की मतदाता सूचियों के आधार पर निर्वाचक मैपिंग की जा रही है। इसके तहत राज्य में अब तक लगभग 70 प्रतिशत से अधिक मैपिंग पूर्ण हो चुकी है। इसी अनुपात में जिले में भी कार्य हुआ है।

उन्होंने बताया कि विशेष गहन पुनरीक्षण के अंतर्गत निर्वाचन विभाग द्वारा प्रत्येक मतदाता के लिए परिगणना प्रपत्र (ईएफ) तैयार किए जा रहे हैं। इनमें मतदाता के वर्तमान मतदाता सूची में दर्शाए गए आवश्यक विवरण शामिल होंगे। इसमें मतदाता का नाम, पता, विधानसभा क्षेत्र, भाग संख्या आदि पूर्व मुद्रित रहेगा। बीएलओ प्रत्येक मतदाता को परिगणना प्रपत्र वितरित करेंगे। बीएलओ 2002 की मतदाता सूची के अनुसार मतदाता को अपने नाम अथवा अपने रिश्तेदार के नाम के साथ मिलान एवं लिंक करने में सहयोग करेंगे। परिगणना प्रपत्र में मतदाता की पुरानी फोटो पूर्व मुद्रित रहेगी। इसके पास मतदाता को अपनी नवीनतम रंगीन फोटो परिगणना प्रपत्र पर चिपकानी होगी।

उन्होंने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग की वेबसाइट के सिटिजन सेन्टर कॉर्नर से मतदाता सूचियों देखी जा सकती है।

पूर्व में की गई एसआईआर के सम्पूर्ण भारतवर्ष के डाटा वेबसाइट पर उपलब्ध कराए गए है। यहां मतदाता 2002 की राजस्थान की मतदाता सूची एवं अन्य राज्यों की सूचियाँ भी देख सकते हैं। बीएलओ भरे हुए परिगणना प्रपत्र मतदाताओं से प्राप्त कर सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी (एईआरओ) को जमा कराएंगे। बीएलओ प्रत्येक मतदाता के घर तीन बार जाएंगे तथा उन्हें परिगणना प्रपत्र भरने में सहायता करेंगे। इसे मतदाता अपने स्तर पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं।

पत्रकारों से वार्ता करती जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी।

- **जिले के प्रतिष्ठित मीडिया संस्थानों के प्रतिनिधियों के साथ कॉन्फ्रेंस आयोजित कर जिला निर्वाचन अधिकारी ने दी जानकारी**

31 अक्टूबर को होगी रन फॉर यूनिटी एवं पदयात्रा

दौसा। केन्द्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय तथा युवा मामले एवं खेल विभाग के निर्देशों की पालना में सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर 31 अक्टूबर को सुबह 9 बजे से जिला मुख्यालय पर रन फॉर यूनिटी एवं पदयात्रा का आयोजन किया जाएगा। अतिरिक्त जिला कलक्टर अरविंद शर्मा ने गुरुवार को इस संबंध में अधिकारियों की बैठक ली और सफल आयोजन को लेकर दायित्व सौंपे।

अतिरिक्त जिला कलक्टर अरविंद शर्मा ने बताया कि 31 अक्टूबर को प्रात: 9 बजे जिला कलक्ट्रेट से गांधी तिराहे तक रन फॉर यूनिटी एवं पदयात्रा का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान राष्ट्रीय एकता का संदेश देते हुए नुक्कड़ नाटक मंचन एवं रंगोली भी बनाई जाएगी। अतिरिक्त जिला कलक्टर ने पदयात्रा एवं अन्य कार्यक्रम को सुव्यवस्थित ढंग से सम्पादित करने के लिए विभिन्न अधिकारियों को अलग-अलग दायित्व सौंपे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी व्यवस्थाएं बेहतर ढंग से समय पर करें।

सार-समाचार

स्थायी वारंटी को किया गिरफ्तार

फुलेरा। पुलिस मुख्यालय से वांछित अपराधियों की धरपकड़ के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत फुलेरा थाना पुलिस ने एक स्थायी वारंटी को गिरफ्तार किया है। जयपुर ग्रामीण की पुलिस अधीक्षक राशी डोगरा डूडी ने बताया कि आईजी जयपुर रेंज के निर्देश पर 1 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2025 तक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दूदू शिवलाल बैरवा एवं पुलिस उपअधीक्षक अनुपम मिश्रा के सुपरविजन में फुलेरा थानाधिकारी राजेश कुमार के नेतृत्व में हैड कॉन्स्टेबल महादेव प्रसाद, कांस्टेबल महावीर व रविदत्त की टीम ने कार्यवाही करते हुए स्थायी वारंटी बालकृष्ण वेद निवासी वार्ड नं. 7 श्यालावास खुर्द, बादीकुई जिला दौसा को गिरफ्तार किया। फुलेरा थानाधिकारी राजेश कुमार ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी को आवश्यक कानूनी कार्यवाही के बाद न्यायालय में पेश किया जाएगा।

मेडिकल असेसमेन्ट कैम्प 3 नवम्बर को

टोंक। समग्र शिक्षा अन्तर्गत समावेशित शिक्षा के तहत विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं का मेडिकल असेसमेन्ट कैम्प का आयोजन 03 एवं 04 नवम्बर को अति. जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा टोंक कार्यालय में आयोजित किया जायेगा। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी सुशीला करनानी ने बताया कि जिले के सभी विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाएं जो अंग उपकरण से वंचित है, वे अपना फक्शनल असैसमेन्ट इस कैम्प के माध्यम से करवा सकते है। यह असेसमेन्ट एलिम्को फरीदाबाद नई दिल्ली के चिकित्सकों एवं स्थानीय चिकित्सीय विशेषज्ञों द्वारा फक्शंनल द्वारा किया जायेगा, चिन्हित बालक-बालिकाओं को बाद में निःशुल्क अंग उपकरण व्हिल चेयर, ट्राई साईकिल, केलिपर्स, बैसाखी एंव हियरिंग ऐड निःशुल्क उपलब्ध करवायें जायेगे। साथ ही राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम, टोंक द्वारा विशेष आवश्यकता वाले पात्र बालक-बालिकाओं के लिए निःशुल्क यात्रा पास बनवायें जायेगें। फक्शनल असैसमेन्ट कैम्प में आने वाले योग्य बालक-बालिका व उसके साथ एक अभिभावकों को विभागीय नियमानुसार आने-जाने का वास्तविक किराये का भुगतान कैम्प स्थल पर विभाग द्वारा किया जायेगा

महिला के साथ साईबर फ्रॉड मामले में आरोपी गिरफ्तार

सांभरझील। जोबनेर थाना पुलिस ने महिला के साथ साइबर अपराध कर धोखाधड़ी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक राशि डोगरा डूडी ने बताया है कि 29.10.2025 को परिवादिया ने थाना जोबनेर में उपस्थित होकर बताया था कि मेरे फोन पर फोन आया कि आपके पिता के पैसे डालने है उनके फोन पर नही डल रहे है तो आपके लिए बोला है उसने मेरे पिता की दुकान का नाम भी बता दिया ओर परिवादीया के नम्बर पर उसने 30000 का पेसे डालने का मेसेज भेजा फोन चालू था परिवादिया ने अपने फोन को खोला ओर फोन पे नम्बर पर चेक किया उसने बोला की आपके 13000 डालने थे ओर 30000 डल गये परिवादिया ने उस पर विश्वास कर किया और जब वापस पैसे डाले तो परिवादीया के खाते से कुल 47000 रूपये निकल गये। आरोपी ने फोन पे न. 832948200 पर राशी डलवाई थी आदि पर प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया। । प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए प्रकरण में मुलजिम की गिरफ्तारी हेतु अति. पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) रजनीश पूनियां व खलील अहमद वृत्ताधिकारी वृत्त जोबनेर के निकट सुपरविजन तथा सुहैल थानाधिकारी थाना जोबनेर के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन, तकनीकी सहायता से मुल्जिम देशराज निवासी मुबारीकपुर थाना नोगांवा जिला अलवर को जिला अलवर से गिरफ्तार किया गया। प्रकरण में शामिल अन्य मुल्जिमानो की तलाश जारी है। गिरफ्तार आरोपी देशराज पुत्र अशोक कुमार जाति ओड राजपुत उम्र 20 साल निवासी मुबारीकपुर थाना नोगांवा जिला अलवर का है।

भाजपा कार्यकर्ता का सम्मेलन आयोजित

टोंक। निवाई में भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के तहत विधानसभा कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया।, बैठक में सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ भाजपा राष्ट्रीय सचिव डॉ. अलका सिंह गुर्जर, विधायक रामसहाय वर्मा, जिला महामंत्री विष्णु शर्मा और नगर पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए डॉ. अलका गुर्जर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से भी देश को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया है, इसके लिए लोकल कामगारों को बढ़ावा देना जरूरी है, क्योंकि भारत प्राकृतिक संसाधनों और प्रतिभाओं से भरपूर देश है, उन्होंने कांग्रेस सरकार पर आर्थिक उपनिवेशवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाते हुए कहा कि भारत 2014 से लगातार विकसित भारत की ओर बढ़ रहा है। इस दौरान विधायक रामसहाय वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश लगातार विकसित हो रहा है, उन्होंने कार्यकर्ताओं से दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को स्थानीय कामगारों से ही खरीदने का आग्रह किया।

'समाज की एकता ही विकास की कुंजी'

कोटपूतली। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन राजस्थान के प्रदेश महामंत्री केशव गुप्ता व समिति के कोटपूतली-बहरोड़ जिलाध्यक्ष ललित गोयल का खैरथल से जयपुर जाते वक्त कोटपूतली में समाज के लोगों द्वारा स्वागत किया गया। इस मौके पर एड. दिनेश कुमार अग्रवाल के नेतृत्व में समाज के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने दुपट्टा ओढ़ाकर व मालायें पहनाकर गुप्ता का अभिनंदन किया। केशव गुप्ता ने कहा कि समाज की सबसे बड़ी शक्ति उसकी एकता है। जब समाज संगठित होता है, तो हर क्षेत्र में प्रगति स्वाभाविक रूप से होती है। उन्होंने कहा कि हमें सदैव अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के उद्देश्यों और प्रेरणा पथ पर चलते हुये समाज के उत्थान के लिये कार्य करना चाहिये। गुप्ता ने उपस्थित जनों से आह्वान किया कि आगामी वैश्य महासम्मेलन के वार्षिक आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें और समाज की एकता व सहयोग की मिसाल पेश करें। इस दौरान प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व पार्षद रघुवीर गोयल, जिला मंत्री कुशल बिदारिया, एड. अभिषेक मोरीजावाला, सीताराम गुप्ता, गोपाल गुप्ता, आदित्य भारद्वाज समेत अन्य मौजूद रहे।

अलग-अलग मामले में 8 गिरफ्तार

निवाई। निवाई पुलिस ने अवैध बजरी खनन व परिवहन की रोकथाम को लेकर बजरी के वाहनों की रैकी करने वाले एवं शान्ति भंग के आरोप में 8 जनों को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी रामजीलाल बैरवा ने बताया कि अवैध बजरी परिवहन की रैकी करने के 7 आरोपी एवं लडाई-झगडा करने के आरोप में एक जनें को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि अवैध बजरी के परिवहन की रैकी करने के आरोप में धर्मराज गुर्जर निवासी ककराज कलां थाना बरोनी, गणेश गुर्जर निवासी माणक चौक पुरानी टोंक, शम्भुदयाल बैरवा निवासी गोतोड थाना मित्रपुरा जिला सवाई माधोपुर, आशाराम गुर्जर व ईश्वरलाल गुर्जर दोनों निवासी भांची थाना बरोनी, धारासिंह जाट निवासी भांवती, रत्तिराम गुर्जर निवासी रजवास हाल निवासी कीर कोलोनी निवाई को गिरफ्तार किया है। इसी प्रकार स्थायी वारण्टी पानमल माली निवासी सिविल लाईन मोदी की चौकी टोंक को गिरफ्तार किया है।

बनास नदी के तेज बहाव में फंसी ट्रैक्टर-ट्रोली

टोक। बीसलपुर बांध के दो गेट खोलने के बाद बांध से 24040 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है, जिसके कारण बनास नदी में जलस्तर बढ़ गया है। इस दौरान गुरुवार को राजमहल रपटे पर एक ट्रैक्टर-ट्रॉली तेज बहाव में फंस गई, जिससे ट्रैक्टर में सवार दो युवकों ने किसी तरह अपनी जान बचाई और तैरकर बाहर आए, हांलाकी ट्रैक्टर-ट्रॉली अभी भी नदी में फंसी हुई है।

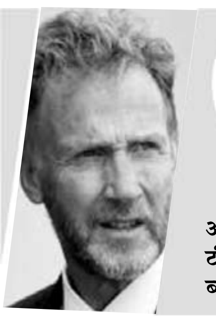

भारत के पास अधिक संसाधन और प्रभाव है और आईसीसी में उनका दबदबा बढ़ गया है। मैं खुश हूं कि मैं अब वहां नहीं हूं, क्योंकि अब यह स्थिति बहुत अधिक राजनीतिक हो गई है।
- क्रिस ब्रॉड

आईसीसी मैच रेफरी, भारतीय टीम और प्रबंधन को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी करीना कपूर

करीना कपूर खान ने यूनिसेफ-आईसीसी साझेदारी और 'प्रॉमिस फॉर चिल्ड्रन' अभियान के तहत हर बच्चे के लिए समान अवसरों की वकालत की। यह अभियान नागरिकों को भारत में बच्चों के अधिकारों की रक्षा और उन्हें बढ़ावा देने के लिए एक वादा करने के लिए प्रेरित करता है। करीना कपूर खान ने कहा, यूनिसेफ इंडिया की राष्ट्रीय राजदूत के रूप में, मैं आईसीसी के साथ इस साझेदारी का हिस्सा बनकर सम्मानित महसूस करती हूं, जो बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए क्रिकेट प्रेमियों से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम है।

क्या आप जानते हैं ?... भारतीय क्रिकेट के कुछ प्रमुख रिकॉर्डों में अंतरराष्ट्रीय शतक, रोहित शर्मा के तीन दोहरे शतक, विराट कोहली के 51 एकदिवसीय शतक, और वीरेंद्र सहवाग के दो टेस्ट तिहरे शतक शामिल हैं।

आरसीए की देखरेख में जयपुर के एसएमएस में ही होने चाहिए आईपीएल के मैच : कुमावत

आरसीए की अकादमी के पीछे खाली जमीन पर फाइव स्टार होटल की भी प्लानिंग, स्टेडियम की क्षमता 50 हजार बढ़ाने का प्रस्ताव दिया

जयपुर, 30 अक्टूबर। जयपुर में राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के अंदर सियासी खींचतान जारी है। इस बीच जयपुर में ही इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले करवाने और सवाई मानसिंह स्टेडियम की दर्शक क्षमता बढ़ाने की तैयारी शुरू हो सकती है।

कन्वीनर दीनदयाल कुमावत ने बताया कि 28/8/2025 को आरसीए ने खेल परिषद को प्रस्ताव भेजा था, जिसमें एसएमएस स्टेडियम के नॉर्थ और साउथ पवेलियन की हालत सुधारने के साथ साथ टूटी हुई कुर्सियों को ठीक करने, एयरकंडीशन लगाने ओर दर्शक क्षमता 25 हजार से बढ़ाकर 75 हजार करने और आरसीए अकादमी परिसर के साथ साथ खाली जमीन पर 200 कमरों वाले फाइव स्टार होटल बनाने की योजना शामिल है। दोनों प्रोजेक्ट्स पर लगभग 150- 200 करोड़ रुपए का खर्च आने का अनुमान लगाया जा रहा है जिसकी जिम्मेदारी आरसीए खुद उठाने को तैयार है। इसके बदले आरसीए ने खेल परिषद से 50 साल के लिए एमओयू करने का प्रस्ताव रखा है। हमारी सिर्फ एक ही शर्त है कि आरसीए की देखरेख में जयपुर के एसएमएस में ही होने चाहिए आईपीएल के मैच। सभी 33 क्रिकेट एसोसिएशन के सचिवों की भागीदारी आईपीएल मैचों में शामिल होने चाहिए।

आईपीएल को लेकर पहले भी हुई थी कन्ट्रोवर्सी

इस साल जयपुर में इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले को लेकर काफी कन्ट्रोवर्सी हुई थी। तत्कालीन एडहॉक कमेटी कन्वीनर जयदीप बिहाणी ने राजस्थान रॉयल्स पर मैच फिक्सिंग के आरोप लगाने के साथ ही खेल परिषद पर आईपीएल के आयोजन को छीनने का आरोप लगाए थे। वहीं खेल परिषद से सवाई मानसिंह स्टेडियम के एमओयू को लेकर हुए विवाद के बाद मौजूदा एडहॉक कमेटी कन्वीनर दीनदयाल कुमावत भी जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम से रणजी मुकाबलों को शिफ्ट कर राजसमंद के मिराज स्टेडियम में ले गए। इसके साथ ही उन्होंने पूर्व में आईपीएल के दौरान हुए कामकाज में भी घोटाले के आरोप लगाए थे, जिसको लेकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड और राजस्थान रॉयल्स प्रबंधन इंडियन प्रीमियर लीग के जयपुर वेन्यू को लेकर मंथन कर रहा है।

एडहॉक कमेटी के कन्वीनर ओर सदस्य पिंकेश जैन, धनंजय सिंह खींवसर, आशीष तिवाड़ी और मोहित यादव की मंशा के आधार पर जयपुर में आईपीएल मैचों का आयोजन प्राथमिकता होनी चाहिए। फिलहाल स्टेडियम की दर्शक क्षमता 25,000 है।

डीडी कुमावत के अनुसार पीएनबी बैंक की शर्त के अनुसार चौप स्टेडियम के काम अब तब ही शुरू हो सकेगा जब अनिल अग्रवाल के 260 करोड़ रुपए देने के बाद ही लोन की बकाया राशि देगा। अनिल अग्रवाल ने अब तक 40 करोड़ रुपए दे दिए हैं।आरसीए की ओर से दिल्ली रोड पर बन रहे नए क्रिकेट स्टेडियम की स्थिति फिलहाल अनुकूल नहीं है, जबकि एसएमएस स्टेडियम में बेहतर लोकेशन और इन्फ्रास्ट्रक्चर मौजूद है। हम चाहते हैं कि सरकार के नेतृत्व में जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में ही आईपीएल मुकाबले हर बार से बेहतर स्तर पर हों।

ऑस्ट्रेलिया को 5 विकेट से हराकर भारत महिला विश्वकप के फाइनल में, जेमिमा ने 127 रन बनाए

मुम्बई, 30 अक्टूबर। भारत ने विमेंस वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल में प्रवेश कर लिया है। टीम ने गुरुवार को 7 बार की चैंपियन ऑस्ट्रेलिया को 5 विकेट से हराया। पाटिल स्टेडियम में 339 रन का टारगेट भारतीय टीम 48.3 ओवर में 5 विकेट पर चेज कर लिया। जेमिमा रॉड्रिग्ज 127 और अमनजोत कौर 15 रन बनाकर नाबाद लौटीं। ऋचा घोष 26 रन बनाकर आउट हुईं। उन्हें एनाबेल सदरलैंड ने किम गार्थ के हाथों कैच कराया। उन्होंने हरमनप्रीत कौर (89 रन) को भी आउट किया। स्मृति मंधाना 24 और शेफाली वर्मा 10 रन बनाकर आउट हुईं। दोनों को किम गार्थ ने पवेलियन भेजा। दीप्ति शर्मा (24 रन) रनआउट हो गईं। ऑस्ट्रेलिया की ओर से फीबी लिचफील्ड ने 119, एलिस पेरी ने 77 और एश्ले गार्डनर ने 63 रन बनाए। भारत के लिए स्पिनर श्री चरणी और दीप्ति शर्मा ने 2-2 विकेट झटके। क्रांति गौड़, अमनजोत कौर और राधा यादव को 1-1 विकेट मिला। 3 बैटर्स रन आउट भी हुईं।

शाह और आईओसी अध्यक्ष कोवेंट्री ने ओलंपिक में क्रिकेट की वापसी पर चर्चा की

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर। आईसीसी अध्यक्ष जय शाह ने इस सप्ताह की शुरुआत में स्विट्जरलैंड में आईओसी सत्र के दौरान आईओसी अध्यक्ष क्रिस्टी कोवेंट्री से मुलाकात की और 2028 लॉस एंजेलिस ओलंपिक की राह और ओलंपिक खेलों में क्रिकेट की वापसी पर चर्चा की। उन्होंने अब तक हुई प्रगति और ओलंपिक आंदोलन के विकास में क्रिकेट की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार-विमर्श किया। जय शाह ने एक्स पर पोस्ट किया, " 2028 लॉस एंजेलिस ओलंपिक की राह और ओलंपिक खेलों में क्रिकेट की वापसी पर हमारी चल रही चर्चा को जारी रखने के लिए आईओसी अध्यक्ष क्रिस्टी कोवेंट्री से मिलकर खुशी हुई। हमने अब तक हुई प्रगति और ओलंपिक आंदोलन के विकास में क्रिकेट की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार-विमर्श किया।"

यह बहुत खास जीत है, हम सब उत्साहित है : वोल्वार्ट

गुवाहाटी, 30 अक्टूबर। दक्षिण अफ्रीका की कप्तान और अपनी शतकीय पारी से प्लेयर ऑफ द मैच बनी लौरा वोल्वार्ट ने इंग्लैंड के खिलाफ महिला विश्व कप सेमीफाइनल में बुधवार को जीत हासिल करने के बाद इस जीत को बेहद ख़ास करार दिया और कहा कि इससे पूरी टीम उत्साहित हो गयी है। वोल्वार्ट ने जीत के बाद कहा,यह बहुत ख़ास है। हर कोई बहुत उत्साहित है। हम इसी टीम के ख़िलाफ पिछले दो सेमीफ़ाइनल में हार का सामना कर चुके हैं, जो वाकई बहुत दुखद है, इसलिए आज रात जीत हासिल करना हमारे ग्रुप के लिए बहुत मायने रखता है। मुझे हमारे खेलने के तरीके पर बहुत गर्व है। यह पूछने पर कि ग्रुप मैच में क्या 69 रनों पर ऑल-आउट होने की यादें ताज़ा हो गईं?, वोल्वार्ट ने कहा, थोड़ी बहुत जरूर हुईं। मुझे लगता है कि वही विरोधी टीम, वही मैदान, आपका दिमाग अपने आप ही उस मैच की यादों में खो जाता है। लेकिन सच कहूँ तो, आज रात टॉस हारना दुनिया की सबसे बुरी बात नहीं थी। हमें बस यही लगा कि सेमीफ़ाइनल में रन बनाना ही सबसे अहम होगा। मुझे यकीन नहीं था कि 320 रन का स्कोर काफ़ी होगा - पिच अंत में काफ़ी सपाट लग रही थी - लेकिन हमारे गेंदबाज़ों ने जिस तरह से अच्छा प्रदर्शन किया, उसके लिए उन्हें श्रेय जाता है। यह अद्भुत था।

सिंदूर और रक्षिखा ने पिकलबॉल विश्वकप में रजत पदक जीता

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर। टीम इंडिया ने अमेरिका के फ्लोरिडा में प्रतिष्ठित पिकलबॉल विश्व कप 2025 में पोडियम स्थान हासिल कर लिया है। सिंदूर मित्तल और रक्षिखा रवि की जोड़ी ने बेहद प्रतिस्पर्धी महिला ओपन डबल्स 5.0 वर्ग में रजत पदक जीता। वैश्विक चैंपियनशिप में उनके शानदार प्रदर्शन ने भारत को पिकलबॉल के अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर मजबूती से स्थापित कर दिया है। पिकलबॉल एक तेज़ी से बढ़ता खेल है जिसमें टेनिस, बैडमिंटन और टेबल टेनिस के तत्व शामिल हैं। बैडमिंटन के आकार के कोर्ट पर, मजबूत पैडल और छिद्रित गेंद के साथ खेला जाने वाला यह खेल अपनी सुगमता और प्रतिस्पर्धी तीव्रता के लिए जाना जाता है। सिंदूर मित्तल, जो स्वच्छ ऊर्जा समूह अवादा ग्रुप की उपाध्यक्ष भी हैं, ने इस खेल और अपने पेशेवर जीवन के बीच तालमेल पर प्रकाश डालते हुए कहा, "पिकलबॉल एक ऐसा खेल है जो चपलता, रणनीति, दृढ़ संकल्प और टीम वर्क का जश्न मनाता है; ये गुण अवादा में हमारे कॉर्पोरेट दर्शन का अभिन्न अंग हैं। पिकलबॉल जैसे उभरते खेल में विश्व मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करना और पदक जीतना एक अद्भुत अनुभूति है।"

क्या भारतीय स्पिन आक्रमण की चुनौती से निपट पाएगा ऑस्ट्रेलिया?

मेलबर्न, 30 अक्टूबर। कैनबरा में टी20 सीरीज की शुरुआत उम्मीदों के अनुरूप नहीं रही और पहला मैच बारिश की भेंट चढ़ गया लेकिन मेलबर्न में एक ज़ोरदार मुकाबला होने की उम्मीद है और इस मुकाबले के लिए 90 हज़ार से ज़्यादा दर्शकों के पहुंचने की भी संभावना है। एक ऐसा वेन्यू जहां पर भारत को अपार समर्थन मिलता रहा है, जिसकी झलक हमें पिछली टेस्ट सीरीज और टी20 विश्व कप 2022 के दौरान भी देखने को मिली थी।

कैनबरा में भले ही 9.4 ओवर का खेल हुआ लेकिन सूर्यकुमार यादव और शुभमन गिल ने भारत को एक बड़े स्कोर की ओर अग्रसर कर दिया था और दोनों ही बल्लेबाज बेहतरीन लय में नजर आ रहे थे। ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी भी मजबूत है लेकिन भारत की स्पिन तिकड़ी मेलबर्न में उनके लिए चुनौती का सबब बन सकती है।

टिम डेविड ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में एक भी अंतर्राष्ट्रीय मैच नहीं खेला है। हालांकि इंग्लैंड के ख़िलाफ़ मेलबर्न में खेले जाने वाले टी20 विश्व कप 2002 के मुकाबले का वह हिस्सा थे लेकिन वो मैच बारिश की भेंट चढ़ गया था। डेविड ने बीबीएल में इस मैदान में नौ पारियों खेलते हुए 16.44 की औसत से 148 रन बनाए हैं।

हालांकि अगर इस रिकॉर्ड को बदलना है तो इससे बेहतर मौका नहीं हो सकता। डेविड इस सीरीज में नंबर चार पर बल्लेबाज़ी करते नजर आ सकते हैं और दूसरे मुकाबले में ऑस्ट्रेलियाई खेमे को उनसे काफ़ी उम्मीदें होंगी। स्पिन के ख़िलाफ़ ऑस्ट्रेलिया के खेल में सुधार हुआ है लेकिन भारत का स्पिन गेंदबाजी आक्रमण उनके लिए चुनौती का सबब जरूर बन सकता है। वरुण चक्रवर्ती इस प्रारूप में दुनिया के शीर्ष गेंदबाज़ हैं लेकिन सबसे छोटे प्रारूप में उनका ऑस्ट्रेलिया के ख़िलाफ़ खेलना बाक़ी है। यह देखना दिलचस्प होगा कि मिचेल मार्श और ट्रैविस हेड के ख़िलाफ़ शुरुआत में उनका इस्तेमाल किया जाता है या नहीं।

भारत और ऑस्ट्रेलिया दोनों ही टीमें मेलबर्न में जीत हासिल कर पांच मैचों की सीरीज में बढ़त बनाने के इरादे से उतरेंगी। इस मुकाबले से संबंधित टीम न्यूज, संभावित और पिच रिपोर्ट पर एक नजर डालते हैं।

टीम न्यूज और संभावित

एशेज की तैयारी शुरू करने से पहले यह आख़िरी मैच होगा जिसके लिए जॉश हेजलवुड उपलब्ध होंगे। सीन एबट पहले तीन मैचों के लिए उपलब्ध हैं, ऐसे में ऑस्ट्रेलिया दूसरे मैच में उन्हें मौका देने पर विचार कर सकता है।

ऑस्ट्रेलिया (संभावित 11) : ट्रैविस हेड, मिचेल मार्श (कप्तान), जॉश इंगलिस (विकेटकीपर), टिम डेविड, 5मिचेल ओवेन, मार्कस स्टॉयनिस, जॉश फ़िलिपे, ज़ेवियर बार्टलेट/सीन एबट, नेथन एलिस, मैट कुनेमन, जॉश हेजलवुड।

पहले मैच में अधिक खेल न हो पाने को देखते हुए भारत में बदलाव की संभावना कम है। हालांकि मेलबर्न की परिस्थितियों को देखते हुए वह अतिरिक्त तेज गेंदबाज़ के रूप में अर्शदीप सिंह को एकादश में शामिल करने पर विचार कर सकते हैं। नीतीश कुमार रेड्डी पहले तीन टी20 मैचों से बाहर हैं।

भारत (संभावित 11) : अभिषेक शर्मा, शुभमन गिल, सूर्यकुमार यादव (कप्तान), तिलक वर्मा, संजू सैमसन (विकेटकीपर), शिवम दुबे, अक्षर पटेल, हर्षित राणा, कुलदीप यादव, वरुण चक्रवर्ती, जसप्रीत बुमराह।

पिच और परिस्थितियां

निराशाजनक तौर पर शुक्रवार का दिन एक बार फिर ऐसा दिन हो सकता है जब हमें आसमान की ओर देखना पड़े। दिन भर बारिश होने के साथ ही तूफ़ान की भी आशंका है। मेलबर्न एक हाई स्कोरिंग वेन्यू रहा है और बीबीएल में यहां काफ़ी रन बनते हैं।

अहम तथ्य और आंकड़े

भारत ने मेलबर्न में पिछले छह में से चार टी20 जीते हैं। बुमराह टी20 में 100 विकेट लेने से चार विकेट दूर हैं। मार्श टी20 में दो हज़ार रन से चार रन दूर हैं जबकि सैमसन हज़ार टी20 रन से सात और तिलक 38 रन दूर हैं।

अभिषेक नायर होंगे केकेआर के मुख्य कोच

कोलकाता, 30 अक्टूबर। पूर्व ऑलराउंडर अभिषेक नायर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 में कोलकाता

नाइट राइडर्स (केकेआर) का मुख्य कोच होंगे। सूत्र के अनुसार अभिषेक नायर को इस भूमिका के लिए तैयार है और जल्द ही इस बारे में अधिकारिक धोषणा की जायेगी। वह चंद्रकांत पंडित की जगह लेंगे। राष्ट्रीय पुरुष टीम में गौतम गंभीर की अगुवाई वाले कोचिंग दल का हिस्सा रहने के बाद नायर को पिछले सत्र में केकेआर ने वापस अपने साथ जोड़ा था। वह चंद्रकांत पंडित की अगुवाई वाले कोचिंग दल का हिस्सा थे। हाल ही में नायर को विमेंस प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) में यूपी वॉरियर्ज का मुख्य कोच नियुक्त किया गया था। चंद्रकांत पंडित केकेआर से अलग होकर घरेलू सर्किट में मध्य प्रदेश में वापस आ चुके हैं। मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन में क्रिकेट निदेशक है। 42 वर्षीय नायर ने वर्षों तक मुंबई के लिए खेला वहीं इस हरफनमौला खिलाड़ी ने 2009 में भारत के लिए तीन एकदिवसीय मैच भी खेले। हालांकि जब कोचिंग की बात आती है तो नायर के पास इस संबंध में बेहतद अनुभव है। 2019 में आईपीएल से संन्यास लेने से पहले नायर को 2018 में केकेआर अकादमी में लीड कोच नियुक्त किया गया था और इसके बाद उन्होंने मुख्य टीम में बतौर सहायक कोच जगह ली। उन्होंने सीपीएल 2022 में त्रिनबागो नाइट राइडर्स के मुख्य कोच की भूमिका भी अदा की थी।

सितम्बर पोलो सीजन : टीम जयपुर यूनियर्स और ग्रेट ब्रिटेन जूनियर्स के बीच होगा मुकाबला

जयपुर में 1 को खेला जाएगा अंडर-16 जूनियर इंटरनेशनल मैच

जयपुर, 30 अक्टूबर। राजस्थान पोलो क्लब ग्राउंड में 1 नवंबर, शनिवार को अंडर-16 जूनियर इंटरनेशनल मैच खेला जाएगा। यह मुकाबला शाम 4 बजे से जयपुर जूनियर्स और ग्रेट ब्रिटेन जूनियर्स के बीच होगा। टीम जयपुर जूनियर्स से कुलदीप सिंह (टीम का नेतृत्व करेंगे), अयान अली, हर्षोदय सिंह और आर्यमन सिंह खेलेंगे। वहीं, ग्रेट ब्रिटेन जूनियर्स टीम के खिलाड़ियों में विल एमर्सन (टीम का नेतृत्व करेंगे), अथर्व सिंह, कोरी मार्टिन और जॉर्ज फॉल शामिल हैं। यह मैच युवा खिलाड़ियों में पोलो के खेल को बढ़ावा देने, उभरते प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रोत्साहन और मंच प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। पिछले वर्ष इस मैच को मिली उत्साहजनक प्रतिक्रिया को देखते हुए, इस वर्ष यह मैच पुन: आयोजित हो रहा है।

एनटीपीसी नेशनल रैंकिंग आर्चरी टूर्नामेंट में जूनियर वर्ग की प्रतियोगिताएं हुई प्रारंभ

जयपुर, 30 अक्टूबर। जगतपुरा शूटिंग रेंज स्थित तीरंदाजी एरीना पर चल रहे एनटीपीसी नेशनल रैंकिंग तीरंदाजी टूर्नामेंट में आज जूनियर वर्ग की स्पर्धाओं का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान तीरंदाजी संघ के अध्यक्ष दीपेंद्र सिंह ने की,

जबकि मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय तीरंदाजी संघ के संयुक्त सचिव संदीप जायसवाल उपस्थित रहे। राजस्थान तीरंदाजी संघ के महासचिव सुरेंद्र सिंह गुर्जर ने बताया कि आज पहले दिन रिकर्व और कंपाउंड वर्ग के बालक-बालिकाओं के रैंकिंग राउंड मुकाबले आयोजित किए गए। खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए उच्च स्कोर हासिल किए। रैंकिंग राउंड के आधार पर शीर्ष 16-16 खिलाड़ी कल आयोजित होने वाले एलिमिनेशन राउंड में प्रवेश करेंगे। कार्यक्रम में दिनेश कुमावत, परमेश्वर चौधरी, सुनील चौधरी, राजीव आचार्य, सोमेश शर्मा सहित अनेक खेल पदाधिकारी एवं प्रशिक्षक उपस्थित रहे। देश के विभिन्न राज्यों से आए जूनियर तीरंदाजों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए रोमांचक और कड़ी टक्कर वाले मुकाबले खेले।

अफगानिस्तान ने टी-20 में जिम्बाब्वे को 53 रन से हराया

हरारे, 30 अक्टूबर। इब्राहिम जदरान (52), अजमतउल्लाह ओमरजई (27 रन और तीन विकेट) और मुजीब उर रहमान (चार विकेट) के शानदार प्रदर्शन के दम पर अफगानिस्तान ने पहले टी-20 मुकाबले में जिम्बाब्वे को 53 रनों से हरा दिया है। इसी के साथ अफगानिस्तान ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है। अफगानिस्तान के 181 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी जिम्बाब्वे को अजमतुल्लाह उमरजई और मुजीब उर रहमान की जोड़ी ने 127 रनों पर ऑल आउट कर सफेद गेंद सीरीज में विजयी शुरुआत की। बल्लेबाजी करने उतरी जिम्बाब्वे की शुरुआत बहुत खराब रही जब मुजीब ने सिर्फ दूसरे ओवर में लगातार गेंदों पर दो विकेट झटक लिये। इसमें अनुभवी ब्रेंडन टेलर का बड़ा विकेट भी शामिल था। इसके बाद ओमरजई ने मेजबान टीम को संभलने का मौका नहीं दिया और अगले ही ओवर में दो विकेट लेकर जिम्बाब्वे का स्कोर 25 रन पर चार विकेट कर दिया।

खुशी, अहाना और चंद्रिका ने जीते स्वर्ण पदक

मनामा, 30 अक्टूबर। भारत के युवा मुक्केबाजी दल ने बहरीन में आयोजित तीसरे एशियाई युवा खेलों 2025 में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। उन्होंने तीन स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य पदक जीतकर महाद्वीपीय स्तर पर युवा मुक्केबाजी में देश का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। सुबह के सुनहरे सत्र में, खुशी चंद (46 किग्रा) ने चीन की लुओ जिनक्सिउ पर 4:1 से जीत हासिल करके भारत का खाता खोला। उन्होंने रिंग पर बेहतरीन नियंत्रण और सटीकता का प्रदर्शन किया। अहाना शर्मा (50 किग्रा) ने भी शानदार जीत दर्ज की। उन्होंने कोरिया गणराज्य की मा जोंग हयांग के खिलाफ पहले राउंड में रेफरी द्वारा मुकाबले को रोकने के लिए आरएससी का सहारा लिया। इसके बाद चंद्रिका भोरेशी पुजारी (54 किग्रा) ने उज़्बेकिस्तान की मुहम्मदोवा कुमरिनिसो को 5:0 के निर्णायक मुकाबले में हराकर भारत की स्वर्णिम हैट्रिक पूरी की। पदकों की संख्या और भी बढ़ सकती है: हरनूर कौर (66 किग्रा) और अंशिका (80 किग्रा) शाम के सत्र में अपने-अपने फाइनल में प्रतिस्पर्धा करेंगी, जहां भारत की नजर स्वर्ण पदकों का रिकॉर्ड बनाने पर होगी। लड़कों के फाइनल में, लैंचेनबा सिंह मोइबुंगखोंगबाम (50 किग्रा) ने जबरदस्त कौशल और जज्बे का प्रदर्शन किया, लेकिन कज़ाकिस्तान के नूरमाखान झुमगली के खिलाफ कड़े मुकाबले में स्वर्ण पदक से चूक गए और उन्हें रजत से संतोष करना पड़ा इससे पहले, अनंत देशमुख (66 किग्रा) ने कांस्य पदक जीतकर भारतीय दल के शानदार अभियान का समापन किया था।

मेलबर्न में गेंद लगने से किशोर क्रिकेटर की मौत

सिडनी, 30 अक्टूबर। ऑस्ट्रेलिया में एक किशोर क्रिकेटर की मेलबर्न में अभ्यास सत्र के दौरान गेंद लगने से मौत हो गई। 17 साल का बेन ऑस्टिन मंगलवार को फर्न्ट्री गली वैली ट्यूर रिजर्व में हेलमेट पहनकर क्रिकेट नेट्स में अभ्यास कर रहा था कि इसी दौरान एक ऑटोमैटिक बॉलिंग मशीन से निकली गेंद उसके सिर या गर्दन पर लग गई। बेन ऑस्टिन को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान बुधवार को उनकी मौत हो गई। फर्नट्री गली क्रिकेट क्लब ने गुरुवार सुबह जारी एक बयान में ऑस्टिन के मौत की पुष्टि की। सोशल मीडिया पोस्ट में क्रिकेट क्लब ने उसके परिवार और दोस्तों और उन सभी लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहा, मुझे पता है कि यह खबर हमारे समुदाय पर कितना गहरा असर डालेगी और हम अपने क्लबों और क्रिकेट परिवार को हर तरह की मदद देंगे। उल्लेखनीय है कि यह घटना 2014 में ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर फिलिप ह्यूज की मौत के ठीक एक दशक बाद हुई है, जिनकी शेफील्ड शील्ड में बल्लेबाजी करते समय गर्दन पर गेंद लगने से मौत हो गई थी।

तनुष कोटियान ने झटके चार विकेट, दक्षिण अफ्रीका-ए 299/9

बेंगलुरु, 30 अक्टूबर। तनुष कोटियान (चार विकेट) और मानव सुथार (दो विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत इंडिया ए ने गुरुवार को पहले अनौपचारिक टेस्ट के पहले दिन स्टंप के समय 299 के स्कोर पर दक्षिण अफ्रीका ए के नौ विकेट झटक कर मैच पर अपनी पकड़ बना ली है। आज यहां इंडिया

ए ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी दक्षिण अफ्रीका ए की शुरुआत अच्छी नहीं है। उसने चौथे ही ओवर में छह रन के स्कोर पर लेसेगो सेनोक्वाने (शून्य) का विकेट गंवा दिया। उन्हें अंशुल काम्बोज ने आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये ज़ुबैर हमजा ने जॉर्डन हरमन के साथ दूसरे विकेट के लिए 132 रनों की साझेदारी की। 35वें ओवर में गुरनूर बरार ने ज़ुबैर हमजा को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। ज़ुबैर हमजा ने 109 गेंदों में नौ चौके और एक छक्का लगाते हुए 66 रनों की पारी खेली। कप्तान मार्क्स एकरमैन 18 रन बनाकर तीसरे विकेट के रूप में कोटियान का शिकार बने। 50वें ओवर में तनुष कोटियान ने जॉर्डन हरमन को पगबाधा आउटकर पवेलियन भेज दिया। जॉर्डन हरमन ने 141 गेंदों में आठ चौकों की मदद से 71 रन बनाये।

होप और अथानाजे की बदौलत विंडीज ने बनायी 2-0 की अजेय बढ़त

चटगांव, 30 अक्टूबर। बंगलादेश के खिलाफ चटगांव में खेले गए दूसरे टी20 मैच में 14 रनों से जीत हासिल करने के बाद, वेस्टइंडीज ने तीन मैचों की टी20 सीरीज में 2-0 की अपराजेय बढ़त बना ली। शाई होप और एलिक अथानाज़े के अर्धशतकों की बदौलत, वेस्टइंडीज ने 149 रन बनाए और फिर सफलतापूर्वक इस स्कोर का बचाव किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए, वेस्टइंडीज को शुरुआती झटका लगा जब दूसरे ओवर में ब्रैंडन किंग मिड-ऑन पर कैच आउट हो गए। इसके बाद होप और अथानाज़े के बीच 105 रनों की शानदार साझेदारी हुई, जिसमें तीसरे ओवर में तौहीद हृदॉय ने अथानाज़े को मिड-ऑन पर मुश्किल कैच टपकाकर जीवनदान दिया। विंडीज की इस जोड़ी ने नियमित चौके लगाए और पावरप्ले के अंत में अपनी टीम का स्कोर 50/1 तक पहुंचाया। इसके बाद भी दोनों की साझेदारी मजबूत होती गई और उन्होंने धीमे पड़ने का कोई संकेत नहीं दिया। अथानाज़े स्पिनरों के खिलाफ ख़ासे सख़्त रहे और उन्होंने रिशाद हुसैन की गेंद पर दो छक्के और नासुम अहमद की गेंद पर एक और छक्का जड़कर अपना दूसरा टी20 अंतरराष्ट्रीय अर्धशतक पूरा किया।

मोनी और जयवीर सिंह ने एशियन यूथ गेम्स 2025 में जीते स्वर्ण पदक

मनामा (बहरीन), 30 अक्टूबर। भारतीय कुश्ती दल के मोनी और जयवीर सिंह ने एशियन यूथ गेम्स 2025 में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीते। लड़कों के 55किग्राम फ्रीस्टाइल डिवीजन में मुकाबला कर रहे जयवीर सिंह ने बुधवार को फाइनल में पहुंचने के लिए शानदार प्रदर्शन किया। इससे पहले उन्होंने श्रीलंका के निमेश दुलंजना और कंबोडिया के फान चान ओउ डोम पर 10-0 की शानदार जीत दर्ज करने के बाद कड़े क्वार्टर फाइनल में ईरान के यासीन जारेजादेह को क्राइटेरिया के आधार पर हराया। सेमीफाइनल में, जयवीर सिंह ने कजाकिस्तान के इब्राहिम यस्ककबेक को 5-0 से हराया। इसके बाद फाइनल मुकाबले में जापान के यामातो फुरुसावा के खिलाफ 6-2 की जीत दर्ज कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। मोनी ने भी लड़कियों के फ्रीस्टाइल 57किग्राम वर्ग ने भी शानदार प्रदर्शन किया। भारतीय पहलवान ने सेमीफाइनल में चीन की जियाओहान जू को 8-0 से हराया।

जॉर्जीना कैनेडी से हार के बाद अनाहत सिंह का कनाडा महिला ओपन में अभियान समाप्त

टोरंटो (कनाडा), 30 अक्टूबर। भारतीय स्क्वैश खिलाड़ी अनाहत सिंह का कनाडा महिला ओपन 2025 में शानदार प्रदर्शन सेमीफाइनल में इंग्लैंड की दुनिया की नंबर 10 खिलाड़ी जॉर्जीना केनेडी से हार के साथ खत्म हो गया। बुधवार को टोरंटो के ब्रुकफील्ड प्लेस में खेले गये सेमीफाइनल मुकाबले में 17वर्षीय अनाहत सिंह को केनेडी से 3-0 (11-5, 11-8, 12-10) से हार का सामना करना पड़ा। यह मुकाबला 30 मिनट तक चला। इससे पहले पीएसए सिल्वर इवेंट में, अनाहत सिंह ने मंगलवार को क्वार्टर फाइनल में दुनिया की नंबर सात खिलाड़ी टिन गिलिस के टाइटल डिफेंस को 3-0 (12-10, 11-9, 11-9) से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई थी। यह अनाहत की टॉप-10 खिलाड़ी के खिलाफ पहली जीत थी। रविवार को दूसरे राउंड में, अनाहत सिंह ने टॉप 20 में शामिल खिलाड़ी के खिलाफ अपनी पहली जीत हासिल की थी। उन्होंने फ्रांस की दुनिया की नंबर 20 खिलाड़ी मेलिसा एल्व्स को 3-1 (10-12, 10-12, 11-8, 2-11) से हराया।

मुख्यमंत्री ने महाराणा प्रताप सर्किट, तनोट माता व पूंछरी का लौठा के विकास कार्यों की समीक्षा की

उन्होंने ऐतिहासिक इमारतों के निर्माण के लिए विशेष प्रकोष्ठ का गठन करने के निर्देश दिए

जयपुर, 30 अक्टूबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि विकास के साथ-साथ राज्य सरकार आस्था धामों और पर्यटन स्थलों के विकास के लिए कार्य कर रही है। उन्होंने अधिकारियों को प्रदेश के गौरवशाली इतिहास, प्राचीन धरोहर और धार्मिक पर्यटन स्थलों के विकास और पुनर्विकास कार्यों को प्राथमिकता देते हुए तय समय में पूरा करने के निर्देश दिए। साथ ही, ऐतिहासिक इमारतों के निर्माण के लिए विशेष प्रकोष्ठ के गठन के निर्देश दिए।

शर्मा गुरूवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट, पूंछरी का लौठा और तनोट माता मंदिर के विकास और पुनर्विकास कार्यों के संबंध में आयोजित समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आमजन को वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के जीवन से परिचित कराने तथा उनके शौर्य की गाथा जन-जन तक पहुंचाने के लिए राज्य सरकार महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट विकसित कर रही है। इस सर्किट में महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े विभिन्न स्थलों, जैसे चावंड, हल्दीघाटी, गोगुंदा, कुंभलगढ़ , दिवेर, उदयपुर आदि को सम्मिलित किया गया है, जिसके लिए 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

शर्मा ने अधिकारियों को जैसलमेर स्थित तनोट माता मन्दिर में पुनर्विकास कार्यों की समीक्षा करने तथा श्रद्धालुओं के ठहरने की उचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने पूंछरी का लौठा और गोवर्धन परिक्रमा के प्रगतिरत विकास कार्यों के संबंध में अधिकारियों को निविदा प्रक्रिया में गति लाने के लिए कहा, उन्होंने कहा कि विभिन्न चरणों में विकसित होने वाले इस पावन धाम पर श्रद्धालुओं को विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान की जाएं।

बैठक में राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत, सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरूवार को महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट, पूंछरी का लौठा और तनोट माता मंदिर के विकास और पुनर्विकास कार्यों की समीक्षा की।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट में उनके जीवन से जुड़े विभिन्न स्थल, जैसे चांवड, हल्दीघाटी, गोगुंदा, कुंभलगढ़, दिनेर व उदयपुर आदि शामिल किये गये हैं तथा इनके लिए 100 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है।**

सीबीएसई की बोर्ड परीक्षाएं 17 फरवरी से

नयी दिल्ली, 30 अक्टूबर। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने गुरुवार को बोर्ड परीक्षाओं की तिथियों की घोषणा करते हुए बताया कि 10वीं और 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाएं 17 फरवरी 2026 से शुरू होंगी।

सीबीएसई ने पहली बार परीक्षा शुरू होने से 110 दिन पहले डेटशीट जारी की है। दसवीं की परीक्षा 17 फरवरी से 10 मार्च तक और 12वीं की 17 फरवरी से 09 अप्रैल तक आयोजित की जाएगी। परीक्षाएं विषयों के अनुसार सुबह 10:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे और दोपहर 1:30 बजे तक आयोजित की जाएंगी।

सीबीएसई ने कहा कि दोनों कक्षाओं में विद्यार्थियों द्वारा लिए जाने वाले दो विषयों के बीच पर्याप्त अंतराल दिया गया है। कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की जाने वाली प्रवेश परीक्षाओं की तिथियों को ध्यान में रखा गया है, और बोर्ड परीक्षाएं प्रवेश परीक्षाओं से काफी पहले समाप्त करने का प्रयास किया गया है।

भारतीय सेना के "त्रिशूल" सैन्य अभ्यास से दहला पाकिस्तान

यह अभ्यास पाकिस्तान के लिए स्पष्ट संदेश है कि भारत अपनी सीमा की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर है

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर। भारत के मेगा त्रिस्तरीय सैन्य अभ्यास त्रिशूल ने पाकिस्तान को हिलाकर रख दिया है। इसका उद्देश्य पाकिस्तान को यह स्पष्ट संदेश देना है कि भारत अपनी सीमा की रक्षा के लिए मुस्तैद है और आवश्यकता पड़ने पर मई में ऑपरेशन सिंदूर के बाद की स्थिति में और आगे कदम उठाने को भी तैयार है।

भारत ने गुरुवार को त्रिशूल की शुरुआत के साथ अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया। यह 12 दिनों तक चलने वाला एक त्रिस्तरीय सैन्य अभ्यास है, जो पाकिस्तान सीमा पर आयोजित हो रहा है, और यह ऑपरेशन सिंदूर के छह महीने बाद भारत के पहले युद्धाभ्यास के रूप में सामने आया है।

- **तीनों सेनाओं का यह 12 दिवसीय अभ्यास गुजरात व राजस्थान में हो रहा है, पर इसका प्रमुख फोकस गुजरात में कच्छ का रन क्षेत्र है।**

त्रिशूल में विशेष बलों (स्पेशल फोर्सेज़) के कमांडो, मिसाइल बैटरियां, युद्धपोत, युद्धक टैंक, और हमला करने वाले विमान, जिनमें राफेल और सुखोई एस यू-30 शामिल हैं, पाकिस्तान के दक्षिणी क्षेत्र में आक्रामक हमलों का अभ्यास करेंगे, ताकि, सिंदूर के बाद के परिदृश्य में, भारतीय सशस्त्र बलों की तत्परता का परीक्षण हो सके।

यह अभ्यास गुजरात और राजस्थान में होगा, लेकिन ध्यान विशेष रूप से गुजरात के कच्छ क्षेत्र पर केन्द्रित होगा, जो पाकिस्तान के साथ एक नया सीमा विवाद स्थल हो सकता है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस महीने के शुरू में पाकिस्तान को चेतावनी दी थी कि वह भारत के हिस्से वाले सिर क्रीक को अवैध रूप से कब्जाने की कोशिश न करें, जो गुजरात के कच्छ रण और पाकिस्तान के बीच स्थित एक संकरी और विवादित जल-पट्टी है, जिसकी लंबाई 100 किलोमीटर से कम है।

कागजों पर यह दोनों देशों के बीच धुर पश्चिमी सीमा है; अर्थात, क्रीक का पश्चिमी भाग पाकिस्तान का है और पूर्वी भाग भारत का। राजनाथ सिंह ने गर्जना के स्वर में कहा था कि भारतीय क्षेत्र पर कब्जा करने के किसी भी प्रयास का जवाब "इतिहास और भूगोल" को बदल कर रख देगा।

चाबहार बंदरगाह पर अमेरिकी प्रतिबंधों में भारत को मिली छह महीने की छूट

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने प्रैस ब्रीफिंग में यह जानकारी दी

नयी दिल्ली, 30 अक्टूबर। भारत और अमेरिका के बीच व्यापार वार्ता को लेकर चल रही कवायद के बीच चाबहार बंदरगाह पर प्रतिबंध के मामले में भारत को अमेरिका से बड़ी तात्कालिक राहत मिली है, जिसमें अमेरिका ने बंदरगाह के संचालन पर लगाये गये प्रतिबंधों में छह महीने की छूट दे दी है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने गुरूवार को यहां साप्ताहिक मीडिया ब्रीफिंग में इस संबंध में पूछे गये सवाल के जवाब में कहा," हमें बंदरगाह पर लागू अमेरिकी प्रतिबंधों से छह महीने की छूट दी गई है। "

अमेरिका ने पिछले महीने संयुक्त राष्ट्र की ईरान पर परमाणु कार्यक्रम को लेकर लगायी गई पाबंदियों के मद्देनजर भारत के चाबहार बंदरगाह के संचालन को लेकर प्रतिबंधों की घोषणा की थी।

भारत ने इस बंदरगाह को संचालन के लिए दस वर्ष के लिए लीज पर लिया हुआ है।

अमेरिका ने प्रतिबंधों की घोषणा करते हुए कहा था कि इसके संचालन पर 29 सितम्बर से जुर्माना लगाया जायेगा। बाद में कहा गया कि ये प्रतिबंध एक महीने बाद यानी, 27 अक्टूबर से लागू होंगे। अब भारत को छह महीने, यानी आगामी अप्रैल तक प्रतिबंधों में छूट दे दी गयी है।

भारत के लिए यह बंदरगाह अफगानिस्तान, मध्य एशिया और पूर्वी रूस तक व्यापार के लिए सुगम मार्ग प्रदान करता है।

इस बंदरगाह को लेकर भारत और ईरान के बीच 2016 में समझौता हुआ था।

उल्लेखनीय है कि डॉनल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति के रूप में पहले कार्यकाल के दौरान भी भारत को चाबहार बंदरगाह के मामले में छूट दी गयी थी।

अमेरिका के साथ व्यापार समझौते को लेकर चल रही बातचीत के बारे में पूछे गये सवाल पर प्रवक्ता ने कहा, "हम व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने के लिए अमेरिकी पक्ष के साथ बातचीत जारी रखे हुए हैं। दोनों पक्ष लगातार बातचीत कर रहे हैं। "

रूस की तेल कंपनियों पर अमेरिका के प्रतिबंधों से जुड़े सवाल पर जायसवाल ने कहा कि हम इन प्रतिबंधों के प्रभाव का अध्ययन कर रहे हैं।

रूस से तेल की खरीद पर भारत के दृष्टिकोण पर उन्होंने कहा कि भारत बाजार के उथल-पुथल भरे माहौल में अपने 140 करोड़ लोगों को सस्ते तेल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के रूख पर पर कायम है तथा राष्ट्रीय हितों के साथ किसी तरह का समझौता नहीं किया जायेगा।

- **अमेरिका ने पिछले महीने संयुक्त राष्ट्र की ईरान पर परमाणु कार्यक्रम को लेकर लगायी गई पाबंदियों के मद्देनजर भारत के चाबहार बंदरगाह के संचालन को लेकर प्रतिबंधों की घोषणा की थी।**
- **भारत ने इस बंदरगाह को संचालन के लिए दस वर्ष के लिए लीज पर लिया हुआ है।**
- **भारत के लिए यह बंदरगाह अफगानिस्तान, मध्य एशिया और पूर्वी रूस तक व्यापार के लिए सुगम मार्ग प्रदान करता है।**

अब तीसरी कक्षा से एआई की पढ़ाई होगी

नयी दिल्ली, 30 अक्टूबर। शिक्षा मंत्रालय ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को आगे बढ़ाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि स्कूलों में कक्षा तीन से आगे एआई पर पाठ्यक्रम शुरू किया जायेगा।

शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने भविष्य के लिए तैयार शिक्षा के आवश्यक घटकों के रूप में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कम्प्यूटेशनल थिंकिंग को आगे बढ़ाने के लिए आज अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है। मंत्रालय के सूत्रों ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कम्प्यूटेशनल थिंकिंग (एआई और सीटी) सीखने, सोचने और सिखाने की अवधारणा को सुदृढ़ करेगी और धीरे-धीरे "सार्वजनिक हित के लिए एआई" के विचार की ओर विस्तारित होगी। यह पहल जटिल चुनौतियों को हल करने के लिए एआई के नैतिक उपयोग की दिशा में एक नया, लेकिन महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि यह तकनीक कक्षा तीन से शुरू होगी।

- **शिक्षा मंत्रालय ने यह घोषणा की और बताया कि सीबीएसई ने इसके लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया है।**

बूसान में हैंड शेक के बाद ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पृथक्करण और चुंबक निर्माण की क्षमता अभी भी नहीं है। परिणामस्वरूप, भारत वही प्रसंस्कृत सामग्री आयात करता है, जिसे वह सिद्धांत रूप में स्वयं उत्पादन कर सकता है।

खान मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, "भारत की निर्भरता संरचनात्मक है, न कि परिस्थितिजन्य, "हमारे पास अयस्क (ओर्स) हैं, लेकिन तकनीक नहीं है। बुसान समझौता सांस लेने की जगह देता है, स्वतंत्रता नहीं।"

यह समझौता निकट भविष्य में भारतीय उद्योग के लिए फायदेमंद है। कम कीमतें और आश्वस्त आपूर्ति से ईवी, पवन, और इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माता, जैसे टाटा मोटर्स, महिंद्रा इलेक्ट्रिक, और सुज़लोन को उत्पादन की योजना बनाने में मदद मिलेगी, वो भी बिना उतार-चढ़ाव के। लेकिन खनन और प्रसंस्करण कंपनियां दबाव महसूस कर सकती हैं। परमाणु खनिज निदेशालय के पूर्व निदेशक के. राजन चेतावनी देते है, "अगर चीन उत्पादन बढ़ाता है, तो कीमतें गिर जाएंगी, जो स्थानीय प्रसंस्करण निवेश को हतोत्साहित करेगा। कम लागत की बजाय स्थिरता चाहिए।"

भारत एक महत्वपूर्ण खनिज रणनीति तैयार कर रहा है, जिसमें दुर्लभ पृथ्वी पृथक्करण और चुंबक निर्माण के लिए 5,000 करोड़ की प्रोत्साहन योजना और शहरी खनन से रीसायक्लिंग के लिए 1,500 करोड़ का पुश शामिल है। इसका उद्देश्य यह है कि भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का तीसरा स्तंभ बनाना, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के साथ।

लेकिन ट्रंप-शी का यह समझौता उस गति को कमज़ोर कर सकता है। यदि पश्चिमी देश सहज हो जाते हैं, तो भारत साझेदारियों और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को आकर्षित करने के लिये संघर्ष कर सकता है। आईआईटी मद्रास के प्राफेसर राजीव मल्होत्रा कहते है, "चीन की ताकत खनन में नहीं, बल्कि प्रसंस्करण, पेटेंट और चुंबक निर्माण में है, भले ही एक साल के लिए कीमतें कम हों, पर तकनीकी अंतर बना रहता है।"

दुर्लभ पृथ्वी तत्व केवल अर्थशास्त्र का नहीं, बल्कि सुरक्षा का भी मामला है। ये रडार प्रणालियों, सटीक मिसाइलों और स्टेल्थ विमानों का आधार हैं। भारत ने चुपचाप ऑस्ट्रेलिया और वियतनाम के साथ आपूर्ति संबंधों को बनाना शुरू कर दिया है और स्टॉक भी बनाया है। एक रक्षा अधिकारी ने कहा, "यह एक खिड़की है, समाधान नहीं, जब समझौता समाप्त होगा, असुरक्षाएं फिर से लौट आएंगी। हमें इस समय का उपयोग क्षमता बनाने के लिए करना चाहिए।"

भारत आखिरकार दुर्लभ पृथ्वी तत्वों को परमाणु उत्पादकों के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक संपत्तियों के रूप में पहचानने लगा है। आईआरईएल ने निजी कंपनियों के साथ पायलट प्रसंस्करण परियोजनाएं शुरू की हैं, जबकि कंपनियां, जैसे सोना कॉमस्टार, घरेलू चुंबक निर्माण का अन्वेषण कर रही हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग स्वच्छ शोधन तकनीकों के लिए वित्त पोषण कर रहा है। लेकिन सरकारी बाधाएं, कमजोर अनुसंधान और विकास, और पर्यावरणीय संवेदनशीलताएं निवेशकों को निरुत्साहित करती हैं।

इसलिए, "बुसान हैंड शेक" कोई मोड़ नहीं है, केवल एक विराम है। एक साल की शांति भारत के लिए अपनी महत्वपूर्ण खनिज नीति को तेजी से लागू करने, प्रौद्योगिकी गठजोड़ बनाने और निष्कर्षण से लेकर अंतिम उपयोग निर्माण तक जाने का बूस्टर होनी चाहिए। रणनीतिक स्वायत्तता, आखिरकार, आयात नहीं की जा सकती। इसे शुद्ध किया जाना चाहिए, ठीक वैसे, जैसे वे खनिज, जो आधुनिक दुनिया को घुमाते हैं।

17 बच्चों को बंधक बनाने वाले आरोपी रोहित की पुलिस मुठभेड में मौत

- **सूत्रों के अनुसार पुलिस जब बच्चों को छुड़ाने का प्रयास कर रही थी तब आरोपी ने गोली चला दी पुलिस ने भी जवाब में गोली चलाई जिससे आरोपी घायल हो गया व अस्पताल में उसकी मौत हो गई।**

मुंबई, 30 अक्टूबर। मुंबई के पवई इलाके में 17 बच्चों को बंधक बनाने वाले शख्स की पुलिस मुठभेड़ में मौत हो गयी और पुलिस ने सभी बच्चों को सकुशल मुक्त करा लिया।

रोहित आर्या नाम के शख्स ने 17 बच्चों को गुरुवार को बंधक बना लिया। बच्चों को छुड़ाने के दौरान रोहित ने पुलिस पर गोली चला दी और पुलिस की जवाबी कार्रवाई में उसे गोली लगी। बाद में अस्पताल में उसकी मौत हो गयी।

मुंबई में उस समय तनाव की स्थिति बन गयी, जब आरए स्टूडियो में गुरुवार को 17 बच्चों को बंधक बनाये जाने की खबर फैली। बच्चे शहर के विभिन्न हिस्सों से ऑडिशन में भाग लेने के लिए स्टूडियो पहुँचे थे। रोहित आर्या नाम के एक व्यक्ति ने बच्चों को बंधक बना लिया। घटना की जानकारी मिलते ही अभिभावक स्टूडियो पहुंचे। पुलिस भी उसी दौरान मौके पर पहुंच गयी।

पुलिस ने बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और स्थिति को बिगड़ने से रोकने के लिए इलाके की घेराबंदी कर की और इलाके के लिए हाई अलर्ट जारी कर दिया। किसी भी संभावित स्थिति से निपटने के लिए अधिकारियों ने आपातकालीन सेवाओं को भी तैनात कर दिया था। इसी दौरान, आरोपी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया, जिससे मामला और भी ज़्यादा गरमा गया। वीडियो में रोहित ने कहा कि उसने अपनी जान देने की बजाय, बच्चों को बंधक बनाने का फैसला किया है। उसने कहा कि उसकी कुछ साधारण और नैतिक मांगे हैं और वह कुछ लोगों से सवाल पूछना चाहता है। आर्या ने वीडियो में यह भी कहा कि वह आतंकवादी नहीं है और उसकी कोई आर्थिक माँगें नहीं हैं। उसने कहा कि उसने एक योजना के तहत बच्चों को बंधक बनाया है। साथ ही, उसने धमकी दी कि किसी ने जरा सी भी गलती की तो वह पूरे परिसर में आग लगा देगा।

पुलिस ने लगातार प्रयासों के बाद स्टूडियो से सभी 17 बच्चों को सफलतापूर्वक बचा लिया और रोहित को हिरासत में ले लिया।

पाकिस्तान ने अफगानिस्तानी तालिबान को धमकाया

इस्लामाबाद, 30 अक्टूबर। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने अफगान तालिबान को कड़ी चेतावनी देते हुए उन्हें पूर्ण विनाश की धमकी दी है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान उन्हें तोरा बोरा गुफाओं में वापस भागने पर मजबूर कर देगा।

आसिफ ने बुधवार को एक्स पर प्रकाशित एक कड़े शब्दों वाले बयान में कहा कि इस्लामाबाद को तालिबान शासन को पूरी तरह से खत्म करने के लिए अपनी सैन्य शक्ति का एक अंश भी इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं होगी। उन्होंने तालिबान शासन पर सत्ता पर अपनी पकड़ बनाए रखने और युद्ध अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए, पहले से ही युद्ध से तबाह अपने देश को एक और युद्ध में घसीटने का आरोप लगाया।

जस्टिस सूर्यकांत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पहले न्यायमूर्ति सूर्यकांत को अगला मुख्य न्यायाधीश बनाने की सिफारिश की थी। न्यायमूर्ति सूर्यकांत देश के 53 वें मुख्य न्यायाधीश होंगे और उनका कार्यकाल करीब 15 महीने का होगा। वह फरवरी 2027 में सेवानिृत होंगे। उन्हें मई 2019 में उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्त किया गया था।

इससे पहले वह 2018 में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बनाए गए थे। हरियाणा के हिसार में 10 फरवरी 1962 को जन्में न्यायमूर्ति सूर्य कांत ने 1984 में कानून की पढ ाई पूरी करने के बाद हिसार के जिला न्यायालय में वकालत शुरू की और उसके बाद 1985 में पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय चंडीगढ में वकालत की। वे जनवरी 2004 में पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के अस्थायी न्यायाधीश बनें। वे संवैधानिक, सेवा और सिविल मामलों के विशेषज्ञ हैं।

मनीष शर्मा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बजाय तेजस्वी ने उन्हें अपने घर मीटिंग में आने तक से रोक दिया। अब एक और असफल नेता अविनाश पांडे को बिहार भेजा गया है ताकि वह फिर से चीजों को सुलझा सकें। राहुल गांधी के साथ हमेशा प्रयाग करते रहते है और के.सी. वेणुगोपाल या नए समूह को जिम्मेवारी देत रहते हैं, जो या तो उन्हें गुमराह कर रहे हैं आर उन्हें सही दिशा में नहीं ले जा रहे हैं। पार्टी कार्यकर्ता इस नियुक्ति से स्तब्ध हैं और कह रहे हैं ऐसा पहले कभी नहीं सुना।

ट्रंप और ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आपूर्ति जारी रखने पर सहमत हो गया है। रेअर अर्थ मेटल और महत्वपूर्ण खनिज की आपूर्ति बहाल होने से अमेरिका के इलेक्ट्रिक वाहन निर्माताओं को काफी राहत मिलेगी।

विश्व में तीसरे शीत युद्ध ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बीच के वर्षों में अमेरिका और रूस अपने परमाणु भंडारों के निर्माण को रोकने पर सहमत हुए थे, हालांकि, चीन ने गुपचुप तरीके से अपने हथियारों की संख्या बढ़ाई और अब वह लगभग अमेरिका और रूस की बराबरी पर आ गया है।

रूस और अमेरिका के पास लगभग 1,550 परमाणु हथियार हैं, जबकि चीन के पास लगभग 1,000 परमाणु हथियार होने का अनुमान है। इनके अलावा भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और इज़रायल के पास भी परमाणु हथियार हैं, और कुछ अन्य देश भी इस दिशा में प्रयासरत हैं।

इतने विशाल परमाणु भंडार हैं कि यदि इनका केवल एक हिस्सा भी विस्फोटित हो जाए, तो पूरी दुनिया में प्रलय जैसी स्थिति बन जाएगी और मानव सभ्यता खत्म हो सकती है। इंसान शायद फिर से गुफाओं में लौटने को मजबूर हो जाए।

द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद दुनिया दो हिस्सों में बँट गई थी, एक ओर पश्चिमी लोकतांत्रिक देश थे और दूसरी ओर साम्यवादी (कम्युनिस्ट) देश। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल ने उस समय अपने प्रसिद्ध भाषण में कहा था कि युद्ध के बाद के यूरोप पर "लोहे का पर्दा" (आयरन कटन) गिर गया है, जिसने पश्चिम और साम्यवादी पूर्व के बीच दीवार खड़ी कर दी है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शुरू हुआ यह टकराव सत्ता और वर्चस्व की लड़ाई में बदल गया। दुनिया दो हिस्सों में बँट गई, जो औपनिवेशिक (कलोनियल) काल के प्रभाव की तरह थी। लेकिन सोवियत संघ के टूटने और विकासशील देशों के उभरते आर्थिक बल बनने के बाद यह पुरानी व्यवस्था धीरे-धीरे बिखरने लगी।

अमेरिका ने जब राष्ट्रपति निक्सन के नेतृत्व में चीन के साथ राजनयिक संबंध फिर से शुरू किए, अपने विदेश नीति सलाहकार हेनरी किसिंजर की पहल पर, उसके बाद से वैश्विक व्यवस्था में बड़ा बदलाव आया।

इसके सामानांतर अमेरिका और सोवियत संघ ने महसूस किया कि परमाणु हथियारों की दौड़ व्यर्थ है, और उन्होंने अपने परमाणु भंडार सीमित करने के लिए कई समझौते किए। इन समझौतों में सबसे प्रसिद्ध परमाणु शस्त्रागार संधि थी, जिसे "स्टार्ट ट्रीटी" कहा जाता है। यह 1990 के दशक से लागू रही और अब समाप्त होने वाली है।

अलास्का के एंकोरेज में अपनी पिछली बैठक में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने दोनों देशों के बीच एक अनौपचारिक समझौते के आधार पर परमाणु शस्त्रागार संधि को एक साल के लिए बढ़ाने का प्रस्ताव रखा था। यही वह समय था जब दोनों राष्ट्रपतियों, ट्रंप व पुतिन ने सौहार्दपूर्ण वार्ता की और यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने पर चर्चा की।

लेकिन उसके बाद यूक्रेन युद्ध को लेकर दोनों देशों में मतभेद बढ़ गए। पुतिन ने युद्ध कम करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया, जिससे संबंध फिर बिगड़ गए। अब ट्रम्प यह सवाल उठा रहे हैं कि क्या पुतिन सचमुच यूक्रेन में शांति लाना चाहते हैं या नहीं।

अजीब बात यह है कि तीन साल पहले यूक्रेन में शुरू हुई लड़ाई ने अब पूरी दुनिया को टकराव के माहौल में झोंक दिया है। दुनिया भर में आतंकवादी हमले, आतंकवाद को बढ़ावा देने वाली नीतियाँ और आम नागरिकों पर हमले बढ़ते जा रहे हैं।

गाज़ा में हुई बर्बरताएँ, पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादियों का हमला, पाकिस्तानी सेना प्रमुख की युद्धोन्मादी बयानबाज़ी, ट्रम्प के मनमाने सैन्य हमले और अंतरराष्ट्रीय नियमों की अनदेखी, इन सबने मिलकर वैश्विक टकराव का एक भयावह माहौल बना दिया है।

बिहार चुनाव को ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शामिल हैं, को निष्कासित करने पर मजबूर होना पड़ा है।

निष्कासन की यह लहर सभी राजनीतिक दलों में देखी गई है। भाजपा को पिछले कुछ हफ्तों में करीब 20 नेताओं को निष्कासित करना पड़ा, जिनमें काहलगांव विधायक पवन कुमार यादव और चार बार के परुई विधायक अशोक कुमार सिंह शामिल हैं।

जेडीयू ने 16 नेताओं को बाहर का रास्ता दिखाया है, जिनमें पूर्व मंत्री शैलेश कुमार, पूर्व विधायक श्याम बहादुर सिंह और सुदर्शन कुमार, और पूर्व विधान परिषद सदस्य (एम एल सी) संजय प्रसाद और रणविजय सिंह शामिल हैं। गोकलपुर से चार बार के विधायक रहे गोपाल मंडल को भी पार्टी से बाहर किया गया, और जेडीयू नेतृत्व ने इस सीट से हाल ही में आर जे डी छोड़कर बूलो मंडल को उम्मीदवार बनाया।

राजद ने भी पार्टी विरोधी गतिविधियों के कारण 27 नेताओं को निष्कासित किया। है। निष्कासित नेताओं में पार्टी के मौजूदा विधायक छोटे लाल राय (पारसा) भी शामिल हैं। इसके अलावा, गोबिंदपुर के विधायक मोहम्मद कमरान, और पूर्व विधायक राम प्रकाश महतो, अनिल साहनी, सरोज यादव, और अनिल यादव के साथ-साथ, पूर्व एमएलसी गणेश भारती भी निष्कासित किए गए है।

कांग्रेस विद्रोहियों को बाहर निकालने से बची है। लेकिन पार्टी के भीतर मतभेद खुले तौर पर दिखाई दे रहे हैं। इस महीने की शुरुआत में पटना हवाई अड्डे पर, पार्टी के प्रतिद्वंद्वी गुटों को एक-दूसरे से लड़ते हुए देखा गया।

निर्दलीय उम्मीदवारों के रूप में चुनावी मैदान में कई विद्रोहियों की मौजूदगी इस बात का संकेत है कि यह चुनाव कम से कम अभी तक तो 'लहर रहित' चुनाव माना जा रहा है। निर्दलीय उम्मीदवार बड़ी संख्या में अपने भाग्य को आजमाने के लिए तैयार और इच्छुक हैं। इस स्थिति का आकलन इस प्रकार किया जा रहा है: कड़े मुकाबलों, में जहां जीत का अंतर बहुत कम करना है, विद्रोही या निर्दलीय उम्मीदवार परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। अगर प्रशांत किशोर जन सुराग पार्टी जनसभा के उम्मीदवारों को भी थोड़ा सा वोट भी मिलता है, तो यह मुख्य राजनीतिक दलों - राजद, भाजपा, और जेडीयू - के लिए स्थिति को जटिल बना सकता है।

प्र.मंत्री छठ पर्व को यूनैस्को से सांस्कृतिक विरासत घोषित करवाने में जुटे

प्रधानमंत्री मोदी ने बिहार में एक जनसभा में यह जानकारी दी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को बिहार में एक चुनावी रैली में कहा कि उनकी सरकार छठ महापर्व को युनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का दर्जा दिलवाने की कोशिश कर रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने जोर देते हुए कहा कि कांग्रेस और आरजेडी नेताओं ने वोटों के लिए "छठ मैया" का अपमान किया है। राहुल गांधी द्वारा प्रधानमंत्री पर छठ पूजा को लेकर "नाटक" करने का आरोप लगाने के बाद, मोदी ने यह बयान देकर स्थानीय लोगों को भावनात्मक रूप से उकसाने की कोशिश की है। छठ पूजा बिहार का सबसे बड़े धूमधाम से मनाया जाने वाला त्योहार है, जिसमें हिंदू देवी छठी माता (या स्थानीय बोली में "मैया") की पूजा की जाती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "आपका (यह) बेटा छठी मैया की पूजा दुनिया के सामने कर रहा है, जबकि कांग्रेस और राजद नेता छठी मैया का अपमान कर रहे हैं। क्या कोई चुनाव में वोट पाने के लिए छठी मैया का अपमान कर सकता है? क्या बिहार इस प्रकार के अपमान को सहन करेगा? क्या मेरी माताएं, जो निर्ज़ला उपवास करती हैं, इसे सहन करेंगी? पीएम मोदी ने सवाल किया। जनता ने एक स्वर में जोर से "नहीं" कहा।

प्रधानमंत्री ने कहा, "राजद और कांग्रेस कितनी बेहया बात कर रहे हैं? उनके लिए छठी मैया की पूजा सिर्फ एक नाटक है, एक मजाक?" उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा अपमान लोगों की स्मृति में सदियों तक रहेगा।" बिहार आत्मसम्मान की भूमि है। बिहार उन लोगों को कभी माफ नहीं करेगा, जिन्होंने छठ पूजा का अपमान किया है।"

- **बिहार में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। ऐसे में छठ पर्व का मुद्दा काफी गर्म है।**
- **प्रधानमंत्री ने कांग्रेस और राजद पर आरोप लगाया कि वे "छठी मइया" का अपमान कर रहे हैं, जबकि वे खुद छठ पर्व को दुनिया भर में पहचान दिलाना चाहते हैं।**

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908